हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह० की

तब्लीग़ी तक़रीरें

दावत व तब्लीग़

हिस्सा अव्वल

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी (एम. ए.)

विषय सूची

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
1.	इन्तिसाब	21
2.	इज़हारे शुक्रिया	22
3.	अपनी बात	23
4.	परिचय	26
	तक़रीर (1)	28
1.	हर इनसान की चार मन्ज़िलें हैं	30
2.	थोड़ा-सा इख़्तियार थोड़े-से वक़्त के लिए	30
3.	अल्लाह की नाराज़गी मुसीबत का सबब है	31
4.	फ़ौरन पकड़ नहीं	31
5.	हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔ़न की गुफ़्तगू	32
6.	हिदायत का सामान	32
7.	मूसा की लाठी और जादूगरों का ईमान	33
8.	फ़िरऔ़न का ग़ुस्सा	33
9.	मज़बूत ईमान और आख़िरत की फ़िक्र	34
10.	क़ब्र की मन्ज़िल	34
11.	आँखों से ओझल	34
12.	दुनिया में इनसान को दिखाई देने वाली चीज़ें	36
13.	क्या नहीं दिखाई देता?	36
14.	हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को आख़िरत का डर	37
15.	न मालूम किसके साथ क्या हो?	37
16.	अल्लाह के हुक्म और सुन्नते नबवी के फल	37

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
17.	हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बेचैनी व बेक़रारी	38
18.	मेरे सर को मिट्टी में भर जाने दो (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल)	38
19.	परहेज़गारी कब आएगी?	39
20.	फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते	40
21.	अपनी मर्ज़ी को मेरी मर्ज़ी पर कुरबान कर दो (अल्लाह का फ़रमान)	40
22.	जन्नत की नेमतें	41
23.	अल्लाह पाक की मेहमानी	42
24.	जादूगरों का ईमान लाना और फ़िरऔ़न को दावत	42
25.	फ़िरऔ़न की हटधर्मी	43
26.	बुलाएँ मूसा अपने रब को (फ़िरऔ़न की बद-कलामी)	43
27.	क़बूलियत का वायदा	44
28.	दुआ़ क्यों क़बूल नहीं होती	45
29.	दावत के काम का छोड़ना दुआ़ के क़बूल न होने का सबब	45
30.	घबराएँ नहीं	46
31.	नीयत तो करें	46
32.	बन्दे की मस्लेहत पर नज़र	47
33.	दुआ़ के क़बूल होने की पाँच तरतीबें	47
34.	पहली तरतीब	47
35.	दूसरी तरतीब	47
36.	तीसरी तरतीब	48
37.	चौथी तरतीब	49
38.	एक मिसाल	49

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
39.	पाँचवीं तरतीब	50
40.	फ़िरऔन की ग़लत सोच	51
41.	जादू वो जो सर चढ़कर बोले	51
42.	फ़िरऔन के दरबार में उसके दरबारी की तक़रीर	51
43.	अल्लाह बड़ी ताक़त वाले हैं।	52
44.	मकड़ी जाला कब तानती है?	53
45.	न काला न गोरा, बुनियाद बस ईमान है	53
46.	इख़्तिलाफ़ से बचो	53
47.	मकड़ी का फ़ख़्र और उसका हश्र	54
48.	दुनिया भर की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं	55
49.	अज़ाब की एक झाड़ू से फ़िरऔन के मुल्क का जाला साफ़ हो गया	55
50.	विज़ारत और दौलत का जाला ख़त्म	56
51.	अल्लाह की पकड़ बहुत सख़्त है	56
52.	हम कमज़ोर हैं	57
53.	ख़ुदा के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं	57
54.	अल्लाह की बड़ाई बयान करो	58
55.	पूरी दुनिया में अल्लाहु अकबर की आवाज़	58
56.	बेईमानों के मुतालबात	59
57.	अल्लाह की मदद आ गई	60
58.	करने वाली ज़ात अल्लाह की है	60
59.	हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम से मुतालबा	60
60.	हमारी चुनौती	61
61.	अल्लाह सब का है	62
62.	हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की चींवटी का गश्त और बेक़रारी	62

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
63.	कुल मुख़्तार अल्लाह है	64
64.	देर है अन्धेर नहीं	64
65.	अल्लाह का वायदा	65
66.	कुआँ खोदने वाले के सामने कुआँ होता है	66
67.	नवाज़िश और करम का ज़िक्र	66
68.	सब बे-हक़ीक़त	67
69.	पूरी दुनिया को दावत	67
70.	आख़िरत का ख़ौफ़ आबादी और ख़ुशहाली का सबब	68
71.	सब के बेड़े पार हों	68
72.	हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का अपनी क़ौम को डराना	69
73.	ज़कात न देने का वबाल	70
74.	आमाल के असरात	70
75.	चीज़ों के सही और ग़लत इस्तेमाल के परिणाम	70
76.	ग़ैर-मुस्लिमों के साथ भी अच्छे अख़्लाक़ बरतमे की तालीम	71
77.	ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं	72
78.	दीनदार बेटा और दुनियादार बाप	72
79.	हक़ को हक़ कहना है	73
80.	दुकान से भी दावत का काम	73
81.	कम-ख़र्च बाला-नशीं	75
82.	शादी के पैसे बचाकर क्या किया?	76
83.	मैंने कॉलोनी बनाई	76
84.	कॉलोनी में ईमान की मजलिस और ईमान की बातें	77
85.	तोड़ के रास्ते	77
86.	ख़ुदाई ख़ज़ाने, लेने की जगहें	78
87.	हमदर्दी वाले लोग	78

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
88.	हिर्स वाले और लालची लोग	79
89.	दावत की फ़िज़ा कैसे बने?	81
90.	गर्म आँसू और ठण्डी आहें	81
91.	तू तीर आज़मा हम जिगर आज़माएँगे	81
92.	हवा के रुख़ पर थूकने वालों के मुँह पर आता है	82
93.	चार मन्ज़िलें जो मैंने पहले बताईं	82
94.	चार मर्हले	83
95.	सब्र और शुक्र दोनों में इम्तिहान	83
96.	गुमराह लोगों की तीन क़िस्में	83
97.	क्या से क्या बन गए?	84
98.	अहले बातिल की हैसियत कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल से ज़्यादा कुछ नहीं	84
99.	फ़िरऔन और उसका लश्कर तबाह	85
100.	जालूत नाकाम, तालूत कामयाब	85
101.	अबू जहल और क़ैसर व किस्रा की बरबादी	86
102.	याजूज और माजूज की तबाही	86
103.	दीन के पेड़ को ज़ाया होने से बचाएँ	87
104.	आग और पानी की मिसाल	88
105.	हर आदमी दावत के काम को अपना काम बनाए	90
106.	कुरबानी देने से ही दीन की फ़िज़ा बनेगी	90
107.	दीनदार और समझदार बीवी	90
108.	हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ में कुरबानी और भलाई की दुआ	91
109.	हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी सिर्फ़ ईमान ही नहीं लाए बल्कि दीन के दाई बने	92

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
110.	बच्चे हंस पड़े	92
111.	बच्चे भी दीन के दाई	93
112.	दोनों तरफ़ है आग बराबर लगी हुई	93
113.	पासबाँ मिल गए काबे को सनम-ख़ाने से	94
114.	हज़रत उमर बहुत रोये	95
115.	इनसान का अ़मल उसके गले का हार	96
116.	हज़रत उमर का फ़रमान	97
117.	मेहनत चारों तरफ़	97
118.	जमाअ़तों में फिरकर नबियों वाला ग़म पैदा करें	98
119.	जमकर बैठें और मजमे को जमाने का सवाब लें	98
120.	मेरी दिली दुआ़एँ	99
121.	दुआ़	100
	तक़रीर (2)	105
1.	अ़हदे अलस्त	106
2.	अफ़सोस और ना-उम्मीदी	107
3.	नज़र वाले रास्ते से यक़ीन को हटाओ	108
4.	ज़ाहिरी तरतीब में सब बराबर	109
5.	आज का ग़ैब कल आँखों के सामने होगा	109
6.	क़ब्र के साँप को दुनिया का डंडा नहीं मार सकता	110
7.	असल कामयाबी नमाज़ पढ़ने में है	110
8.	ग़ैब पर ईमान लाना क्या है?	111
9.	हिमालय पहाड़ बड़ा है, राई का दाना नहीं	111
10.	समझ का फ़र्क़	112
11.	अनोखी मदद	113

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
12.	साहिबे मक़ाम की सोच और फ़िक्र	113
13.	मैं बुजुर्ग बन गया	115
14.	चीज़ों में तासीर..... इनसान का तजुर्बा और अ़मल में तासीर..... ख़ुदा का वायदा	115
15.	अल्लाह का पसन्दीदा बन्दा	116
16.	अल्लाह का पसन्दीदा बन्दा	117
17.	दावत की फ़िज़ा किस लिए?	118
18.	दिया सलाई का करिश्मा	118
19.	ग़ैबी मदद और पकड़ की बुनियाद	119
20.	अल्लाह सबसे बड़ा है	120
21.	ख़ुदा के ख़ज़ाने बेशुमार हैं	120
22.	तुम्हारे अल्लाह की मदद तुम्हारे लिए क्यों नहीं?	121
23.	लोगों को अल्लाह की पकड़ से डराओ	121
24.	अल्लाह को एक मानो	122
25.	ख़राब और खोटे लोगों की बातें	122
26.	क़ौमे नूह का मुतालबा	123
27.	हर चीज़ का एक वक़्त है	123
28.	अल्लाह के लश्कर वाले लोग	124
29.	करने के तीन काम	125
30.	कमी और ज़्यादती से बचो	125
31.	सिराते मुस्तक़ीम इख़्तियार करो	126
32.	मुजाहदा, हिदायत के लिए क़ानून और नियम	126
33.	हर काम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर	127
34.	नुबुव्वत का काम बाक़ी है	128
35.	इनाम वाले लोग	128
36.	जान व माल नबवी तरतीब पर	129

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
37.	सिद्दीक़ के लिए हैं खुदा व रसूल बस!	130
38.	सब के लिए अवसर	131
39.	तीन चीज़ें	131
40.	मस्जिद और बाज़ार की आवाज़ का फ़र्क़	132
41.	पालने वाले अल्लाह हैं, इसका यक़ीन ज़रूरी	133
42.	ज़रा सोचो	134
43.	जिस्म के एक-एक अंग की अहमियत	135
44.	अल्लाह बेनियाज़ है	136
45.	मेरे बन्दे भूलना मत	137
46.	मेहरबानी ही मेहरबानी	137
47.	खुदा का शुक्र क्या है?	138
48.	दो क़िस्म के लोग और उनका अन्जाम	138
49.	जन्नत में रात नहीं आएगी	139
50.	अल्लाह की मानो और उसी से माँगो	140
51.	नज़र बन्दे की मस्लेहत पर	140
52.	अल्लाह ने माँगना भी सिखाया	141
53.	नमाज़ की तरह नमाज़ के बाहर भी हमारा बदन अलाह के हुक्म के मुताबिक़ इस्तेमाल हो	143
54.	अल्लाह की बड़ाई बयान करके अल्लाह की ताक़त से डराओ	143
55.	अल्लाह की पकड़ गोया पिस्तौल से गोली छूट गई	144
56.	कारतूस की जगह बन्दूक़ है, न कि रूमाल और प्याला	144
57.	पूरे बदन का क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ इस्तेमाल कारतूस का पिस्तौल में आना है	144
58.	दुआ और मेहनत में जोड़ ज़रूरी	145
59.	जाना है मुम्बई और सवार हुए कोलकाता की रेल पर	146

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
60.	चार महीने मश्क़ के लिए	147
	तक़रीर (3)	149
1.	ज़िन्दगी गुज़ारने के दो रास्ते	150
2.	दुनिया ही में जहन्नम का मन्ज़र	151
3.	दुनिया और आख़िरत दोनों जगह राहत ही राहत	151
4.	मौत का मामला	152
5.	अल्लाह का ज़ाहिरी निज़ाम और ग़ैबी निज़ाम	152
6.	ज़ाहिरी निज़ाम का हाल	153
7.	मौजूदा ज़माने का हाल और क़ियामत तक के लिए रहबरी	154
8.	नबी के बाद आपके ख़लीफ़ाओं के दौर से रहबरी	155
9.	नुबुव्वत के बाद नबी सल्ल० का पहला काम	156
10.	दावत के ज़रिये करने के काम	157
11.	तकलीफ़ें अस्थाई हैं	157
12.	तमाम अम्बिया की दावत का हासिल और मग़ज़	157
13.	क़ुरआन में पिछले वाक़िआत को किस लिए दोहराया गया?	158
14.	न मानने वालों के साथ ख़ुदा का मामला	158
15.	क़ुरआन पाक की तालीम की ज़रूरत	159
16.	दावत और तालीम का आपस में ताल्लुक़ और फ़र्क़	159
17.	दावत की राह में सिर्फ़ तकलीफ़ ही नहीं, मदद भी आती है	160
18.	हज़रत ज़माद रज़ि० के इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ	161
19.	मुश्किलों का हल	161
20.	इक्रामे मुस्लिम की अहमियत	162
21.	इक्रामे मुस्लिम और इस्लामी भाईचारे के नमूने	163

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
22.	कलिमे वालों की आपसी खींचातानी का नतीजा	163
23.	पूरी इनसानियत की फ़िक्र ज़रूरी है	164
24.	दावत की राह में ख़र्चों और कारगुज़ारी के सिलसिले में ज़रूरी हिदायात	164
25.	बाहर दूसरे मुल्कों के लिए कैसे लोगों की जमाअ़त तश्कील दी जाए	165
26.	कम सलाहियत वाले भी हैरत-अंगेज़ कारनामे अन्जाम देते हैं	165
27.	बेपढ़ों की कारगुज़ारियों के मिसाली वाक़िआत	166
28.	हज़रत इक्रिमा के इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ	168
29.	रसूले पाक सल्ल० का अपने दुश्मन के साथ मामला	169
30.	अख़्लाक़ की प्रभावकारी ताक़त	170
31.	दूसरों के लिए रोना काम आया	171
32.	ख़र्चों के मसले का हल क्या है?	171
33.	अल्लाह के ख़ज़ानों की कुंजी	172
34.	नमाज़ को जानदार कैसे बनाया जाए?	172
35.	इख़्लासे नीयत की ताक़त	173
36.	इख़्लास पैदा करने का तरीक़ा	174
37.	अल्लाह का किसी से कोई रिश्ता नहीं	174
38.	उम्मत का सबसे मुफ़्लिस शख़्स	175
39.	सामूहिक माल में सख़्त एहतियात ज़रूरी	175
40.	हज़रत उमर रज़ि० की सख़्त एहतियात के वाक़िआत	176
41.	जंगे-बदर वाली मदद कब आएगी?	177
42.	अल्लाह की मदद कब उठ जाती है?	178
43.	मदद उठा दिए जाने की पहली मस्लेहत, आज़माईश	179
44.	दूसरी मस्लेहत, रूहानी ताक़त में इज़ाफ़ा	180

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
45.	तीसरी मस्लेहत, शहादत से सम्मानित करना	180
46.	चौथी मस्लेहत, खरे और खोटे की पहचान	181
47.	क़ियामत तक के लिए रहबरी	181
48.	परेशान करने वाले हालात भी ईमान की बढ़ोतरी का सबब	182
49.	ईमान वालों की दो क़िस्में	182
50.	मुख़ालिफ़ हालात आते क्यों हैं?	183
	तक़रीर (4)	184
1.	अगर माद्दी चीज़ें सन्तुलित हों तो दुनिया का निज़ाम ठीक चलता है	185
2.	रूहानी निज़ाम की तरतीब	185
3.	विश्व शान्ति के हासिल होने का ज़रिया	186
4.	इनसान में चार निस्बतें	186
5.	जानदार होने की निस्बत	187
6.	इनसान और दूसरे जानदारों में फ़र्क़	187
7.	फ़रिश्तों वाली निस्बत	188
8.	इनसान एक बीच की मख़्लूक़ है	188
9.	फ़रिश्तों और इनसान की इबादत का फ़र्क़	188
10.	इनसान इबादत में तरक़्क़ी करके ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनता है	189
11.	ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनने का मतलब	190
12.	जिहाद व क़िताल अख़्लाक़ से बरी नहीं	190
13.	अख़्लाक़ को सब अच्छा समझते हैं	191
14.	अख़्लाक़ और ख़िलाफ़त दावत के ज़रिये हासिल होगी	191

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
15.	नबियों वाला दावत का काम, अब मुसलमानों का फ़रीज़ा	192
16.	लोगों को दीन का दावत देने वाला बनाना यह ख़त्मे नुबुव्वत वाला काम है	192
17.	अपने इलाक़े में दावत का काम करना यह नबियों की नक़्ल है	193
18.	पूरे आ़लम में दावत के काम की फ़िक्र सय्यदुल-अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का काम है	193
19.	दावत के माहौल का नतीजा	194
20.	रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पहला काम	194
21.	दावत से ख़िलाफ़त तक	194
22.	कचेहरियों और जेलख़ानों से अख़्लाक़ नहीं आएगा	195
23.	दुनिया का निज़ाम अस्त-व्यस्त कैसे होता है?	195
24.	इनसान की शक्ल में जानवर	196
25.	जानवर की तीन क़िस्में	196
26.	दूसरे को नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा	196
27.	इनसान तीसरे दर्जे का जानवर कब बनता है?	197
28.	जानवरों से ज़्यादा बदतर	197
29.	हैवानियत और ख़िलाफ़त में फ़र्क़	197
30.	इनसानी कमालात की हैसियत	198
31.	बिजली की फ़िटिंग कर लेना यह कोई कमाल नहीं	198
32.	डॉक्टर बनना कमाल नहीं	198
33.	हुकूमत चलाना इनसानी कमालात में से नहीं	199
34.	चुनाव लड़ना इनसानी कमालात में से नहीं	199
35.	घर का बड़ा कौन?	200
36.	अल्लाह सब से बड़ा है	200

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
37.	ऐटमी ताक़त वाला भी अपनी जान नहीं बचा सका	201
38.	रिसर्च करने वालों का अपने आपको भुला देना	201
39.	आज सबसे ज़्यादा बेक़ीमत मख़्लूक़ इनसान है	202
40.	बर्थ-कन्ट्रोल और इनसान की बेक़ीमती	202
41.	ख़ुदा का मामला भी अब इनसानों के साथ जानवरों जैसा	203
42.	नमाज़ी का ताल्लुक़ सातों आसमानों से	204
43.	इबादतों में फ़रिश्तों का साथ	204
44.	हर चीज़ अपने जैसे के साथ रहती है	205
45.	मस्जिद वाले आमाल से आदमी फ़रिश्तों जैसा बनेगा	205
46.	शैतान कब-कब चकमा देगा?	205
47.	शैतान के अन्दर तीन ख़राबियाँ हैं	206
48.	हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़िआ	207
49.	सारी दुनिया का रुजू दीन व ईमान की तरफ़ कब होगा?	208
50.	ग़ैरों के सामने क्या चीज़ जाएगी?	208
51.	अख़्लाक़ के ज़ाहिर होने की जगह	208
52.	इबादतों का मिज़ाज ही अख़्लाक़ का शिक्षक है	209
53.	नमाज़ का मिज़ाज	209
54.	ज़कात का मिज़ाज	210
55.	रोज़े का मिज़ाज	211
56.	ख़ुदा की राह में माल लगाने का जज़्बा इबादत से पैदा होगा	211
57.	अहकाम की दो क़िस्में	212
58.	अ़द्ल व एहसान का मतलब	212
59.	ज़कात की अदायगी न करना वबाल का सबब है	212

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
60.	ग़रीब को इज़्ज़त और सम्मान के साथ ज़कात दी जाए	214
61.	ज़कात लेने वाले को ज़लील न समझा जाए	214
62.	इस्लाम ग़रीब व अमीर दोनों का हिमायती है	214
63.	मेहंगाई की वजह सूद	215
64.	दर्दे-दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को	216
65.	यह है इस्लाम का मिसाली अख़्लाक़	217
66.	पौने चार सौ करोड़ इनसानों का ग़म भी ज़रूरी	219
67.	मख़्लूक़ के दर्द में नबी ने दुख और तकलीफ़ें बरदाश्त कीं	219
68.	मिना में दावत और लोगों का ज़ुल्म व इनकार	220
69.	ग़म का साल	221
70.	गालियों और पत्थरों के जवाब में दुआएँ	222
71.	नबी ने मख़्लूक़ को जहन्नम से बचाने के लिए तकलीफ़ें सहीं	222
72.	यतीम दीन को गोद लेने वाले के लिए हलीमा सादिया वाला सम्मान	223
73.	तुम हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़ेहन लेकर यहाँ आए हो	224
74.	बरकती बच्चा और बरकतों का ज़ाहिर होना	224
75.	कलिमा पढ़ने वालों में भी ग़ैर-इस्लामी तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी दाख़िल हो रहा है	225
76.	दुनिया वाला समाज अमन वाला समाज नहीं	226
77.	पश्चिम को ख़तरा इबादतों से नहीं इस्लामी तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी से है	227
78.	दवा तुम्हारे पास है और पूरी दुनिया बीमार है	227

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
79.	तब किसी के रोकने से तुम रुक नहीं सकोगे	228
80.	शरारती क़िस्म के लोग हर ज़माने में रहेंगे	229
81.	अगर यही इस्लाम है तो मैं मुसलमान होने के लिए तैयार हूँ (एक वाक़िआ)	229
82.	पश्चिमी समाज में एक लड़की की हैसियत	230
83.	पश्चिमी मुल्कों की लड़कियों की ख़राब हालत	230
84.	मुसलमान लड़िकयों का ज़िन्दगी का रहन-सहन	231
85.	लोग तुम्हारी क़ब्रों को चिमट-चिमटकर रोयेंगे	231
86.	सारी बातें क्योंकर क़ाबू में लाई जा सकती हैं	232
87.	पाकीज़ा समाज वाली कॉलोनी कैसे बनेगी?	232
88.	ख़ुदा की ताक़त तस्लीम करो तो बेड़ा पार होगा	233
89.	सारी दुनिया की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं	233
90.	पूरा आलम मकड़ी और मकड़ी के जालों से भरा हुआ है	233
91.	दुनिया की ताक़तों की मिसाल	234
92.	अल्लाह के अ़ज़ाब की झाड़ू	234
93.	हमारी ताक़त बन्दूक़ की एक गोली से भी कम है	235
94.	रूहानी ताक़त भी ख़ुदाई गिरफ़्त से नहीं बचा सकती	236
95.	ईमान की ताक़त के मायने	236
96.	करने के दो काम	236
97.	दुनिया में दीन ज़िन्दा हो जाए या हमारी और तुम्हारी क़ब्रें यूरोप में बनें	237
	तक़रीर (5)	238
1.	सहाबा की ज़िन्दगी हमारे लिए नमूना है	238

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
2.	ज़िन्दगी के हर दौर में सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम हमारे लिए राह दिखाने वाले हैं	241
3.	इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार के माहौल में भी सहाबा-ए-किराम का अ़मल हमारे लिए नमूना है	241
4.	हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दौर से सबक़	242
5.	जान को ख़तरे में डालकर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की पैरवी की	243
6.	हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल	243
7.	गृहयुद्ध के वक़्त में भी सहाबा रज़ि० के ज़रिये मुसलमानों की रहनुमाई	244
8.	हज़रत अ़ली रिज़यल्लाहु अ़न्हु का अपने मुख़ालिफ़ों के साथ बर्ताव	245
9.	हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत पर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को सदमा	246
10.	नमाज़ अ़ली की अच्छी और खाना तुम्हारा अच्छा है	246
11.	रूम के बादशाह को हज़रत मुआ़विया रज़ि० का जवाब	247
12.	यह जिहाद नहीं गृहयुद्ध है, हज़रत अ़ली का ऐलान	248
13.	हज़रत अ़ली के दौर के गृहयुद्ध में मुसलमानों के लिए रहनुमाई	248
14.	ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का मक़ाम	249
15.	ख़िलाफ़त क्या है?	249
16.	ख़िलाफ़त के दौर से मिलने वाले राहनुमा सबक़	250
17.	क़ियामत तक के लिए उसूल	250
18.	सहाबा हमारे लिए नमूना हैं	251
19.	जन्नत में जाने वाले लोग	252

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
20.	सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के आपसी झगड़ों का राज़	252
21.	हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ि० बादशाहों के लिए नमूना हैं	253
22.	या अल्लाह! कोई मुझे टोकने वाला नहीं, अमीर मुआ़विया का वाक़िआ़	253
23.	अल्लाह के करम से उम्मीद है कि जन्नत मिलेगी, क्योंकि एक टोकने वाला मिल गया	255
24.	मौजूदा दौर कौनसा दौर है?	255
25.	दौरे फ़ारूक़ी माल आने से नहीं बनता	256
26.	दौरे फ़ारूक़ी कब बनता है?	256
27.	दीनी मदरसों के चन्दे को हराम कहने का हमारा मुँह नहीं	256
28.	मना किये हुए तरीक़े पर माल आया तो 'दौरे क़ारूनी' है	257
29.	वे लोग जिनके लिए यह दौर दौरे फ़ारूक़ी बन सकता है	257
30.	मौजूदा दौर दौरे उस्मानी नहीं बन सकता	258
31.	वे लोग जिनके लिए यह दौर दौरे शैतानी नहीं बन सकता	258
32.	दौरे अ़लवी कब बनता है?	259
33.	दूसरों के बारे में अच्छा गुमान, अपने बारे में चिन्तित	259
34.	यह फ़ितनों का दौर है	260
35.	ईमान में ताक़त पैदा करो	260
36.	जो भी करो क़ियामत के ध्यान के साथ करो	261
37.	आख़िरत आमाल के बदले की जगह है	262
38.	अल्लाह के ख़ज़ाने तो देख....	263
39.	ख़ुदा की नेमतों का भंडार ख़त्म नहीं होता	263
40.	दीन में आगे बढ़ने वालों की फ़ज़ीलत	264
41.	मुज्रिमों के साथ ख़ुदा का मामला	266

क्र.स.	क्या?	कहाँ?
42.	इसकी ज़रूरत है कि सलाहियत वाले लोगों में दीन आ जाए	266
43.	एकता और संगठन पैदा करने का तरीक़ा	267
44.	हम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से बेपरवाह नहीं हो सकते	268
45.	जिसने सुना उसने समझा	268
46.	जुमला एक, मायने अलग-अलग	269
47.	शैतान की बड़ी चाल	269
47.	हमें कोई ग़म नहीं	271

इन्तिसाब

मोहतरम मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी के नाम जिन्होंने इस किताब की तरतीब व इशाअ़त का हौसला दिया।

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

इज़हारे शुक्रिया

जनाब मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी की ख़िदमत में जिन्होंने इस किताब की तरतीब व इशाअ़त का हौसला दिया।

मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर के सदरुल्-मुदर्रिसीन उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मौलाना नबीह मुहम्मद साहिब दामत बरकातुहुम की ख़िदमत में, जिन्होंने हर तक़रीर अव्वल से आख़िर तक पढ़कर तरतीब के सिलसिले में अपने इत्मीनन का इज़हार किया।

अ़ज़ीज़े ग्रामी मौलवी हाफ़िज़ ज़करिया के लिए दुआ़एँ जिनका टेपरिकार्डर इस किताब की तरतीब का ज़रिया बना।

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

अपनी बात

शराबे कोहन फिर पिला साक़िया!
वही जाम गर्दिश में ला साक़िया!

(अ़ल्लामा इक़बाल)

कोई 21 नवम्बर 1994 ई० सोमवार का दिन था। घड़ी दिन के दस बजा रही थी। मैं मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर के दफ़्तर में अपने काम में मश्ग़ूल था, मेरे मोहतरम और करम-फ़रमा जनाब अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी दफ़्तर में तशरीफ़ लाए।

कुछ ही दिन पहले वह ज़िला हरिद्वार के अनेक मुक़ामात पर एक चिल्ला लगाकर घर वापस हुए थे। पहले उन्होंने कुछ सफ़र की रूदाद और चिल्ले की कारगुज़ारी सुनाई और उसके बाद फ़रमायाः

"अजी शफ़ीक़! तुम एक काम कर डालते तो बड़ा अच्छा होता। बड़ा इल्मी ज़ख़ीरा और बड़े काम की चीज़ें महफ़ूज़ हो जातीं। तुम्हारा ज़ौक़ भी है और अल्लाह ने साधन भी दिए हैं। मुझे यक़ीन है कि अगर तुम कोशिश करोगे तो यह काम बड़ी हद तक अन्जाम पा जाएगा"।

मैंने कहा हज़रत फ़रमाईए तो सही!

"दाई-ए-हक़ हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की तक़रीरें तरतीब दे डालो और उन्हें छपवा दो....." मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब ने जवाब में इरशाद फ़रमाया।

मैं कुछ दिन तो कश्मकश में रहा। मिलने वालों और अपने दोस्तों

से मश्विरे भी करता रहा लेकिन इतने बड़े काम के लिए हिम्मत न हो रही थी ..... मदरसा रियाज़ुल उलूम गुरैनी के उस्ताज़े हदीस हमारे दोस्त और सबक़ के साथी जनाब मौलाना सआदत अ़ली साहिब क़ासमी इलाहाबादी की बातों ने और ज़्यादा प्रेरणा दी ..... फिर मैंने एक रात दस बजे के बाद अल्लाह की बारगाह में सर सज्दे में रखा और इतने बड़े काम को आसान करने और उसमें इख़्लास के लिए दुआएँ माँगीं, और काम की शुरुआत कर दी।

आज मैं बहुत ख़ुश हूँ और अल्लाह तआला का बहुत ही शुक्र-गुज़ार, कि वह अहम और बड़ा काम जिसकी जानिब हज़रत मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब दामत बरकातुहुम ने तवज्जोह दिलाई थी, उसमें का कुछ हिस्सा मन्ज़रे-आ़म पर लाने की सआदत नसीब हो रही है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी दामत बरकातुहुम के दीनी बयानों के मजमूए का नाम "दावत व तब्लीग़" रखा गया है, और यह "दावत व तब्लीग़" की पहली जिल्द है। इस किताब की दूसरी जिल्द इन्शा-अल्लाह जल्द ही पेश की जायेगी।

इस किताब के छपकर सामने आने में शायद बहुत देर लग जाती लेकिन अल्लाह तआला बेहतरीन बदला और जज़ा इनायत फ़रमाये उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मौलाना अल्-हाज ज़मीर अहमद साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के साहिबज़ादे मौलाना मुहम्मद अज़्फ़र जमाल साहिब क़ासमी को जिन्होंने मेरी तरह-तरह की मस्रूफ़ियात (व्यस्तताओं) को देखते हुए ख़ुद फ़रमाया कि मैं इस सिलसिले में हर मुम्किन मदद और सहयोग के लिए हाज़िर हूँ..... अल्लाह तआला ने मौलाना अज़्फ़र जमाल साहिब को किताब लिखने और तरतीब देने का अच्छा ज़ौक़ दिया है। इस किताब की तरतीब में उनकी भरपूर मदद मेरे साथ रही।

हमें यक़ीन है कि अगर इस किताब को आप सच्चे दिल से पढ़ेंगे

तो इन्शा-अल्लाह दीन की वह दावत आपकी समझ में अच्छी तरह आ जाएगी जो दाइ-ए-हक़ हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब दामत बरकातुहुम ने दिल के पूरे दर्द और तड़प के साथ दी है।

अल्लाह तआ़ला हमारे हर काम में इख़्लास अ़ता फ़रमाएँ और दीन का दाई (दावत देने वाला) बनाएँ। आमीन

दुआ़ओं और मुफ़ीद मश्विरों का उम्मीदवार

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

उस्ताद मदरसा करामतिया
दारुल्-फ़ैज़, जलालपुर
ज़िला अम्बेडकर नगर (उ. प्र.)
तारीख़ 21 रमज़ान मुबारक 1416 हिजरी
11 फ़रवरी 1996 ई०

परिचय

अज़ हज़रत मौलाना नबीह मुहम्मद साहिब मद्-द ज़िल्लहू सदरुल्-मुदर्रिसीन मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर

हामिदंव्-व मुसल्लियन्। अल्लाह के रसूल ख़ातिमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उमूमी फ़रमान "फ़ल्-युबल्लिग़िश्- शाहिदुल् ग़ाइ-ब" (पस चाहिए कि जो मौजूद है वह उसको पहुँचा दे जो मौजूद न हो) ने उम्मत के हर उस आदमी पर जो दीन की बात सुनने या जानने वाला है, ज़रूरी कर दिया कि दीन की बात उन लोगों तक पहुँचाए जिन्होंने नहीं सुना, नहीं जाना। अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन्दों ने तब से अब तक इस फ़रमान पर अ़मल को जारी रखा, कभी तहरीर से, कभी तक़रीर से, कभी ख़ुसूसी समझाने-बुझाने से, कभी उमूमी सम्बोधन से। ग़रज़ जिस तरह का भी मौक़ा मयस्सर हुआ, उससे फ़ायदा उठाते हुए उसे ग़नीमत समझते हुए इस फ़रीज़े को अन्जाम दिया, और दे रहे हैं। लेकिन अल्लाह ने किसी भी काम की सलाहियत हर शख़्स को बराबर नहीं दी। हर शख़्स अपनी सलाहियत और योग्यता के अनुसार ही काम कर सकता है। किसी के बयान में जो रवानी, वज़ाहत और तासीर हो, ज़रूरी नहीं कि दूसरे के बयान में भी ये चीज़ें उसी दर्जे में हों। चुनाँचे कुछ बयान ऐसे असरदार (प्रभावकारी) होते हैं कि कहा गया:

اِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا

यानी बाज़े बयान करने वाले जादू का असर रखते हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि की दीनी मेहनत से जुड़े हुए लोगों में इस वक़्त हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी (अल्लाह उनकी उम्र को लम्बी करे और उनके

फ़ैज़ को आ़म करे) भी अल्लाह के ऐसे चुने हुए बन्दों में से हैं, जिनके बयान की यही शान नुमायाँ है।

जहाँ में ग़लग़ले हैं उस ज़ात की जादू बयानी के
मगर जादू-बयानी वह कि जिसमें है दर्से ईमानी

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी के बयानात को और ज़्यादा आ़म करने की एक शक्ल यह भी थी कि उन बयानों को लिखकर किताबी शक्ल में शाया किया जाए। इससे जहाँ एक तरफ़ बयान की इशाअ़त (प्रसार) होगी तो दूसरी तरफ़ यह फ़ायदा भी हो सकता है कि दूसरों को उस अन्दाज़ पर बात करने का सलीक़ा मयस्सर होगा। वैसे तो असल चीज़ बयान करने वाले और बात के कहने वाले के अन्दर का दिली दर्द और ज़ेहनी फ़िक्र है।

अज़ दिल ख़ेज़द बर दिल रेज़द

जो चीज़ दिल से निकलती है वह सीधी दिल पर असर करती है।

दर्द वाले और बेदर्द का रोना बराबर नहीं हो सकता। हज़रत मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया था कि जब तुम इख़्लास और सही फ़िक्र व दर्द के साथ दीन के दाई (दावत देने वाले) बनोगे तो अल्लाह तुम से वे हिक्मत की बातें कहलाएँगे जो तुमने पहले से सोचा न होगा।

अ़ज़ीज़म मौलवी शफ़ीक़ अहमद सल्ल-महू ने मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी के बयानात को किताबी शक्ल में लाने का सिलसिला शुरू किया है। इन तक़रीरों का मुसौदा मैंने पूरा एक-एक शब्द देखा है और इससे लाभान्वित हुआ हूँ। अल्लाह तआ़ला इख़्लास (नेक-नीयती) व साबित-क़दमी) नसीब फ़रमाए और उनकी इस कोशिश को बेहतरीन शक्ल में सामने लाये। आमीन

नबीह मुहम्मद

11 शाबान 1416 हिजरी

तक़रीर (1)

जो तब्लीग़ी इज्तिमा भोपाल में की गई।

मेरे मोहतरम दोस्तो!

चारों तरफ़ से लोग मर-मरकर जहन्नम के अन्दर जा रहे हैं और हमारे दिलों में इसकी फ़िक्र न हो। ऐसी बेफ़िक्री नहीं होनी चाहिए।

अल्लाह के नबियों वाला दर्द, नबियों वाला ग़म, नबियों वाली बेचैनी जमाअ़तों में फिरकर हमें अपने अन्दर पैदा करनी चाहिए। यह नबियों वाली बेचैनी और नबियों वाला जो ग़म होगा वह काम करवाएगा, कम सलाहियत वाले से भी ज़्यादा सलाहियत वाले से भी, कम माल वाले से भी और ज़्यादा माल वालों से भी, कम इल्म वालों से भी और ज़्यादा इल्म वालों से भी, काम लेने वाले अल्लाह हैं।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

तक़रीर (1)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ o نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَاتَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ o نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍo وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ o وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ، اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌo (پاره ۲۴)

وقال اللّٰه تعالٰى ..... فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ. (پاره ۲۶)

हर इनसान की चार मन्ज़िलें हैं

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! हर इनसान की चार मन्ज़िलें हैं। एक मन्ज़िल तो माँ के पेट की है। दूसरी मन्ज़िल दुनिया के पेट की है। तीसरी मन्ज़िल क़ब्र के पेट की है और चौथी आख़िरत की है।

ये चार मन्ज़िलें हर इनसान की हैं। माँ के पेट के अन्दर तो अल्लाह पाक ने इनसान का बदन बनाया और उसमें रूह डाली, तंग जगह में और अन्धेरे के अन्दर।

दुनिया के पेट के अन्दर अल्लाह पाक ने इनसान को इस लिए भेजा ताकि क़द्र-दानी वाले रास्ते पर चले और नाक़द्री वाले रास्ते को छोड़ दे। अल्लाह पाक की उसके ऊपर जो मेहरबानियाँ हैं उनकी क़द्र पहचाने और अल्लाह की बात मानता हुआ दुनिया से जाए।

थोड़ा-सा इख़्तियार थोड़े-से वक़्त के लिए

इस दुनिया के अन्दर अल्लाह पाक ने इनसान को थोड़ा-सा इख़्तियार दिया है, थोड़े-से वक़्त के लिए दिया है। पूरा इख़्तियार नहीं दिया है। पूरा इख़्तियार देते तो दुनिया में कोई बीमार न होता, कोई बूढ़ा न होता, कोई हारता नहीं, ज़्यादातर मौत को नहीं चाहते तो कोई मरता भी नहीं। लेकिन इनसान को अल्लाह पाक ने पूरा इख़्तियार नहीं दिया है। थोड़ा इख़्तियार दिया है भले और बुरे का। यह हाथ अल्लाह पाक ने दिया है, इससे यतीमों और मिस्कीनों को जाकर रोटी तक़सीम कर सकता है। और इस हाथ के अन्दर यह भी ताक़त है कि दूसरे के हाथ से रोटी छीन सकता है। ये दोनों ताक़तें अल्लाह ने दी हैं।

माँ के पेट के अन्दर तो इनसान बिल्कुल मजबूर है। जैसा बनाया वैसा बन गया। लड़का बनाया या लड़की बनाया, काला बनाया या गोरा बनाया। ज़्यादा समझ वाला बनाया या कम समझ वाला बनाया। जैसा बनाया वैसा बन गया। वहाँ तो कोई इख़्तियार नहीं, जौनसे

ख़ानदान में और जौनसी क़ौम में पैदा कर दिया।

इस दुनिया में आने के बाद इनसान को थोड़ा-सा इख़्तियार है, थोड़े-से वक़्त के लिए। और वह थोड़ा वक़्त मौत तक का है। इसके अन्दर अगर अपने इख़्तियार को अल्लाह की मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो यह आदमी दुनिया व आख़िरत में कामयाब होगा। और अगर इसके अन्दर इनसान ने अपने इख़्तियार को अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो दुनिया व आख़िरत में यह परेशान, तबाह व बरबाद होगा।

अल्लाह की नाराज़गी मुसीबत का सबब है

एक तो है अल्लाह की मर्ज़ी और एक है अपनी मर्ज़ी। अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने में एक मुजाहदा (मेहनत) है। वह यह कि अपनी मर्ज़ी छोड़ देनी पड़ती है। और अपनी मर्ज़ी पर चलने के अन्दर शुरू में एक सहूलियत है, वह यह कि आदमी "जी चाही" पर चलता है। लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी के छूट जाने पर अल्लाह नाराज़ होता है। और अल्लाह पाक का नाराज़ होना बहुत बड़ी मुसीबत है।

ज़मीन व आसमान पैदा करने वाले अल्लाह हैं। चाँद व सूरज को पैदा करने वाले अल्लाह हैं, और इस इनसान को अन्धेरे के अन्दर और तंग जगह के अन्दर पैदा करने वाले जो अल्लाह हैं, क़ादिरे मुतलक़ अल्लाह हैं। जब वह नाराज़ हो जाते हैं तो आदमी बहुत परेशान हो जाता है।

फ़ौरन पकड़ नहीं

लेकिन इतनी मेहरबानी तो अल्लाह तआला फिर भी करते हैं कि जब इनसान अल्लाह को नाराज़ करने वाला काम करता है तो उसकी फ़ौरन पकड़ नहीं करते बल्कि उसके लिए हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं। उसके सुधरने का इन्तिज़ाम करते हैं। फिर भी अगर वह हिदायत पर नहीं आता, सुधरता नहीं, फिर भी उसकी पकड़ नहीं करते।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔ़न की गुफ़्तगू

फ़िरऔ़न है, ख़ुदाई का दावा किया, लेकिन एक दम से उसकी पकड़ नहीं की। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को समझाने भेजा। उसने मज़ाक़ उड़ाया, फिर दूसरी बार समझाया फिर उसने मज़ाक़ उड़ाया। फिर तीसरी बार समझाया तो वह गुस्से में आ गया और उसने कह दिया:

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِىْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ (پ ۱۹)

यानी अगर मेरे सिवा कोई और ख़ुदा तुमने माना तो तुमको जेलख़ाने भेज दूँगा।

उसको तजुर्बा था। बहुत-सों को उसने जेलख़ाने भेजा था। हज़रत मूसा ने कहा:

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ۝ (پارہ ۱۹)

यानी अगर मैं कोई खुली चीज़ तेरे पास ले आऊँ तो क्या फिर भी मेरे को तू जेलख़ाने भेजेगा?

उसके तो ज़ेहन में भी नहीं आया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम खुली चीज़ क्या लाएँगे?

तो उसने कहा:

"قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (پ ۱۹)

यानी फ़िरऔ़न ने कहा अगर तुम सच्चे हो तो लाओ।

हिदायत का सामान

अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने डन्डे को ज़मीन पर डाल दिया तो वह बड़ा अज़्दहा बन गया और अपने हाथ मुबारक को बग़ल से निकाला तो वह बहुत चमकदार बन गया।

यह उसके लिए हिदायत का सामान और इन्तिज़ाम था। उसको

चाहिए था कि इस मोजिज़े (नुबुव्वत की निशानी) को देखकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की बात को मान लेता कि यह अल्लाह के भेजे हुए हैं।

लेकिन नहीं माना ..... फ़िर मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अज़्दहा पकड़ा वह डन्डा बन गया।

उस वक़्त तो फ़िरऔ़न थोड़ा सहम गया, डर गया, घबरा गया, लेकिन फिर उसने मीटिंग जमाई। जितने मिम्बर थे सबको जमा किया। फ़िरऔ़न और सारे के सारे दरबारियों ने मिलकर सोचा कि यह तो जादूगर है, इसके लिए जादूगर जमा करो। जादूगर जमा हो गए। देखने के लिए बड़ा मजमा इकट्ठा हो गया। जादूगरों ने अपना जादू डाला। उन्होंने रस्सियाँ डालीं और चारों तरफ़ साँप-बिच्छू दौड़ने लगे।

मूसा की लाठी और जादूगरों का ईमान

अब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से अपना डन्डा डाला। वह अज़्दहा बन गया जो सारे साँपों को निगल गया। यह देखकर जादूगरों ने समझ लिया कि यह शख़्सियत जादूगर नहीं है। बल्कि यह अल्लाह के नबी हैं। फ़ौरन सब सज्दे में गिर गए और सबने कहा:

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ۝ (پارہ ۹)

यानी वे बोले कि हम ईमान लाए परवर्दिगारे आ़लम पर जो रब है मूसा और हारून का।

फ़िरऔ़न का गुस्सा

फ़िरऔ़न को यह देखकर बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा मैंने तुम्हें इनाम देने के लिए कहा, अपना क़रीबी बनाने के लिए कहा, तुम मेरे आदमी होकर उनके बन गए। फिर बहुत नाराज़ होकर कहा:

لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ (پارہ ۹)

मैं तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा। तुम्हें इनाम तो क्या मिलता सूली पर चढ़ना पड़ेगा।

मज़बूत ईमान और आख़िरत की फ़िक्र

लेकिन उनका ईमान इतना मज़बूत हो चुका था और उन्हें आख़िरत की इतनी फ़िक्र हो चुकी थी कि उन्होंने कहा चाहे यह हमें सूली पर चढ़ा दे लेकिन हमारी आख़िरत न बिगड़े। क्योंकि आख़िरत का मामला हमेशा का है।

तो एक मन्ज़िल तो माँ के पेट की है और एक मन्ज़िल दुनिया के पेट की। इसके अन्दर आदमी अपनी मर्ज़ी पर चले या अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर चले, इन्हीं दो रास्तों पर यह चलेगा कभी इस रास्ते पर कभी उस रास्ते पर। कुछ लोग सीधे रास्ते पर चलेंगे कुछ लोग टेढ़े रास्ते पर।

क़ब्र की मन्ज़िल

उसके बाद तीसरी मन्ज़िल आएगी वह है क़ब्र की जो दुनिया में सीधे रास्ते पर चला होगा, क़ब्र की मन्ज़िल के अन्दर उसको बहुत राहत व आराम मिलेगा। और जो टेढ़े रास्ते पर चला होगा उसे बहुत तकलीफ़ होगी।

आँखों से ओझल

लेकिन क़ब्र के अन्दर राहत व आराम और क़ब्र के अन्दर की जो तकलीफ़ है, वह दुनिया में रहने वालों को दिखाई नहीं देती। इनको मालूम नहीं होती। और जो क़ब्र वाली ज़िन्दगी के कायल (मानने वाले) हैं अगर उसका बार-बार मुज़ाकरा न करें तो उनके ज़ेहन से भी उतर जाती है।

और क़ब्र वाली मन्ज़िल जो है वह क़ियामत तक रहेगी। अगर सुधरा हुआ और ईमान व आमाल वाला आदमी क़ब्र के अन्दर पहुँचने

वाला होता है तो उसको मरने के वक़्त ही ख़ुशख़बरियाँ सुनानी शुरू कर दी जाएँगी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

اِنَّ الَّذِ یْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا (پاره ۲۴)

जिन लोगों ने कह दिया कि हमारा पालनहार और हमारा परवर्दिगार अल्लाह है, और उसके ऊपर वह मौत तक जमे रहे और इस यक़ीन के साथ जमे रहे कि अल्लाह पाक का हुक्म हमारी तबीयत के ख़िलाफ़ तो हो सकता है, हमारी तरबियत के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ (پاره – ۱)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं।

और दुआ भी मंगवाई:

اِهْدِنَاالصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ٥ (پاره–۱)

अगर अल्लाह को रब माना और उसके ऊपर मौत तक जमे रहे, तो क्या होगा?

تَتَنَزَّلُ عَلَیْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ. (پاره– ۲٤)

मौत के वक़्त फ़रिश्ते उतरेंगे। और वे तीन बातें कहेंगे: एक तो कहेंगे:

اَلَّا تَخَافُوْا

यानी आगे क्या होगा, इससे घबराओ नहीं। तुम्हारे लिए कोई घबराने की बात नहीं। उसके बाद कहेंगे:

وَلَا تَحْزَنُوْا

और जो तुम्हारी दुनिया छूट गई, इसका भी ग़म मत करो। थोड़ा-सा छूटा है, मिलेगा बहुत ज़्यादा।

وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُ وْنَ ٥ (پاره–۲٤)

और जौनसी जन्नत का तुमसे वायदा किया जाता था, उसकी

खुशख़बरी ले लो।

और फिर वे फ़रिशते यूँ कहेंगे:

نَحْنُ اَوْلِيٰٓئُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ (پاره- ۲۴)

हम तुम्हारे साथी दुनिया के अन्दर भी थे और आख़िरत में भी हम तुम्हारे साथी हैं।

फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि दुनिया के अन्दर फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते और मौत आ गई तो फ़रिश्ते दिखाई देते हैं।

आज का "मुशाहद" (दिखाई देने वाला) कल "ग़ायब" हो जाएगा। और आजका "ग़ायब" कल "मुशाहद" (दिखाई देने वाला) हो जाएगा। जो आज दिखाई दे रहा है वह मौत पर दिखाई नहीं देगा, और जो मौत पर दिखाई देगा वह आज दिखाई नहीं देता।

दुनिया में इनसान को दिखाई देने वाली चीज़ें

आज इनसान को क्या दिखाई देता है? मुल्क, माल, रुपये-पैसे, सोना-चाँदी, दुकान, खेत, यह सब जितना मेरे हाथ में होगा उतनी ही मेरी ज़िन्दगी बनेगी।

क्या नहीं दिखाई देता?

यह कि मेरे अन्दर ईमान और आमाल होंगे तो मेरी ज़िन्दगी बनेगी, यह नहीं दिखाई देता। और जब मौत आएगी तो मुल्क व माल और रुपये-पैसे से जो कामयाबी दिखाई देती थी वह दिखाई देनी बन्द हो जाएगी और ईमान व आमाल पर जो कामयाबी मिलनी चाहिए वह दिखाई दे जाएगी। और उसकी तैयारी नहीं तो ईमान व आमाल न होने की बिना पर जो परेशानी बताई गई थी, नबियों ने, आसमानी किताबों ने जो परेशानी बताई थी अब वह परेशानी सामने आ गई। अब यह बहुत परेशान हो गया कि हो क्या गया?

तो आज जो दिखाई दे रहा है वह मौत के वक़्त दिखाई नहीं

देगा। और आज जो दिखाई नहीं देता वह मौत के वक़्त दिखाई देना शुरू हो जाएगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को आख़िरत का डर

इसी बिना पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब ख़न्जर मारा गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु वहीं गिर गए। ख़ून के फ़व्वारे छूटे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहुत परेशान हुए उनको लाकर लिटाया गया। वह यूँ कह रहे थे कि थोड़ी देर में दुनिया ग़ायब हो जाएगी और आख़िरत मेरे सामने आ जाएगी। पता नहीं मेरे साथ क्या मामला होगा?

ऐ अल्लाह! अगर तू मेरी नेकियों और बुराईयों को बराबर कर दे तो मैं इसके लिए तैयार हूँ। इसलिए कि बुराईयों की पकड़ पर जब अल्लाह आएगा तो अल्लाह की पकड़ बड़ी सख़्त है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! कुछ तो सोचो कि आख़िरत में हमारे साथ क्या होगा?

न मालूम किसके साथ क्या हो?

मौत के बाद जब क़ब्र में रखा जाएगा तो कुछ पता नहीं कि किसके साथ क्या मामला होगा? अगर हम लोगों में दुनिया के अन्दर इसकी फ़िक्र आ गई, और क़दम-क़दम पर अपने मरने के बाद वाली ज़िन्दगी को सामने रखते रहे तो अल्लाह की ज़ात से यह उम्मीद है कि दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने वाले बनेंगे।

अल्लाह के हुक्म और सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फल

यह तो होगा नहीं कि हम घर छोड़ दें, हम कारोबार छोड़ दें। जैसे हज़रत जी ने निकाह के बयान में जो चीज़ें इरशाद फ़रमाई कि बीवी के मुँह में अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ लुक़्मा भी डालेगा तो

उस पर भी सवाब मिलेगा। तो दुनिया के जो काम हम करेंगे अगर वे अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ करेंगे तो अल्लाह पाक हमारी दुनिया की ज़रूरतें भी पूरी करेंगे और उसपर सवाब भी देंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बेचैनी व बेक़रारी

तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बेचैन थे, बड़े बेक़रार थे, रो रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया:

"अमीरुल मूमिनीन! आप इतने बेचैन व बेक़रार क्यों हैं? रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आप से ख़ुश होकर इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु आप से ख़ुश होकर तशरीफ़ ले गए। और आपके हाथों पूरे आ़लम में कितना दीन फैला और कहाँ-कहाँ कितना फैलता जा रहा है। तो आप इतने परेशान क्यों हैं?"

तो इसपर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यूँ कहा:

"ऐ रसूले करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के चचाज़ाद भाई! क्या यह बात तुम क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने भी कहोगे? इस लिए कि क़ियामत का दिन बड़ा भारी दिन है और हर इनसान का किया-कराया सामने आ जाएगा। और न मालूम आख़िरी फ़ैसला क्या हो?"

तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यूँ कहा कि "क़ियामत के दिन मैं अल्लाह के सामने यह बात कहूँगा।"

मेरे सर को मिट्टी में भर जाने दो

(हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का सर मुबारक अपने बेटे की रान पर था। कहा कि बेटा! अपनी रान से मेरे सर को ज़मीन पर डाल दो

और गुबार में भर जाने दो। मेरा सर किसी की रान पर रहने के क़ाबिल नहीं।

परहेज़गारी कब आएगी?

एक बात ज़ेहन में रहे कि जितना अल्लाह पाक से ताल्लुक़ क़ायम होगा। जितनी अल्लाह पाक की मारिफ़त (पहचान) मिलेगी और जितना अल्लाह पाक का ध्यान होगा और जितना अल्लाह के राज़ी करने का जज़्बा होगा, उतना ही आदमी अल्लाह पाक से डरेगा। उतना ही अल्लाह पाक का तक़्वा और डर उसके अन्दर पैदा होगा।

और जितना आदमी अल्लाह पाक से दूर होता चला जाएगा और उसको अल्लाह पाक का ध्यान नहीं होगा, उतना ही वह आदमी गुनाहों के ऊपर जुर्रत करने वाला होता चला जाएगा और उतना ही वह आदमी ख़राबियों की तरफ़ चलता चला जाएगा और अल्लाह से दूर होता चला जाएगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो इतना डर रहे हैं यह तक़्वा उनके अन्दर है जो अल्लाह पाक से जितना क़रीब होता है उतना ही अल्लाह पाक उसे तक़्वा (अपना डर और परहेज़गारी) देते हैं। और तक़्वा वाले के आमाल क़बूल होते हैं।

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ○ (پاره ٥-٦)

तो मैं यह बात अ़र्ज़ कर रहा था कि आज जो दिखाई देता है वह मौत के वक़्त दिखाई देना बन्द हो जाएगा। और आज जो दिखाई नहीं देता है वह मौत के वक़्त दिखाई देना शुरू हो जाएगा। और उस वक़्त आदमी कुछ कर नहीं सकेगा। तो फ़रिश्ते यूँ कहते हैं:

"نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ

यानी हम तुम्हारे साथी दुनिया के अन्दर भी थे और आख़िरत के अन्दर भी। फ़र्क़ यह है कि दुनिया के अन्दर हम दिखाई नहीं देते थे

और आख़िरत के अन्दर हम दिखाई देते हैं।

फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते

इस वक़्त भी ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते हैं। जैसा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़बर है कि जब अल्लाह पाक की बड़ाई, अल्लाह पाक की पाकी और अल्लाह पाक की वह्दानियत (उसका एक होना) बयान की जाती है तो ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते होते हैं।

और फ़रिश्ते ऐलान भी करते हैं:

هَلُمُّوْا اِلٰى حَاجَتِكُمْ

यानी आ जाओ अपनी ज़रूरत की तरफ़।

तो ऐ मेरे मोहतरम दोस्तो! वे फ़रिश्ते कहेंगे कि हम दुनिया में भी तुम्हारे साथ थे और आख़िरत में भी तुम्हारे साथ होंगे।

نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ (پاره– ۲۴)

फ़रिश्ते कहेंगे कि हम दुनिया में भी तुम्हारे साथ थे और आख़िरत में भी तुम्हारे साथ होंगे।

आख़िरत और जन्नत में क्या मिलेगा तुम्हें?

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝ (پاره–۲۴)

तुम्हारा जो जी चाहेगा वह तुम्हें वहाँ मिलेगा। तुम्हारी मर्ज़ी में जो बात आएगी वह वहाँ तुम्हें मिलेगी। इसलिए कि तुमने अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी में क़ुरबान कर दिया।

अपनी मर्ज़ी को मेरी मर्ज़ी पर क़ुरबान कर दो

(अल्लाह का फ़रमान)

जब सही तरीक़े पर आदमी दस मन अनाज क़ुरबान करता है तो उसे सौ मन अनाज मिलता है। अगर आम की एक गुठली क़ुरबान

कर देता है तो उसे पूरा आम का पेड़ मिलता है।

तो यह माद्दी (भौतिकवादी) लाईन की कुरबानियों पर अल्लाह पाक ने नतीजे निकाल कर दिखाए और रूहानी लाईन की कुरबानियों पर अल्लाह पाक ने यह बता दिया कि अपनी मर्ज़ी को मेरी मर्ज़ी में कुरबान कर दो तो तुम्हारी मर्ज़ी उगेगी। और उगने के बाद फिर जो माँगोगे वह तुम्हें मिलेगा।

जन्नत की नेमतें

छोटे से छोटी जन्नत अगर किसी को मिली तो पूरी दुनिया से दस गुनी बड़ी जन्नत होगी। और उसके अन्दर सत्तर बहत्तर बीवियाँ होंगी और हज़ारों की तायदाद में ख़िदमत करने वाले होंगे, और जन्नत की ज़मीन की मिट्टी ज़ाफ़रान की होगी। और पत्थर, कंकर हीरे-जवाहिरात के होंगे। और जन्नत की ईंटें सोने-चाँदी की होंगी और उनके जोड़ने का गारा मुश्क का होगा। और जन्नत में जाने वाला हर मर्द और हर औरत ३० . ३३ वर्ष की जवानी की उम्र वाला होगा, और करोड़ों साल के बाद भी बुढ़ापा नहीं आएगा, और ऐसी ज़िन्दगी मिलेगी कि करोड़ों साल के बाद भी मौत नहीं आएगी। और कपड़े ऐसे मिलेंगे जो कभी मैले नहीं होंगे। और खाना ऐसा मिलेगा जो पेट में जाकर गन्दगी नहीं बनेगा।

बस अब अगर मैं ज़्यादा तफ़सीलात की तरफ़ उतरूँगा तो जन्नत का शौक़ तो ख़ूब पैदा होगा और उसके मुक़ाबले में जहन्नम की तफ़सीलात की तरफ़ अगर हम उतरेंगे तो डर भी बहुत लगेगा। लेकिन बयान का वक़्त इसी में पूरा हो जाएगा और जहन्नम से बचने और जन्नत के अन्दर दाख़िल होने की जो तैयारियाँ हमें दुनिया के अन्दर करनी हैं वे कैसे करनी हैं? इसके लिए वक़्त नहीं बचेगा।

जन्नत का शौक़ तो पैदा हो जाएगा और जहन्नम का डर तो पैदा हो जाएगा लेकिन ईमान और आमाल के ज़रिये हम तैयारी कैसे करें?

इसके लिए वक़्त बचेगा नहीं। तो इस वजह से हम ज़्यादा तफ़सील पर नहीं जाएँगे। थोड़ा शौक़ पैदा हो गया थोड़ा ख़ौफ़ पैदा हो गया, फिर इस दुनिया के अन्दर कैसे हमें रहना है, यह बात बताई जाती है।

अल्लाह पाक की मेहमानी

तो फ़रिश्ते यूँ कहेंगे कि जो तुम्हारा जी चाहेगा वह यहाँ तुम्हें मिलेगा। जो तुम्हारी ज़बान माँगेगी वह तुमको यहाँ पर मिलेगा। और ग़फ़ूरुर्रहीम की तरफ़ से तुम लोग मेहमान होगे, अल्लाह पाक की मेहमानी होगी। और मेहमान के लिए मेज़बान उसके जी में जो चीज़ होती है वह भी देता है, ज़बान से जो माँगे वह भी देता है और मेज़बान बहुत-सी चीज़ ऐसी देता है जो मेहमान ने माँगी भी नहीं। उसके जी ने भी नहीं चाहा फिर भी वे चीज़ें लाकर रख देता है। क़िस्में बदल-बदलकर आती रहती हैं।

तो ऐसी-ऐसी नेमतें अल्लाह पाक देंगे जिनको किसी आँख ने देखा नहीं होगा और किसी कान ने सुना नहीं होगा और किसी दिल में कभी उसका ख़्याल नहीं गुज़रा होगा। ऐसी-ऐसी नेमतें अल्लाह पाक जन्नत के अन्दर देंगे।

जादूगरों का ईमान लाना और फ़िरऔन को दावत

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! मैंने अ़र्ज़ किया था कि वे जो जादूगर थे उन जादूगरों ने तय कर लिया कि हम अब ईमान तो छोड़ेंगे नहीं, चाहे यह हमको सूली पर लटका दे। और उन्होंने फ़िरऔन से भी कह दिया:

فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ (پارہ– ۱۶)

तेरा जो जी चाहे कर ले हम तो ईमान ला चुके।

बल्कि उन जादूगरों ने फ़िरऔन को भी दावत दी और उसका असर यह हुआ कि चारों तरफ़ जो मजमा इकट्ठा हुआ था उसके

अन्दर से बहुत बड़े मजमे ने वहीं कलिमा पढ़ लिया। अब चारों तरफ़ ईमान वाले बन गए।

फ़िरऔन की हठधर्मी

यह सारा इन्तिज़ाम था फ़िरऔन की हिदायत का। वह बिगड़ा हुआ और भटका हुआ था। लेकिन एक दम से अल्लाह ने उसकी पकड़ नहीं की।

इनसान अगर अल्लाह को नाराज़ करने वाले काम करे तो अल्लाह पाक एक दम से उसे नहीं पकड़ते बल्कि अल्लाह पाक उसके सुधरने का इन्तिज़ाम करते हैं। फ़िरऔन के सुधरने का अल्लाह पाक ने इतना बड़ा इन्तिज़ाम किया। यहाँ तक कि उसकी बीवी जो थी वह भी ईमान वाली बन गई। हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा, वह भी ईमान वाली बन गईं। लेकिन यह सारा हो जाने के बावजूद फ़िरऔन जो था वह ईमान पर नहीं आया।

कभी इनसान जब हठधर्मी पर उतरता है तो चाहे कितना ही उसकी समझ में बात आ जाए मगर वह अपनी हठधर्मी को नहीं छोड़ता। और फिर उसके ऊपर ऐसी ज़ोर की मार पड़ती है कि होश खट्टे हो जाते हैं। क्योंकि लात का भूत बात से नहीं माना करता। जब तक कि उसके ऊपर अच्छी तरह से लात न पड़े। यह लात का भूत था उसने बात से नहीं माना।

बुलाएँ मूसा अपने रब को

(फ़िरऔन की बद-कलामी)

ख़ैर! यह मज्लिस ख़त्म हो गई। फिर उसने अपना दरबार जमाया। बजाए हिदायत पर आने के अपना दरबार जमाया और दरबार जोड़कर यह कहने लगा कि मेरे को छोड़ दो ताकि मूसा को क़त्ल कर दूँ। फिर मूसा अपने अल्लाह से दुआ माँगते फिरें, फिर देखें

कि क्या होता है?

ये सारे दुआ से डराते हैं, ज़रा देखें तो सही कि उनकी दुआओं से क्या होता है?

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ (پاره-۲۴)

यानी छोड़ दो! मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ। अब माँगें यह दुआ देखें कया होता है?

उसके ज़ेहन में यह था कि दुआ से कुछ होता नहीं। ये ख़्वाह-मख़्वाह की बातें हैं।

इतना बड़ा जुर्म उसने किया कि एक नबी के क़त्ल का मन्सूबा बना रहा है, लेकिन इसके बावजूद अल्लाह तआला ने उसको नहीं पकड़ा।

मैं यह बार-बार इसलिए कह रहा हूँ कि अगर ग़लतियों के बावजूद कोई मुसीबत न आये तो इससे यह न समझ लेना कि मुसीबत नहीं आएगी। मुसीबत आनी है और अल्लाह की पकड़ होनी है, लेकिन यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि अल्लाह पाक हिदायत का सामान करते हैं और हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं। ताकि मेरा यह बन्दा हिदायत पर आ जाये और मरने के बाद वाली जो बड़ी परेशानियाँ हैं उन परेशानियों से यह बच जाए। यह अल्लाह पाक की बहुत बड़ी इनायत और मेहरबानी है।

तो मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि फ़िरऔन जो था उसने इतनी ना-मुनासिब हरकतें कीं और अल्लाह को नाराज़ किया लेकिन अल्लाह ने उसकी पकड़ नहीं की। यहाँ तक कि उसने नबी के क़त्ल का इरादा किया कि मेरे को छोड़ो मूसा को क़त्ल करूँ और यह दुआ माँगें। उनकी दुआ से क्या होता है?

क़बूलियत का वायदा

दोस्तो और बुज़ुर्गो! दुआ का मामला ऐसा है कि अल्लाह पाक का

वायदा है:

اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (پارہ-۲۴)

तुम मेरे से दुआ माँगो मैं क़बूल करूँगा।

यह अल्लाह पाक का वायदा है, बिल्कुल पक्का वायदा। लेकिन इसमें एक शर्त है, वह यह कि दुआ की क़बूलियत में रुकावट डालने वाली कोई चीज़ न हो।

दुआ क्यों क़बूल नहीं होती

बाज़ चीज़ें दुआ की क़बूलियत में रुकावट डालती हैं- एक तो हराम खाना और कपड़ा। इससे दुआ क़बूल नहीं होती। दूसरे ग़फ़लत से दुआ माँगी तो वह क़बूल नहीं होती।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَقْبَلُ الدُّعَآءَ عَنْ قَلْبٍ لَاهٍ

यानी अल्लाह तआला ग़ाफ़िल दिल की दुआ क़बूल नहीं करता।

आदमी ख़ूब ध्यान से दुआ माँगे और ध्यान से दुआ माँगने का जो वक़्त है वह आख़िरी रात का वक़्त है। चारों तरफ़ सन्नाटा हो जाता है। उस वक़्त बन्दा होता है और बन्दे का अल्लाह होता है, और अल्लाह पाक अपनी मेहरबानियों के साथ मुतवज्जह होते हैं। उस वक़्त अल्लाह से माँगिए।

और दिन में भी माँगिए। माँगने से तो चूकिए नहीं। लेकिन माँगें तो ध्यान से माँगें।

तो पहली चीज़ यह कि खाना कपड़ा हराम का हो तो दुआ क़बूल नहीं होती। दूसरे ग़फ़लत से दुआ माँगी तो क़बूल नहीं होती।

दावत के काम का छोड़ना

दुआ के क़बूल न होने का सबब

और तीसरी चीज़ बता दूँ बे-तकल्लुफ़, वह यह कि दावत का

काम न करे तो दुआ क़बूल नहीं होती। और मैं नहीं कहता अल्लाह के प्यारे नबी कहते हैं:

مُرُوْابِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ

भली बातें बताया करो और बुरी बातों से बचाया करो। यानी दावत का काम करो। कहीं तुम लोगों पर वह दिन न आ जाए कि तुम दुआ करो और तुम्हारी दुआ क़बूल न हो।

तो क्या मालूम हुआ कि दावत का काम जब छूट जाता है तो दुआ क़बूल नहीं होती।

घबराएँ नहीं

लेकिन एक बात आप से अर्ज़ कर दूँ। आप हज़रात घबरा न जाएँ कि हमारा खाना तो हराम का, कपड़ा तो हराम का और दावत का काम हम करते नहीं, तो हमारी दुआ तो क़बूल होगी नहीं। तो फिर दुआ माँगने से क्या फ़ायदा?

नीयत तो करें

तो देखो भाई! इस वक़्त हम जितने भी लोग यहाँ बैठे हैं, फ़ौरन खाना और कपड़ा हलाल का बनाना तो मुश्किल है लेकिन यह तो हो सकता है कि हम सब नीयत कर लें कि हमारा जो खाना और कपड़ा हराम का है हम इन्शा-अल्लाह उसको धीरे-धीरे हलाल बनाने की कोशिश करेंगे। नीयत तो कर सकते हैं। नीयत कर लें और उसके बाद धीरे-धीरे कोशिश करते रहें।

दूसरी बात यह है कि दावत के काम को हमने काम नहीं बनाया तो यह न समझें कि अब हमारी दुआ क़बूल नहीं होगी। क्यों माँगें दुआ? नहीं! बल्कि हम लोग यह नीयत कर लें कि इन्शा-अल्लाह दावत के काम को हम अपना काम बनाएँगे और उसके बाद हम कोशिश करें ..... और कोशिश के लिए भी हमारे बड़े यह नहीं कहते

कि बस एक दम से कूद पड़ो। धीमे-धीमे होगी कोशिश।

तो बहरहाल! मेरे दोस्तो! नीयत करने के बाद ख़ूब दुआ माँगो और उसके बाद हाथ-पैर मारते रहो, दावत के काम में आगे बढ़ने के लिए भी और खाना व कपड़ा को हलाल बनाने के लिए भी।

बन्दे की मस्लेहत पर नज़र

लेकिन देखो! दुआ की क़बूलियत के अन्दर एक बात ज़ेहन में रखना। ईद का दिन था। हमारे मौजूदा हज़रत जी (हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहिब) दामत बरकातुहुम का बयान था। उसमें यह फ़रमाया कि आख़िरत के बारे में तो बन्दा जो माँगता है, अल्लाह पाक उसे दे देते हैं। लेकिन दुनिया के बारे में बन्दा जो माँगता है उसमें उसकी मस्लेहत को सामने रखते हैं।

दुआ के क़बूल होने की पाँच तरतीबें

अब इसके अन्दर आप हज़रात ज़ेहन में रख लें कि दुनिया के बारे में अगर आप हज़रात दुआ माँगेंगे तो उसकी क़बूलियत के अन्दर पाँच तरतीबें हैं।

पहली तरतीब

एक तरतीब तो अल्लाह पाक की यह है कि जो माँगा अगर वह मस्लेहत के मुनासिब है तो उसे अल्लाह पाक फ़ौरन और जल्दी से दे देते हैं। रात को माँगा और सुबह को मिल गया।

इतना बड़ा मजमा बैठा है, मेरे ख़्याल में आप हज़रात भी बहुत-सी बार देख चुके होंगे कि रात को माँगा और दिन को मिल गया ..... एक तरतीब तो यह है।

दूसरी तरतीब

दूसरी तरतीब यह है कि बन्दे ने माँगा वही जो मस्लेहत के

मुनासिब है लेकिन जल्दी देना मस्लेहत के मुनासिब नहीं है बल्कि देर से देना मुनासिब है। अल्लाह पाक देते तो वही चीज़ हैं जो माँगी है लेकिन रुला-रुलाकर देते हैं, ख़ूब रुलाते हैं, ख़ूब रुलाते हैं, फिर देते हैं। क्योंकि तेरा रोना जो है अल्लाह को बहुत पसन्द है। तो अगर तेरा काम बन गया तो मेरे सामने रोयेगा कौन?

तेरा रात को रोना मुझे बड़ा अच्छा मालूम होता है और जब तू रात को बिलबिलाता है और तिलमिलाता है तो मैं बड़ा ख़ुश होता हूँ।

तो मैं यह कहता हूँ कि हमारे सैकड़ों काम बन जाएँ इससे ज़्यादा अच्छा यह है कि अल्लाह को यह बन्दा पसन्द आ जाए। अल्लाह यह कहते हैं कि यह मेरे को पसन्द है।

तो कई बार अल्लाह पाक दुआ के क़बूल करने में जो चीज़ माँगी वही देते हैं लेकिन देर से देते हैं ..... यह दूसरी तरतीब है।

तीसरी तरतीब

और एक तीसरी तरतीब भी है कि बन्दे ने जो चीज़ माँगी वह उसकी मस्लेहत के मुनासिब नहीं है। तो अल्लाह पाक वह चीज़ नहीं देते बल्कि वह चीज़ देते हैं जो उसकी मस्लेहत के मुनासिब होती है ..... और बन्दे की मस्लेहत के मुनासिब क्या चीज़ है? इसको अल्लाह ख़ूब जानते हैं..... तो जो चीज़ माँगी वह तो नहीं मिली और अल्लाह पाक ने कोई और चीज़ दे दी जो मस्लेहत के मुनासिब है तो यह भी दुआ क़बूल हो गई।

हज़रत मरियम की अम्माँ जान ने माँगा था बेटा, बैतुल-मक़्दिस की ख़िदमत के लिए लेकिन अल्लाह पाक ने दे दी बेटी। अम्माँ जान बहुत परेशान हुईं कि बैतुल्-मक़्दिस की ख़िदमत बेटी क्या करेगी?

لَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى (پاره-٣)

अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि लड़का होता तो वह ऐसा न होता

जैसी यह लड़की है, यह एक नबी की माँ बनेगी और उसके मानने वाले करोड़ों होंगे।

हम मुसलमान भी मानते हैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को..... तो माँगा लड़का और मिली लड़की।

तो कई बार ऐसा होता है कि अल्लाह पाक से जो चीज़ माँगो वह नहीं मिलती। और मिलती है मस्लेहत के मुनासिब कोई दूसरी चीज़..... यह तीसरी तरतीब है।

चौथी तरतीब

और एक चौथी तरतीब भी है। चौथी तरतीब यह है कि जो माँगा वह बिल्कुल नहीं मिला। दुनिया की जो चीज़ माँगी वह बिल्कुल नहीं मिली, लेकिन आसमान से कोई बला और मुसीबत आ रही थी, अल्लाह पाक ने इस दुआ पर उस बला और मुसीबत को रोक दिया।

उस बला का रुकना बहुत अच्छा है, क्योंकि वह अगर मिल जाता और बला भी आ जाती तो जो मिलता वह भी उस बला में ख़त्म हो जाता और जो पहले का था वह भी सारा ख़त्म हो जाता, और आदमी परेशान हो जाता।

यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि बाज़ मर्तबा वह नहीं देते तो माँगा है और दुआ के माँगने पर अल्लाह पाक आने वाली बला को रोक देते हैं।

एक मिसाल

मिसाल के तौर पर आपके तीन लड़के हैं और तीन बहुएँ हैं, और रहने के मकान दो हैं। दुकानें भी दो हैं तो आप चाहते हैं कि मेरे मरने से पहले तीसरे लड़के के लिए मकान और दुकान हो जाए। आप इन्तिज़ाम भी कर रहे हैं और अल्लाह के सामने रो भी रहे हैं लेकिन तीसरी दुकान और तीसरा मकान आपको मिलता नहीं।

हो सकता है कि ऊपर से कोई बला आने वाली हो, अल्लाह पाक ने उसे रोक दिया हो और तीसरा मकान व दुकान न दिया ..... और अगर तीसरी दुकान व मकान अल्लाह पाक दे दें और बला को आने दें और उस बला में तीनों दुकान व मकान हलाक हो जाएँ और तबाह हो जाएँ। तो यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि बला को रोक दिया और तीसरी दुकान व मकान नहीं दिया।

और इसमें कोई घबराने की बात भी नहीं, आदमी थोड़ी तकलीफ़ उठा ले, सारा बरबाद हो जाए उससे तो अच्छा है।

और अब तो अल्लाह पाक ने हम लोगों के लिए इतनी आसानी कर दी। मियाँ-बीवी का एक जोड़ा जमाअ़त के अन्दर चला जाए और जब वह वक़्त पूरा करके आये तो दूसरा जोड़ा चला जाये। तो दो घरों के अन्दर गुज़ारा भी हो जाएगा और दीन की दावत भी पूरे आ़लम में चलेगी। और हिदायत फैलने का सामान भी हो जाएगा।

तो चार तरतीबें बताईं- जो माँगा कभी वह फ़ौरन मिलता हैं, जो माँगा कभी वह देर से मिलता है, जो माँगा वह नहीं मिला मस्लेहत के मुनासिब कुछ और मिला, और जो माँगा वह बिल्कुल नहीं मिला लेकिन आने वाली बला रुक गई।

पाँचवीं तरतीब

और एक पाँचवीं तरतीब भी है कि जो माँगा अल्लाह ने उसे अपने पास सुरक्षित कर दिया और दुनिया में बिल्कुल नहीं मिला। और क़ियामत के दिन अल्लाह पाक ने वह दे दिया तो बहुत बढ़िया बनाकर दिया। और बहुत आला क़िस्म का दिया और बहुत ज़्यादा दिया।

क़ियामत के दिन यह देखकर आदमी तमन्ना करेगा कि जितनी मैंने दुनिया के अन्दर दुआ़एँ माँगी थीं सारी आख़िरत के लिए सुरक्षित हो जातीं तो ज़्यादा अच्छा था। यह तमन्ना करेगा और सोचेगा कि दुनिया में जो दुआ़एँ क़बूल हुईं और मुझे जो मिला वह तो मौत के

वक़्त छूट गया।

तो अल्लाह के यहाँ दुआ के क़बूल होने की ये पाँच तरतीबें हैं।

फ़िरऔन की ग़लत सोच

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! वह फ़िरऔन जो था उसने सोचा कि माँगें यह दुआ, देखूँ इनकी दुआ से होता है क्या? तो जो बिगड़े हुए लोग होते हैं वे यही सोचते हैं कि इतनी-इतनी दुआऐं उनकी हो रही हैं और चल रही हैं लेकिन उनके काम तो बन नहीं रहे। इस सिलसिले में मैंने आप से अर्ज़ किया कि ये पाँच तरतीबें हैं।

जादू वो जो सर चढ़कर बोले

तो फ़िरऔन ने जब कहा:

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ (پاره-۲۴)

कि मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को क़त्ल करूँ और यह बुलाएँ अपने रब को।

यह इतना बड़ा जुर्म था कि अल्लाह तआला फ़ौरन पकड़ करते। लेकिन अल्लाह पाक ने इतने बड़े जुर्म पर फ़ौरन नहीं पकड़ा बल्कि उसकी हिदायत का सामान कर दिया। वह यह कि दरबार के अन्दर से दरबारी खड़ा हो गया और खड़े होकर फ़िरऔन के भरे दरबार में दावत देनी शुरू कर दी। वह दरबारी ईमान ला चुका था। लेकिन मस्लेहत के तौर पर अपने ईमान को छुपा रखा था। लेकिन जब उसने देखा कि फ़िरऔन, मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल के बारे में कह रहा है तौ फ़ौरन खड़ा हो गया।

फ़िरऔन के दरबार में उसके दरबारी की तक़रीर

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ (پاره-۲۴)

ऐसी शख़्स को तुम लोग क़त्ल करने का इरादा कर रहे हो जो यह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह अल्लाह की तरफ़ से दलीलें लेकर आया है।

ख़ूब ज़ोर की तक़रीर की और पिछले वाक़िआत भी सुनाए आगे क़ियामत का दिन आने वाला है वह भी सुनाया। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का ज़माना भी सुनाया। दुनिया का बे-हैसियत होना भी सुनाया। आख़िरत कैसी अ़ज़ीमुश्शान है यह भी सुनाया। ये सारी बातें अच्छी तरह से जमकर सुनाईं।

फ़िरऔ़न भी बैठा हुआ था और उसके सारे दरबारी मिम्बर पार्लियामेंट सारे के सारे बैठे हुए हैं और सब सुन रहे हैं, फ़िरऔ़न भी सुन रहा है। और उसने कहा:

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ وَاُفَوِّضُ اَمْرِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ، اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ (پارہ—۲۴)

याद करो मैं जो बात कहता हूँ। जिस तरह ख़ुदा बहुत-सी क़ौमों को तबाह कर चुका है इसी तरह ख़ुदा तेरे को भी तबाह व बरबाद करेगा और आईन्दा तेरे को जहन्नम में जाना पड़ेगा..... जो कुछ मैं कहता हूँ तेरे को याद आएगा। और मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ और अल्लाह अपने बन्दों को देखता है।

उसने खड़े होकर अल्लाह तआ़ला की ताक़त का ख़ूब बयान किया। ज़बरदस्त तरीक़े पर बयान किया और हम लोगों को भी अल्लाह की क़ुदरत और उसकी ताक़त को जा-जाकर दुनिया भर में बयान करना है।

अल्लाह बड़ी ताक़त वाले हैं।

अल्लाह जो हैं वह बड़ी ताक़त वाले हैं। बड़ी क़ुदरत वाले हैं। अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में सारी दुनिया की ताक़तें जो हैं ये

मकड़ी के जाले हैं, उनकी कोई हैसियत नहीं। जैसे मकड़ी के जाले की कोई हैसियत नहीं रहती इसी तरह इन सारी ताक़तों की कोई हैसियत नहीं।

फ़िरऔन, हामान और क़ारून की ताक़त मकड़ी के जाले की तरह तबाह व बरबाद हो गई। और आईन्दा चलकर दज्जाल और याजूज-माजूज की ताक़तें मकड़ी के जाले की तरह तबाह व बरबाद हो जाएँगी।

मकड़ी जाला कब तानती है?

लेकिन मकड़ी जाला कब तानती है? जब घर वीरान हो चुका हो। मकड़ी आबाद घर में जाला नहीं तानती..... इसी तरह आज जितने मकड़े और मकड़ियाँ जाला तान रहे हैं। यह उस वक़्त जाला तानते हैं जब दुनिया दीन की दावत से वीरान हो जाए। तालीम के हल्क़ों से वीरान हो जाए। अल्लाह के ज़िक्र से वीरान हो जाए। और उम्दा व ऊँचे अख़्लाक़ से वीरान हो जाए।

न काला न गोरा, बुनियाद बस ईमान है

ईमान वालों का आपस में मिलना और जुड़ना और क़ौमी व ख़ानदानी चीज़ों का न उठाना..... चाहे क़ौम का हो या न हो, ख़ानदान का हो या न हो, रंग का हो या न हो, लेकिन ईमान वाला है तो आपस में एक-दूसरे का इक्राम (अदब व सम्मान) करके ऐकता और संगठन को पैदा करे, जितनी ऐकता और संगठन पैदा करेंगे अल्लाह की मदद साथ होगी।

وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (پارہ-۱۰)

इख़्तिलाफ़ से बचो

आपस के अन्दर खींचातानी मत करो। अगर आपस में खींचातानी

और झगड़ा करोगे तो दो नुक़सान होंगे:

एक तो कम हिम्मत हो जाओगे, और दूसरों के अन्दर से तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। ये दो बातें अल्लाह पाक ने बयान फ़रमाईं।

अपनी घरेलू तरतीब के अन्दर भी आपस में खींचातानी और तकरार मत करो। अपनी क़ौम के अन्दर अपने ख़ानदान के अन्दर और जौनसा दीनी काम कर रहे हो उसके अन्दर।

ये दीन का काम करने वाले भी आपस में तकरार और खींचातानी न करें। यह कोई न कहे कि यह तो यूँ कर रहा है, वह तो यूँ कर रहा है। हर एक दूसरे को क़ुसूरवार क़रार देकर यह उसके ख़िलाफ़ लिख रहा है, वह इसके ख़िलाफ़ लिख रहा है। नहीं:

وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (پاره– ۱۰)

आपस में खींचातानी और तकरार मत करो वरना तुम कम-हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।

तो दुनिया जब अख़्लाक़ से वीरान हो जाती है, इख़्लास से वीरान हो जाती है, दीन की दावत से वीरान हो जाती है तो फिर उसके अन्दर मकड़े और मकड़ियाँ जाले तानते हैं।

मकड़ी का फ़ख़्र और उसका हश्र

जैसे वीरान घर के अन्दर मकड़ी ने जाला तान दिया और कबूतरी ने घौंसला बना दिया और घौंसले के अन्दर अण्डे भी दिए। अब इस जाले के ऊपर घौंसले के तिनके गिर रहे हैं और अण्डे के छिलके गिर रहे हैं..... अब मकड़ी फ़ख़्र (गर्व) में आ गई कि तिनके पर तिनके और छिलके पर छिलके मेरे जाले पर गिरे लेकिन मेरा जाला नहीं टूटा। और फिर यह मकड़ी जो जाती है तो छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े उसे मिल गए। उन्हें वह खा गई। अच्छी मोटी-ताज़ी हो गई और बड़ा फ़ख़्र और घमंड उसमें आ गया। फिर मकड़ी अपने

प्रोग्राम बनाने लगी, कभी इधर से उधर जा रही है, कभी उधर से इधर आ रही है।

अब जब मकड़ों ने देखा कि मकड़ी ख़ूब कूद-फाँद रही है तो उन्होंने भी अपने जाले तान दिए। तो पूरा घर मकड़ी और मकड़ों के जालों से भर गया।

दुनिया भर की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं

ख़ुदा-ए-पाक की क़सम! दुनिया भर की ताक़तें ये मकड़ी के जाले हैं। अल्लाह की ताक़त के मुक़ाबले में इनकी कोई हैसियत नहीं है।

अगर दुनिया को दीन से आबाद किया जाए। दुनिया को इनसानियत से आबाद किया जाए और दुनिया को नेक आमाल से आबाद किया जाए तो इन मकड़ियों के जालों को अल्लाह पाक साफ़ कर देगा। अल्लाह तआला की ताक़त के मुक़ाबले में उनकी कोई हैसियत नहीं है।

और यह बात मैं नहीं कहता हूँ मेरा अल्लाह कहता है:

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا، وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ، لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ○ (پارہ—۲۰)

यह अल्लाह पाक कहते हैं कि ये सारी की सारी ताक़तें मकड़ी के जाले हैं। मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब कोई घर को आबाद करना चाहता है तो सब से पहले जाले साफ़ करता है और जालों को साफ़ करने में देर नहीं लगती। झाड़ू ली और चारों तरफ़ फेर दी, तो मकड़ी भी ख़त्म और जाला भी ख़त्म। देर नहीं लगती।

अ़ज़ाब की एक झाड़ू से फ़िरऔ़न के मुल्क का जाला साफ़ हो गया

जिस तरीक़े से फ़िरऔ़न इसके बावजूद कि अल्लाह ने उसकी

हिदायत का इतना सामान किया लेकिन फिर भी वह हिदायत के ऊपर नहीं आया और अपनी हठधर्मी के ऊपर रहा।

तो फिर अल्लाह पाक ने जब इरादा किया मिस्र को दीन से आबाद करने का और देखा कि यह हठधर्मी करने वाला मान कर नहीं देता तो अब इस ज़हरीले फोड़े का ऑप्रेशन करना है और इस ज़हरीले फोड़े को उखाड़ कर फेंक देना है। यह अल्लाह पाक ने जब तय किया तो अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की एक झाड़ू आयी और फ़िरऔ़न के मुल्क का जाला साफ़ हो गया।

विज़ारत और दौलत का जाला ख़त्म

और अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की दूसरी झाड़ू आयी तो हामान की विज़ारत (मंत्री पद) का जाला साफ़ हो गया। और अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की तीसरी झाड़ू आयी तो क़ारून के धन दौलत का जाला साफ़ हो गया। इन सारे जालों को साफ़ करके अल्लाह पाक ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इस्राईल के लिए मिस्र के अन्दर दीन के चालू करने की एक फ़िज़ा बना दी।

अल्लाह की पकड़ बहुत सख़्त है

आज भी अल्लाह पाक इसी ताक़त के साथ हैं। हम सारी दुनिया से कहते हैं कि अल्लाह की ताक़त को मानो। अगर अल्लाह की ताक़त को नहीं मानोगे और अल्लाह की ताक़त को नहीं तस्लीम करोगे तो जब तक अल्लाह पाक तुम्हें ढील देगा उस वक़्त तक तुम्हें पता नहीं चलेगा। लेकिन जिस वक़्त अल्लाह की पकड़ आएगी तो ऐ दुनिया के सारे धन दौलत वालो! अल्लाह की पकड़ से किसी की कोई ताक़त बचा नहीं सकती।

इसलिए मैं कहता हूँ कि सारी दुनिया के अन्दर जमाअ़तों में फिरो। और फिर-फिरकर जमकर अल्लाह की ताक़त बयान करो।

हम कमज़ोर हैं

हम उस अल्लाह के मानने वाले हैं जो बड़ी ताक़त वाला है। हम लोगों से अपनी ताक़त नहीं मनवाते। हमारी कोई ताक़त नहीं।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (پارہ– ۵)

इनसान को बहुत कमज़ोर पैदा किया गया है। अपनी तो कमज़ोरी का एतिराफ़ करना है।

ख़ुदा के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं

ताक़त वाला तो अल्लाह है। वह इतनी बड़ी ताक़त वाला है कि एक हुक्म दे दिया, और देखो कैसा आसमान व ज़मीन बना दिया। इतनी बड़ी ताक़त वाला अल्लाह है कि रोज़ाना तक़रीबन तीन लाख से ज़्यादा बच्चे पैदा होते हैं और हर बच्चे को दो-दो आँख देता है, रोज़ाना छह लाख आँखें सपलाई करता है लेकिन उसके ख़ज़ाने के अन्दर कोई कमी नहीं आती। हर इनसान की सूरत अलग बनाता है, आवाज़ अलग बनाता है, मिज़ाज अलग बनाता है, जज़्बा और भावना अलग बनाता है, लेकिन उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आती।

तो उस अल्लाह की ताक़त को और अल्लाह के ख़ज़ानों को जमकर बयान करना है, पूरे आलम में, ख़ुसूसी गश्तों में और उमूमी गश्तों में बयान करना है। लेकिन तरतीब के साथ। बे-तरतीबी के साथ नहीं। अगर बे-तरतीबी के साथ बयान करोगे तो लोग अल्लाह पाक का मज़ाक़ उड़ाएँगे और हम मज़ाक़ उड़वाने वाले बनेंगे। हमें अल्लाह पाक का मज़ाक़ नहीं उड़ावाना। जमकर दावत देनी है और उसे सीखना है और उसके लिए जमाअ़तों में फिरना है। और उसके लिए मक़ामी काम करना है, और जमकर यह बात कहनी है कि अल्लाह की ताक़त को मानो।

قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝ (پارہ–۲۹)

अल्लाह की बड़ाई बयान करो

खड़े हो जाओ और अल्लाह से डराओ और अल्लाह की बड़ाई को बयान करो। अज़ान के अन्दर भी अल्लाह की बड़ाई, तकबीर के अन्दर भी अल्लाह की बड़ाई, नमाज़ के अन्दर बार-बार अल्लाहु अकबर। जनाज़े की नमाज़ पढ़े तो अल्लाहु अकबर चार बार, बच्चा पैदा हो तो दाएँ कान में अज़ान और बाएँ कान में तकबीर पैदा होते ही कान के अन्दर अल्लाह की बड़ाई पड़ गई। जानवर ज़िबह करे तो "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर"। ईद का दिन आए तोः

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

अल्लाहु अकबरु अल्लाहु अकबरु ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु, अल्लाहु अकबरु व लिल्लाहिल् हम्दु।

तो ईद के दिन भी अल्लाहु अकबर, जनाज़े की नमाज़ हो तो अल्लाहु अकबर, बच्चा पैदा हो तो अल्लाहु अकबर।

फ़ज्र की नमाज़ से अल्लाहु अकबर की आवाज़ चलती है। रात को सोते वक़्त तस्बीहे-फ़ातिमी पढ़ते हैं तो उसमें भी **सुब्हानल्लाहि** 33 बार फिर **अल्हम्दु लिल्लाहि** 33 बार फिर **अल्लाहु अकबर** 34 बार, नमाज़ के बाद भी यह तस्बीह पढ़ी जाती है।

पूरी दुनिया में अल्लाहु अकबर की आवाज़

फ़ीजी से अल्लाहु अकबर की आवाज़ चलती है और चारों तरफ़ अल्लाहु अकबर की फ़िज़ा बन जाती है। उसके बाद फिर फ़िजी के बाद वाले जो देश हैं, आस्ट्रेलिया के अन्दर यह आवाज़, फिर न्यूज़ीलैण्ड के अन्दर यह आवाज़, फिर आस्ट्रेलिया के बाद चलो फ़िल्पाइन है, जापान है, कोरिया है। वहाँ पर ये आवाज़ें लगनी शुरू हो गईं। उसके बाद फिर आगे चलो मलैशिया है, इण्डोनेशिया है, थाईलैण्ड है, बंगलादेश है, सीलोन है, बरमा है, वहाँ पर अल्लाहु अकबर की

आवाज़। सारी दुनिया में अल्लाहु अकबर की आवाज़ लग रही है..... ख़ुश क़िस्मत हैं वे लोग जो आगे बढ़ें और अल्लाह की बड़ाई बयान करें। मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह की बड़ाई तस्लीम करने वालों और अल्लाह की बड़ाई बयान करने वालों के साथ ही अल्लाह की मदद है।

बेईमानों के मुतालबात

और यह जो बेईमान लोग हैं, इन्होंने हर ज़माने के अन्दर दूसरे अम्बिया से भी यह बात कही और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी यह बात कही गई:

قَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ٥ (پارہ–۲۳)

क़ियामत का कौन इन्तिज़ार करे। हमारे लिए तो क़ियामत वाला अज़ाब आज ही उतार दो।

यह उन बेईमानों ने कहा, लेकिन अज़ाब नहीं आया। क्यों नहीं आया? इसलिए कि अल्लाह पाक फ़ौरन नहीं पकड़ करते बल्कि हिदायत का सामान और हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं।

फिर उन्होंने कहा:

اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٥ (پارہ–۹)

अगर यह क़ुरआन तेरा कलाम और तेरी किताब है तो आसमान से हमारे ऊपर पत्थर बरसा दे और हमें बरबाद कर दे।

लेकिन अल्लाह का अज़ाब फिर भी नहीं आया।

तो फिर उन्होंने उछलना-कूदना शुरू किया कि देखो ना! कुछ भी नहीं हो रहा है। फिर क़ुरआन की सूरतें और आयतें उतरीं और पिछले नबियों के क़िस्से सुनाए कि पिछले नबियों के ज़माने में भी लोगों ने ऐसे ही कहा था। देखो अल्लाह पाक ने आख़िर में जाकर उनको कैसा ग़ारत किया। और अल्लाह पाक की बड़ाई तस्लीम करने

वालों की और नबियों की बात मानने वालों की अल्लाह तआ़ला ने कैसी मदद की।

और बेईमान लोग यही कहते रहे कि ये तो पुरानी कहानियाँ हैं। आज करके बताओ।

अल्लाह की मदद आ गई

फिर उसके बाद **बदर** का क़िस्सा हुआ। और अल्लाह पाक ने करके बता दिया। अब उनके होश खट्टे हो गए। अब लोग समझे कि वाक़ई ये जो अल्लाहु अकबर कहने वाले हैं इनके साथ अल्लाह पाक की मदद आ गई। अब उनसे ज़्यादा छेड़ख़ानी नहीं करनी।

आज भी जब यह बात कही जाती है कि सारी दुनिया के आदमी कहते हैं कि अरे बदर का क़िस्सा सुनाया, नबियों का क़िस्सा सुनाया, हज़रत उमर फ़ारूक़ का क़िस्सा सुनाया, अरे आज करके बताओ।

करने वाली ज़ात अल्लाह की है

तो भाई करने वाले हम तो हैं नहीं, करने वाली तो अल्लाह की ज़ात है। वह मस्लेहतों को जानती है कि कितने मुजाहदे के बाद दीन के काम करने वालों की मदद करनी चाहिए। और कितने बिगाड़ के बाद मुजरिमों की पकड़ करनी चाहिए।

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से मुतालबा

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से भी उन बेईमानों और मुजरिमों ने कहा:

فَاسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِيْنَ ○ (پاره–۹)

अगर तुम सच्चे नबी हो तो आसमान के टुकड़े हमारे ऊपर गिराकर हमें तबाह कर दो।

तो हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने इसका जवाब दिया:

قَالَ رَبِّیْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ٥ (پارہ–۱۹)

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने यूँ कहा कि जो तुम्हारे करतूत हैं उसको अल्लाह जानता है।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! कितने जुर्म पर किसको पकड़ना और कितने मुजाहदे पर किसकी मदद करना है यह अल्लाह की मस्लेहतों और हिक्मतों के साथ है। इसमें हमें दख़ल नहीं देना।

लेकिन देखो! एक बात ज़ेहन में रहे कि कहीं दो-चार बार अल्लाह की मदद आ गई तो ख़ुदा न करे दीन का काम करने वालों में फ़ख़्र (गर्व और घमंड) न आ जाए। अपनी कमज़ोरियों का एहसास रहे कि हम बिल्कुल कमज़ोर हैं।

इनसान इतना कमज़ोर, इतना कमज़ोर है कि जिसकी कमज़ोरी की कोई हद नहीं, और अल्लाह पाक इतनी बड़ी ताक़त वाला है कि जिसको आप सुन रहे हैं।

हमारी चुनौती

इनसान इतना कमज़ोर है कि अगर लाखों आदमी मिलकर सैकड़ों साल तक मेहनत करें तो सारे मुल्क व माल वाले और सारे वैज्ञानिक (साईंसदान) मिलकर मछली की एक आँख नहीं बना सकते, मच्छर की एक टाँग नहीं बना सकते, मक्खी का एक पर नहीं बना सकते। चुनौती है पूरी दुनिया को..... नहीं बना सकते।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (پارہ–۵)

पैदा किया गया है इनसान को कमज़ोर।

अपनी कमज़ोरी को मानो और अल्लाह की ताक़त को मानो। तो फिर अल्लाह की ताक़त तेरी हिमायत में आ जाएगी तो दुनिया भर में तेरे बेड़े पार होंगे। और आख़िरत में भी तेरे बेड़े पार होंगे।

यह जो इतना चीख़-चीख़कर हम अल्लाह की बड़ाई को बयान करते हैं। यह हम अपनी ताक़त नहीं बतला रहे हैं। हमारी कोई ताक़त

नहीं। हम तो इतने कमज़ोर हैं कि हम को मारने के लिए पिस्तौल और तलवार की भी ज़रूरत नहीं। एक आदमी आकर हमें एक घूँसा मार दे और हमारी मौत का वक़्त आ चुका है तो हम उसी वक़्त मर जाएँगे। हम तो इतने कमज़ोर हैं। हम अपनी ताक़त को नहीं मनवा रहे हैं। हमारी कोई ताक़त नहीं।

अल्लाह सब का है

लेकिन ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला जो अल्लाह है वह अल्लाह मुसलमानों का भी है और ग़ैर-मुस्लिमों का भी है। हम उस अल्लाह की ताक़त को मनवा रहे हैं।

ख़ुदा की ताक़त को मानोगे तो बेड़े पार होंगे। यह आवाज़ पूरी दुनिया के अन्दर लगानी है। खेतों में भी लगानी है। मकानों में भी लगानी है। दुकानों में भी लगानी है। दावत के ज़रिये अल्लाह की बड़ाई की आवाज़ को हर जगह लगाना है।

और तुम्हारे ज़ेहन में कहीं आए कि इस मजमे के सामने तुम चीख़ रहे हो यह आवाज़ तो लगानी चाहिए जो बड़े बड़े मुल्कों को चलाने वाले हैं उनको जाकर कहना चाहिए। इस मजमे के सामने कहने से क्या फ़ायदा?

नहीं! बल्कि हमारे सामने तो जितना हमारा बस होगा उतना हम अल्लाह की बड़ाई की आवाज़ लगाएँगे। गश्तों के अन्दर, ख़ुसूसी गश्तों के अन्दर, जितना आवाज़ लगाना बस में है उतनी आवाज़ लगाई जाएगी। और जहाँ हमारे बस से बाहर है वहाँ तक आवाज़ का पहुँचाना यह अल्लाह का काम है।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की चींवटी का गश्त और बेक़रारी

देख लो! सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की चींवटी को। जब हज़रत

सुलैमान अ़लैहिस्सलाम लश्कर लेकर चले तो वह चींवटी बड़ी परेशान हो गई। उसने देखा कि लश्कर आ रहा है और तुम सारी रौंदी जाओगी। तो तुम अपने बिलों के अन्दर घुस जाओ। यह चींवटी बेक़रार हो गई और उसने गश्त शुरू कर दिया और चींवटियों से यह कह दिया कि तुम बिलों के अन्दर घुस जाओ।

قَالَتْ نَمْلَةٌ يَّآ اَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُوْدُهٗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ٥ (پاره– ١٩)

उसने यूँ कहा कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लश्कर को पता नहीं चलेगा और तुम सारी रौंदी जाओगी। इसलिए अपने बिलों के अन्दर जल्दी से घुस जाओ।

मेरे मोहतरम दोस्तो! उसके बस में नहीं था कि इतने बड़े हाकिम और इतने बड़े नबी तक अपनी बात पहुँचाए तो जितना उसके बस में था उसने किया, हालाँकि वह चींवटी ग़ैर-मुकल्लफ़ (शरीअ़त के अहकाम की पाबन्द नहीं) है, और आप हज़रात का बिस्तरे लेकर चारों तरफ़ घूमना-फिरना और आवाज़ें लगाना हम और आप इसके मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार और पाबन्द) हैं।

जब ग़ैर-मुकल्लफ़ चींवटी ने आवाज़ लगाई तो अल्लाह पाक ने यह आवाज़ सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचा दी और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम वहीं पर मुस्कुरा दिए।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا (پاره– ١٩)

हंसने लगे सुलैमान अ़लैहिस्सलाम कि देखो चींवटियों के बचाने का कैसा इन्तिज़ाम कर रही है।

और यह आवाज़ सिर्फ़ सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तक नहीं पहुँची बल्कि चींवटी की यह बात सारे मजमे तक पहुँच गई।

हालाँकि चींवटी अगर हमारी रान पर हो तो हम पहचान नहीं सकते और बात तो पहुँचना दर किनार। लेकिन हज़ारों साल के पहले

चींवटी की आवाज़ लगी और हज़ारों साल के बाद रमज़ान शरीफ़ के महीने में और भी दूसरे वक़्तो में सूरः नम्ल पढ़ी जाती है और करोड़ों मुसलमान इस बात को सुनते हैं।

कुल मुख़्तार अल्लाह है

तो अल्लाह ऐसा क़ादिरे मुतलक़ (कुल मुख़्तार) है कि ग़ैर-मुकल्लफ़ चींवटी की आवाज़ को जो दर्दभरी आवाज़ थी उसको हज़ारों साल के बाद लाखों और करोड़ों इनसानों तक पहुँचा दिया।

तो हम और तुम बिस्तर उठाए-उठाए सारी दुनिया के अन्दर फैलकर अल्लाह की बड़ाई को बताएँ हमारा वह अल्लाह क़ादिर है कि जहाँ तक हमारी आवाज़ नहीं पहुँचती वहाँ तक वह हमारी आवाज़ को पहुँचा दे। आवाज़ का लगाना हमारा काम है और आवाज़ का पहुँचाना अल्लाह का काम है।

देर है अन्धेर नहीं

हर ज़माने में यह बात होती है कि तुम्हारा इतना बड़ा अल्लाह तुम्हारी मदद क्यों नहीं करता?

लेकिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पर मदद आई साढ़े नौ सौ साल के बाद, और दूसरे नबियों पर भी मदद आई एक मुद्दत के बाद।

अल्लाह पाक ख़ूब मुजाहदे (मेहनत और तपस्या) कराकर और ख़ूब आज़माईशों में डालकर रूहानियत के अन्दर ज़बरदस्त ताक़त पैदा करता है। और उसके बाद हैरत-अंगेज़ (आश्चर्यजनक) मददें लाता है।

हर नबी को उन बिगड़े हुए और भटके हुए लोगों ने जिनको अपनी ताक़त पर घमण्ड था, और जिनको अपने धन दौलत पर घमण्ड था और जिन्हें अपने मजमे के बड़ा होने पर घमण्ड था, हर ज़माने के अन्दर नबियों से उन बिगड़े हुए और भटके हुए लोगों ने यह कह दिया कि तुम हमारी बस्ती से निकल जाओ नहीं तो हम तुमको ख़त्म कर देंगे। या तो हमारे जैसे बनकर रहो, और अगर

हमारे जैसे बनकर नहीं रहते तो हमारी बस्ती और हमारे शहर से निकल जाओ।

अल्लाह का वायदा

लेकिन ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला ख़ुदा इसका जवाब देता है कि अगर तुम सुधार का काम करने वालों को निकालने की फ़िक्र करते हो तो हम तुमको दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर देंगे। और सुधरे हुए लोगों को हम यहाँ पर बसाएँगे। यह अल्लाह पाक ने क़ुरआन पाक में हमें बताया।

हर नबी जब दावत का काम लेकर उठा तो भटके हुए लोगों ने उसको ख़ूब सताया और ख़ूब बुरा-भला कहाः

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَا اَوْلَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا

(پارہ–۱۳)

नबियों से उस ज़माने के बिगड़े हुए लोगों ने और अपनी मर्ज़ी पर चलने वाले लोगों ने कहाः

"या तो हमारे जैसे बन जाओ, और अगर हमारे जैसे नहीं बनते तो हम तुमको इस बस्ती से निकाल देंगे।"

यह उन्होंने कहा, क्योंकि उनको अपनी ताक़त पर घमण्ड था। लेकिन ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला ख़ुदा, चाँद और सूरज का पैदा करने वाला ख़ुदा और जन्नत व जहन्नम का पैदा करने वाला ख़ुदा, समुद्रों को पैदा करने वाला ख़ुदा, आसमान से पका-पकाया खाना उतारने वाला ख़ुदा, समुद्र में बारह रास्ते बनाने वाला ख़ुदा, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जेलख़ाने से निकालकर मिस्र के ख़ज़ाने को उनके क़दमों में डालने वाला ख़ुदा और क़ादिरे मुतलक़ उस अल्लाह ने क्या ख़बर दीः

فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ (پارہ–۱۳)

अल्लाह पाक ने आसमानी वह्य (पैग़ाम) भेजी कि जो तुमको अपनी बस्ती और अपने शहर से निकालने के लिए कह रहे हैं हम उनको दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर देंगे:

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ، (پاره-١٣)

और ज़मीन पर उनके बाद हम तुमको बसाएँगे।

तो जो यह मक्का के बेईमान लोग थे, उनके साथ भी अल्लाह पाक ने यही मामला किया।

उन लोगों ने आपस में प्रोग्राम बनाया कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को या तो क़त्ल कर दें या उनको कहीं पर घेरकर रख लें, या उनको बाहर कर दें।

कुआँ खोदने वाले के सामने कुआँ होता है

लेकिन अल्लाह पाक ने बता दिया कि बदर के अन्दर वही क़त्ल हुए जो क़त्ल करने की फ़िक्र करते थे और वही क़ैद हुए जो क़ैद करने की फ़िक्र करते थे। और उन्होंने ही अपने वतन को छोड़ा जो आपको वतन से निकालने वाले थे।

उन बेईमानों ने तीन बातें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सोची थीं और वे तीनों बातें उनके साथ हो गईं। और अल्लाह पाक ने ईमान वालों से कहा:

وَاذْكُرُوْآ اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○ (پاره-٩)

नवाज़िश और करम का ज़िक्र

अल्लाह पाक कहता है ऐ ईमान वालो! याद करो उस दिन को जब तुम थोड़े-से थे और ज़मीन के अन्दर मक्के वाले तुम्हें बहुत कमज़ोर समझ रहे थे और तुमको डर था कि लोग हमे उचक लेंगे

और लोग हमें नामालूम क्या कर डालेंगे। तो अल्लाह पाक ने मदीना मुनव्वरा में तुम्हें ठिकाना दिया और अल्लाह पाक ने ग़ैबी मदद तुम्हारे साथ की और अल्लाह पाक ने पाक रोज़ी तुमको दी। ताकि तुम अल्लाह पाक का शुक्र करो।

तो मेरे दोस्तो! दूसरे ज़माने के क़िस्से रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुनाए तो उन बेईमानो ने कहा:

"ये तो कहानियाँ हैं"

लेकिन अल्लाह पाक ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में वह काम करके बता दिया तब उनके हौसले टूटे और उनके होश खट्टे हुए।

हम कहते हैं कि आज भी हमारा अल्लाह उसी ताक़त के साथ है और यह अल्लाह सिर्फ़ हमारा नहीं है बल्कि यह पूरी इनसानियत का अल्लाह है।

सब बे-हक़ीक़त

अल्लाह की ताक़त के मुक़ाबले में राकेट और ऊँट दोनों बराबर हैं। और अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में डंडा, तलवार और ऐटम बम यह सब बराबर हैं। ख़ुदा उसी मुकम्मल क़ुदरत के साथ है।

पूरी दुनिया को दावत

हम सारी दुनिया को डंके की चोट पर दावत देते हैं कि ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले ख़ुदा की ताक़त को तस्लीम करो तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर नहीं करोगे तो जब तक ढील देगा पता नहीं चलेगा और जिस दिन अल्लाह पाक की पकड़ आएगी उस दिन अल्लाह की पकड़ से कोई नहीं बचा सकेगा।

हमने यह सारे नबियों के क़िस्से सुनाए और नबियों को उनकी बस्ती वालों ने जो कुछ कहा अल्लाह पाक ने वह्य (अपना पैग़ाम) भेजी और उन बेईमानों को दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर दिया।

ईमान वालों को अल्लाह पाक ने बसाया और यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी कर दिया, और आज के बारे में बता दूँ।

आख़िरत का ख़ौफ़ आबादी और ख़ुशहाली का सबब

हमारा अल्लाह यह कहता है कि जैसे मैंने उनको बसाया और आबाद किया और भटके हुए लोगों को बरबाद किया अगर क़ियामत तक किसी को आबाद होना है तो अल्लाह के सामने खड़े होने का डर पैदा हो जाए और अल्लाह तआ़ला की वईदों (सज़ा की धमकियों, डाँटों) का और धमकियों का डर पैदा हो जाए। अगर अल्लाह पाक का डर पैदा हो गया। अल्लाह के सामने क़ियामत के दिन खड़े होने का डर और अल्लाह पाक ने जो वईदें बताई हैं अगर इसका डर पैदा हो जाए तो हम उन सारे बस्ती वालों को आबाद रखेंगे, बरबाद नहीं करेंगे। ख़ुद अल्लाह पाक कहते हैं:

ذٰلِکَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَخَافَ وَعِیْدِ ۝ (۱۳)

तो देखो पूरी दुनिया के अन्दर आख़िरत के ख़ूब चर्चे किए जाएँ। हर जगह आख़िरत के चर्चे किए जाएँ। अपने बीवी बच्चों के सामने भी, अपने ग्राहकों के सामने भी और जहाँ भी जाओ वहाँ पर आख़िरत के ख़ूब चर्चे करो। पूरे आ़लम के अन्दर आख़िरत के चर्चे करो।

तो अगर आख़िरत के चर्चे ख़ूब किए और दुनिया के बसने वाले इनसान क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने खड़े होने से डर गए और क़ियामत के दिन की ख़ुदा की धमकियों से डर गए तो अल्लाह पाक उनको बरबाद नहीं करेगा। बल्कि आबाद रखेगा।

सब के बेड़े पार हों

हम पूरी दुनिया की आबादी चाहते हैं। हम दुनिया की बरबादी

नहीं चाहते। हम लोगों को बरबाद कराना नहीं चाहते, हम पूरी दुनिया के इनसानों के बेड़े डूबोना नहीं चाहते। हम उन सब इनसानों के बेड़े पार कराना चाहते हैं।

अगर अल्लाह पाक की ताक़त को मान लें तो अल्लाह पाक सब के बेड़े पार कर देगा।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का अपनी क़ौम को डराना

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ (پاره – ٢٩)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह ने कहा कि अपनी क़ौम को डराओ।

जैसे पिस्तौल लेकर बन्दूक़ लेकर और उसके अन्दर गोली डालकर आदमी बन्दूक़ की नाली यूँ सीधी कर दे। वह सिर्फ़ डरा रहा है देख ठीक हो जा। देख पिस्तौल। तो इस तरह तुम डराओ। लेकिन गोली मत मार देना। तो इसी तरह अल्लाह के अ़ज़ाब को माँगना नहीं है। सारी दुनिया को अ़ज़ाब से डराना है। लेकिन साथ में अल्लाह ने यह भी कह दिया:

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ o (پاره – ٢٩)

अल्लाह पाक का अ़ज़ाब आए इससे पहले-पहले डराओ।

लेकिन जब अल्लाह पाक का अ़ज़ाब आ जाएगा तो फिर किसी के हटाने से नहीं हटेगा।

तो अल्लाह पाक नाराज़ होकर पूरी दुनिया पर अ़ज़ाब लायें इसके पहले पूरी दुनिया में चलकर अल्लाह के बन्दों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया जाए।

ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ o

हमें अपनी ज़िन्दगी के आमाल को भी ठीक करना है, ईमान के अन्दर ताक़त पैदा करनी है, आमाल के अन्दर ताक़त पैदा करनी है,

रमज़ान के महीने के अन्दर रोज़ा रखना है, रमज़ान के महीने में सवाब भी बहुत बढ़ जाता है।

ज़कात न देने का वबाल

और जिन लोगों पर ज़कात फ़र्ज़ है उन्हें ज़कात देनी चाहिए इसलिए कि अगर वे ज़कात नहीं देते तो यह माल जो है उसके पतरे बनाकर माल वाले को क़ियामत के दिन दाग़ा जाएगा। और वह माल जो है वह अज़्दहा बनाकर उसकी गर्दन के अन्दर डाला जाएगा। और वह उसे डसेगा।

और यह ज़कात का माल बग़ैर ज़कात के माल में मिल जाए तो यह दूसरे माल के ऊपर भी वबाल लाता है। भाई! जब साल पूरा हो जाए तो आदमी ज़कात के माल को बाहर निकाल दे, रोलिंग में न ले, अगर रोलिंग में लिया तो ख़तरा है, डर है कि कहीं दूसरे माल के ऊपर भी वबाल न आ जाए। अगर एक दम से देने का तेरे लिए मौक़ा नहीं है और हक़दार नहीं मिलते तो भी उसे अलग कर दे।

आमाल के असरात

इसलिए कि जैसे दुनिया की चीज़ों में असरात होते हैं उसी तरह इनसान के आमाल के अन्दर भी असरात हैं। अगर इनसान अच्छे अ़मल करता है तो जन्नत की नेमतें तैयार होती हैं। और अगर इनसान बुरे अ़मल करता है तो जहन्नम का अ़ज़ाब और जहन्नम के अंगारे और हथकड़ियाँ तैयार होती हैं। जैसे अगर सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह पढ़े तो जन्नत के अन्दर पेड़ तैयार होते हैं। और अगर ज़कात न दे तो वहाँ पर साँप तैयार होता है। हर भले और बुरे अ़मल की एक शक्ल बनती है।

चीज़ों के सही और ग़लत इस्तेमाल के परिणाम

जैसे मैं एक महसूस की जाने वाली मिसाल दूँ:-

दिया सलाई है दिया सलाई। अब उसको किसी आदमी ने यूँ रगड़ा और रगड़कर उसको लकड़ी के ऊपर लगा दिया और लकड़ी जल गई। और उस लकड़ी से दूसरी लकड़ी जलाई तो पाँच हज़ार देगें बिरयानी क़ोरमे और पुलाव की तैयार हो गईं। एक दिया सलाई का यह सही इस्तेमाल है।

और अगर उसी दिया सलाई को रगड़कर पैट्रोल की टंकी में डाल दिया तो वहाँ फ़ौरन आग के शोले भड़कने लगेंगे। फिर उसके अन्दर एक लकड़ी लगाकर बीस हज़ार दुकानें जो राशन की थीं उसके अन्दर डाल दिया तो उनके अन्दर आग भड़क गयी, फिर एक लकड़ी लगाकर रूई के गोदाम में डाल दिया तो रूई के गोदाम जलकर ख़त्म हो गये।

तो एक दिया सलाई का ग़लत इस्तेमाल आग के शोलों को लाता है और एक दिया सलाई का सही इस्तेमाल पुलाव और ज़र्दे की देगें पकवाता है।

इसी तरह सवा पाँच (5¼) फ़िट के इनसान का बदन, इसका अगर सही इस्तेमाल हुआ। नमाज़ों के अन्दर, तालीम के हल्क़ों के अन्दर, अल्लाह के ज़िक्र के अन्दर, क़ुरआन पाक की तिलावत के अन्दर, और दूसरों के साथ अच्छे अख़्लाक़ के बरतने के अन्दर।

ग़ैर-मुस्लिमों के साथ भी अच्छे अख़्लाक़ बरतने की तालीम

मुसलमानों के साथ भी अख़्लाक़ बरतना। ग़ैर-मुस्लिमों के साथ भी अख़्लाक़ बरतना। आप अपने घर के ऊपर बैठे हुए हों और किसी बुढ़िया के चीख़ने और कराहने की आवाज़ आई, आपने अपनी बीवी को फ़ौरन भेजा और पाँच सौ रुपये देकर भेजा, देखा तो वह एक ग़ैर-मुस्लिम बूढ़ी औरत थी। और उसको पाँच सौ रुपये दे दिये।

यह हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखाया है

कि ग़ैर-मुस्लिम भी परेशान हाल हो तो उसकी भी परेशानी दूर करने की कोशिश की जाए। इसके अन्दर मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का मामला न रहे।

ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं

अगर किसी मुसलमान ने किसी ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबा ली तो ऐसे मौक़े पर हम मुसलमानों को उस ग़ैर-मुस्लिम की हिमायत करनी होगी और मुसलमान को समझाना होगा कि भाई यह ज़मीन वापस कर दे वरना सातों ज़मीनों में से यह ज़मीन निकाल कर तेरे गले के अन्दर तौक़ बनाकर पहनाया जाएगा। इसको वापस कर दे।

हम इसको मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का मसला नहीं बनाएँगे। यहाँ पर तो ग़ैर-मुस्लिम मज़लूम है और मुसलमान ज़ालिम है। अगर मुसलमान ज़ालिम हो तो उसके साथ हमदर्दी यह है कि उसको ज़ुल्म से रोका जाए। इसलिए कि:

नाव काग़ज़ की कभी चलती नहीं

ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं
दीनदार बेटा और दुनियादार बाप

तो मुसलमान अगर ज़ुल्म कर रहा है तो हम उसकी ठोड़ी में हाथ डालकर कहें कि अरे तेरा बाप है, मुसलमान है, उसने ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबाई है। तू जा अपने बाप को समझा कि अब्बा जान! यह ज़मीन वापस कर दो। लेकिन अब्बा जान चूँकि अच्छे माहौल में नहीं रहे थे उनके अन्दर दुनिया की मुहब्बत बहुत है इसलिए अब्बा जान कहते हैं कि बेटा मैं तो वापस नहीं करता।

अब आपने देखा कि मेरा बाप क़ियामत के दिन बड़ी मुसीबत में आएगा। इसलिए कि वह इस बेचारे ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबाए बैठा है। तो आपने अब्बा जान के साथ हमदर्दी की और यूँ कहा कि अब्बा

जान! जितनी ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन आपने दबाई है मैं उतनी ज़मीन आपको देने के लिए तैयार हूँ। मेरी ज़मीन ले लो, ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दे दो।

अपनी ज़मीन देना बतौर अख़्लाक़ के होगा और ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन वापस करना यह बतौर इन्साफ़ के होगा।

लेकिन बाप ऐसा दुनियादार निकला कि उसने यूँ कहा कि बेटा तेरी ज़मीन भी लूँगा और उसकी ज़मीन भी नहीं छोड़ूँगा। कुछ लोग इसी तरह के होते हैं। जब उम्रें ज़्यादा हो जाती हैं तो माल की मुहब्बत बढ़ जाती है। हाँ! अगर अल्लाह ही किसी की हिफ़ाज़त करें तो और बात है।

हक़ को हक़ कहना है

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! बाप माना नहीं और वह बात कचेहरी के अन्दर गयी तो कचेहरी के अन्दर जज के सामने भी उसके बेटे को कहना होगा कि जज साहिब! यह मेरे अब्बा हैं। इनका सम्मान करना मेरे ज़िम्मे ज़रूरी है, इनका अदब करना मेरे लिए ज़रूरी है। लेकिन मेरे अब्बा जैसे अल्लाह के बन्दे हैं उसी तरह यह ग़ैर-मुस्लिम भी अल्लाह का बन्दा है। मैं गवाही देता हूँ कि यह ज़मीन ग़ैर-मुस्लिम की है। मेरे अब्बा की नहीं।

यह हमको रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखाया है, इसके अन्दर मुस्लिम ग़ैर-मुस्लिम के मसले को नहीं लाना चाहिए।

दुकान से भी दावत का काम

आपने सुबह दुकान खोली, दुकान के अन्दर आप चावल भी बेचते हैं और न मालूम क्या-क्या चीज़ें बेचते हैं। आप पचास रुपये के दस किलो चावल देते हैं। दुकान खुली, लोग आ गए। सबको आपने दस-दस किलो चावल दिए।

तुम्हारे मौहल्ले की एक ग़ैर-मुस्लिम बुढ़िया है यह भी सुबह-सुबह

लकड़ी टेकते हुए तुम्हारी दुकान पर पहुँच गई और उसने जाकर यूँ कहा कि पचास रुपये के मेरे को चावल दे दो। उसको आपने बजाए दस किलो के बीस किलो दे दिए। इसलिए कि उसकी परेशानी से आप वाक़िफ़ थे। अब वे जो दूसरे ख़रीदार थे, लाला जी, सरदार जी और वह मुतवल्ली जी भी थे जिन्होंने बोर्ड लगा दिया था कि हमारी मस्जिद में कोई बयान न करे, तो ये सारे के सारे चीं-चीं करने लगे कि इसको पचास रुपये में बीस किलो और हमको दस किलो। तो आपने कहा देखो! मेरा भाव तो पचास रुपये में दस किलो का ही है, और जो मैंने इस बूढ़ी औरत को दस किलो ज़्यादा दिए यह हमदर्दी के तौर पर हैं। यह मेरे मौहल्ले की औरत है और मैं रात को इसकी चीख़ व पुकार को सुनता हूँ।

उसके बाद आपने फिर उस बुढ़िया से पूछा बड़ी बी! रात को तुम कराहती बहुत हो क्या परेशानी है?

तो उस ग़ैर-मुस्लिम बूढ़ी औरत ने यूँ कहा कि मेरे सात बेटे हैं। मैंने उन सब की शादियाँ कर दीं, वे अपनी बीवियों को लेकर चले गए और मेरी कोई ख़ैर-ख़बर नहीं लेता। यह कहकर वह रोने लगी। जब वह रोने लगी तो उसका रोना देखकर आपको भी रोना आ गया।

क्यों?

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को
वरना ताअ़त के लिये कुछ कम न थे करों-बयाँ

इबादत के लिए तो फ़रिश्ते बहुत हैं। इनसान को दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया है।

लेकिन देखो यह मतलब नहीं कि इबादत के वास्ते नहीं पैदा किया।

وَمَاخَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ٥ (پاره—٢٧)

जिन्नात और इनसान को अल्लाह पाक ने इबादत करने के लिए

पैदा किया और इनसान की इबादत ऐसी होगी कि लोगों का दर्द भी दिल के अन्दर पैदा करेगी।

तो आप रोने लगे। वह बूढ़ी भी रो रही है। वे सारे के सारे देख रहे हैं और ताज्जुब कर रहे हैं कि कोई रिश्तेदारी नहीं और फिर भी इतनी हमदर्दी कर रहा है। फिर आपने अपने बेटे से कहा कि बेटा! यह जो तुम दुकान के अन्दर तौलने और बेचने का काम करते हो तो वह ज़रा नौकरों के हवाले कर दो और तुम इस बड़ी बी को अपनी मोटर साइकिल पर बैठाओ और बैठाकर अस्पताल में दाख़िल करो और यह लो तीन हज़ार रुपये यह डॉक्टर को एडवांस दे दो। और मैं फ़ोन करता हूँ कि इस बड़ी बी के इलाज का जो ख़र्चा होगा वह मेरी दुकान से तुम्हारे पास पहुँच जाएगा। और बेटा बड़ी बी की ख़िदमत के लिए कोई औरत तजवीज़ करो। उस औरत की जो तन्ख़्वाह होगी वह भी हम देंगे।

बेटा मोटर साइकिल पर बैठाकर उस बड़ी बी को लेकर चला गया। आपने टेलीफ़ोन भी कर दिया।

अब यह सब देखकर लाला जी भी ख़ुश, सरदार जी भी ख़ुश, मुतवल्ली जी भी ख़ुश। अब ये सारे मानूस हो गए। और जब ये मानूस हो गए तो अब उनको अल्लाह से जोड़ने की फ़िक्र करो।

अब आपने कहा कि लाला जी और सरदार जी और मुतवल्ली जी मेरा जी यूँ चाहता है कि आप लोग मेरे घर पर आएँ और बैठकर एक वक़्त हम सब खाना खाएँ और चाय पियें। आपका अख़्लाक़ देखकर सब ख़ुशी-ख़ुशी आपके यहाँ आ गए। आपने जो उनको रोटी खिलाई तो उसके साथ-साथ ईमान की बातें भी पिलाईं। वे बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) हुए।

कम-ख़र्च बाला-नशीं

फिर आपके बच्चे की शादी तय हुई। आपने उन लोगों को अपने

लड़के की शादी में बुलाया, सब उसमें भी ख़ुशी-ख़ुशी आ गए।

आप तो अरबपती खरबपती हैं, लेकिन आपने अपने लड़के की शादी जो कि वह चन्द हज़ार में की। अब मुतवल्ली जी कहने लगे कि इतने बड़े मालदार और शादी में ख़ाली चन्द हज़ार ख़र्च किए! तो आपने कहा देखो हमारे लड़के रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की लड़कियों से अफ़ज़ल (बेहतर) नहीं हैं। जब उन लड़कियों की शादी सीधे-सादे तरीक़े पर हुई तो हमारे लड़के की शादी भी सादे तरीक़े पर होगी।

शादी के पैसे बचाकर क्या किया?

और मुतवल्ली जी! यह जो शादी के पैसे मैंने बचाए तो इसका मैंने बैंक बेलैंस नहीं किया बल्कि मैंने यह पैसे जो बचाए तो उसके ज़रिये बहुत-से ग़ैर-शादीशुदा (अविवाहित) लड़के और लड़कियों की शादियाँ कर दीं।

मैंने कॉलोनी बनाई

और मैंने एक कॉलोनी भी बनाई है। उस कॉलोनी में मैंने एक कमरा अपने और अपनी बीवी के लिए, एक कमरा मेरे बेटे और उसकी बीवी के लिए और बाक़ी जितने कमरे थे उनके लिए मैं ग़रीबों के पास गया और मैंने उनसे बातचीत की और कहा कि देखो तुम पिछत्तर रुपये हर महीने का किराया देते हो और पच्चीस साल से तुम किरायेदार हो। हमारी कॉलोनी का कमरा बारह हज़ार में बना है। हर महीने अगर तुम एक सौ रुपये दोगे तो एक साल में बारह सौ रुपये होंगे। इस तरह दस साल में उसकी पूरी क़ीमत अदा हो जाएगी। तो तुम दस साल में मकान के मालिक बन जाओगे। और इसमें तुम पच्चीस साल से किरायेदार ही हो।

इस तरह वे लोग मेरी कॉलोनी में आकर बस गए। उनमें से बाज़ों ने हर महीने एक सौ के बजाय दो सौ दिए किसी ने पाँच सौ

दिए और वह कॉलोनी पाँच साल में फ्री हो गई।

उनमें से कुछ आदमी पैसे नहीं दे सके लेकिन हमने उनकी इज़्ज़त पर हाथ नहीं डाला। दूसरे रास्ते से हमने उन तक ज़कात के पैसे पहुँचा दिए, हदिये के पैसे पहुँचा दिए। हमने उनको ज़लील नहीं किया।

हम उन ग़रीबों को अपनी कॉलोनी के अन्दर बग़ैर पैसों के भी कमरा दे सकते थे लेकिन अगर उन ग़रीबों को हम बग़ैर पैसे का कमरा दे देते तो फिर ये ग़रीब माँगकर खाने वाले बन जाते। उन ग़रीबों को हम अपनी जूती नहीं बनाना चाहते। हम तो उन ग़रीबों को अपने सर की टोपी बनाना चाहते हैं कि इज़्ज़त व आबरू के साथ ये रहें, तो तुम लोग चाहो तो मैं तुम्हें अपनी कॉलोनी भी दिखा दूँ।

कॉलोनी में ईमान की मजलिस और ईमान की बातें

अब लाला जी, सरदार जी, मुतवल्ली जी यह कॉलोनी देखने गए तो चारों तरफ़ ग़रीब आबाद। एक कमरा उनका और एक कमरा उनके बेटे का। बीच में मस्जिद बनी हुई। उसमें कोई जमाअ़त आ रही है कोई जा रही है। कहीं तालीम के हल्क़े तो कहीं अल्लाह का ज़िक्र, कहीं ईमान की मजलिस। बड़ी चहल-पहल, न कोई दरबान रखने की ज़रूरत पड़ती है न और कुछ।

मेरे मोहतरम दोस्तो! यह सारा मन्ज़र (दृश्य) लोगों ने देखा तो बड़े ख़ुश हुए और उन लोगों ने कहा कि सारी दुनिया के अन्दर तो छीना-झपटी है। सब लेने वाले बने हुए हैं इसलिए लड़ाई है। और तुम्हारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देने का मिज़ाज बनाया है। छीनने के बजाय बाँटना। तुम्हारे नबी ने तो बाँटना सिखाया। जितना बाँटेगा उतना जोड़ होगा, जितना छीनेगा उतना तोड़ होगा।

तोड़ के रास्ते

पूरे आ़लम में छीनने का मिज़ाज है। झूठ, सूद, धोखा, ग़बन,

ख़ियानत, नाप-तौल में कमी, चोरी, डकैती ये सारे छीनने के रास्ते हैं।

पूरी दुनिया का निज़ाम जो है वह "लेने" की बुनियाद पर है। अगर देगा भी तो लेने के लिए देगा। और यह बात भी बता दूँ कि जो लेने वाला बनेगा वह कंगाल बनेगा और जो देने वाला बनेगा अल्लाह उसके दिल को ग़िना (मालदारी और बेनियाज़ी) से भर देगा।

अब तुम यह कहोगे कि मौलवी साहिब! देना- देना- देना, ... सदक़े के अन्दर देना, हदिये के अन्दर देना, अपने रिश्तेदारों को देना, ग़रीबों को देना और ग़ैर-मुस्लिम को देना। तो तुम लोगों के ज़ेहन में यह बात आई होगी कि मौलवी साहिब! तुम तो बस देना- देना- देना, की ही बात करते हो, कहीं लेने की जगह भी तो बताओ?

ख़ुदाई ख़ज़ाने, लेने की जगहें

तो मैं लेने की जगह भी बता दूँ। लेने की जगह ख़ुदा के ख़ज़ाने हैं। एक हाथ फैला अल्लाह की तरफ़ लेने के लिए और दूसरा हाथ फैला बन्दों की तरफ़ देने के लिए। अल्लाह से लेने वाला बन और अल्लाह का प्यारा बन और बन्दों को देने वाला बन और अल्लाह की मख़्लूक़ का प्यारा बन।

तू अल्लाह का भी महबूब और प्यारा होगा और बन्दों का भी महबूब होगा। तेरे चेहरे को देखकर लोगों को ख़ुशी होगी कि देखो कैसा भला आदमी है।

तो मेरे दोस्तो! अगर देने का जज़्बा बना और लोगों के साथ ख़ैरख़्वाही का जज़्बा बना तो बड़ी बरकतें आप अपनी नज़रों से देखोगे, और अगर छीना-झपटी का जज़्बा बना तो उसके अन्दर सिवाय लड़ाई-झगड़े के और कुछ नहीं।

हमदर्दी वाले लोग

मैं एक मिसाल दूँ। हल्वा है हल्वा। पाँच आदमी खाने वाले बैठे और ये पाँचों आदमी एक दूसरे की हमदर्दी करने वाले, तो पाँचों ने

सोचा कि दूसरे खा लें, मैं न खाऊँ। इसलिए कोई नहीं खा रहा है। फिर एक ने हिम्मत की। लुक़्मा उठाया और एक के मुँह में डाला, इस तरह चारों के मुँह में एक-एक लुक़्मा डाला। फिर उसने लुक़्मे उठाए और फिर चारों के मुँह में एक-एक लुक़्मा डाला।

और यह भी जो थे हमदर्दी वाले थे, छीना-झपटी वाले तो थे नहीं। उनके अन्दर भी ईसार और हमदर्दी का जज़्बा था। उन्होंने कहा कि भाई! खुद तो खाते नहीं और हमको खिलाते हो, तो उन लोगों ने भी एक-एक लुक़्मा लेकर उसके मुँह में डाला और इस तरह हल्वा जो था वह ख़त्म हो गया और आपस में मुहब्बतें बढ़ गईं।

अब वे चारों यूँ कहते हैं कि तुम कितने भले आदमी हो कि हमने तो तुमको एक लुक़्मा खिलाया और तुमने हमको दो लुक़्मे खिलाए। तो यह यूँ कहता है कि मेरे से ज़्यादा भले तो तुम हो कि मैंने तुमको दो-दो लुक़्मे खिलाए और तुम चारों ने मिलकर मेरे को चार लुक़्मे खिलाए।

देखो! बाँटने वाला फ़ायदे में रहा, देने वाला नफ़े में रहा। लेकिन यह उस वक़्त होगा जब ईसार (अपनी ज़रूरत पर दूसरे की ज़रूरत को प्राथमिकता देना) और हमदर्दी की वह सिफ़त पैदा हो जाए जो बताई जा रही है।

हिर्स वाले और लालची लोग

इसके मुक़ाबले में वह हल्वा लेकर पाँच आदमी बैठे और ये पाँचों लालची हैं, और हिर्स रखते हैं और छीना-झपटी वाले हैं। ये पाँचों बैठे और पाँचों के ज़ेहन में यह है कि सारा हल्वा मैं अकेला खा जाऊँ। लेकिन खा नहीं सक़ते इसलिए कि दूसरे भी ऐसे ही लालची बैठे हैं।

अब खाना जो शुरू किया तो थोड़ी देर में हल्वा ख़त्म! अब उनकी बातें सुनो!

उनकी बातें तो मुहब्बत की थीं जिन्होंने ईसार व हमदर्दी का

मामला किया। और इनकी बातें आपस के अन्दर लड़ाई-झगड़े की हैं।

उनमें से एक ने यूँ कहा कि अरे लालची कहीं के! मैंने जितनी देर में एक लुक़्मा खाया तू उतनी देर में तीन लुक़्मे खा गया। और तीन लुक़्मे खाने वाला यूँ कहने लगा कि तेरा जो एक लुक़्मा था वह मेरे छह लुक़्मों के बराबर था। इसलिए तेरे को देर लगी।

कम ज़्यादा तो दोनों को मिला, जो देने वाले थे उनको भी कम ज़्यादा मिला, सब को दो-दो लुक़्मे और एक को चार लुक़्मे। और जो छीना-झपटी वाले थे उनको भी कम ज़्यादा मिला। लेकिन वहाँ जो कम ज़्यादा मिला वह मुहब्बत के साथ मिला। और यहाँ जो कम ज़्यादा मिला, यह दुश्मनी के साथ मिला।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! एक हाथ फैला अल्लाह की तरफ़ लेने के लिए इबादत के रास्ते से, और दूसरा हाथ फैला बन्दों को देने के लिए अख़्लाक़ के रास्ते से। अल्लाह से लेकर अल्लाह का महबूब बन, और बन्दों को देकर बन्दों का महबूब बन।

बात समझ में आ गई ना! आप हज़रात के .....

तो देखिए बात अब लम्बी करूँ तो लम्बी होती चली जाएगी। अब यह पाक ज़िन्दगी जो हम सुन रहे हैं, नबियों की सुनी, रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुनी। जो नबियों के ज़माने में अल्लाह पाक ने किया वह क़ियामत तक करते रहेंगे। यह अल्लाह का वायदा है।

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ٥ (پارہ-۲۹)

नेक काम करने वालों के जैसा जो काम करेगा तो अल्लाह पाक उनके साथ वही मामला करेंगे जो नबियों के साथ किया। ग़ैबी मदद होगी।

और बावजूद इसके अगर भटके हुए लोग सुधार पर नहीं आते तो फिर अल्लाह पाक का मामला उनके साथ क्या होगा? जो क़ौमे

आद के साथ हुआ।

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ٥ (پ-٢٩)

उन मुजरिमों के साथ हमारा वही मामला होगा, ग़ैबी पकड़ का।

दावत की फ़िज़ा कैसे बने?

इसलिए दावत की एक फ़िज़ा बनाई जाए। दावत की फ़िज़ा बनाने में ईमानियात की जड़ लगे और तालीम के हल्क़ों का पानी हो और क़ुरबानी की खाद हो और चारों तरफ़ गुनाहों से बचने की बाढ़ हो। और ज़िक्र, तिलावत, रोना-धोना, बिलबिलाना उसकी फ़िज़ा हो।

जैसे पेड़ एक दम से नहीं उगता बल्कि उसके लिए पहले ज़मीन हमवार की जाती है। जड़ लगाई जाती है और बहुत कुछ किया जाता है।

गर्म आँसू और ठण्डी आहें

तो अगर दीन का पेड़ लगाना है तो पहले दावत की ज़मीन हमवार करो। ईमानियात की जड़ लगाओ। तालीम के हल्क़ों का पानी दो। और इसी तरह क़ुरबानी की खाद दो और गुनाहों से बचने की बाढ़ लगाओ और ज़िक्र व तिलावत और रोना-धोना, बिलबिलाना, तिलमिलाना, गर्म-गर्म आँसुओं का बहाना, ठण्डी-ठण्डी आहों का भरना उसकी फ़िज़ा हो। और इस्लाम के जो रुक्न हैं उनका तना हो और उसके पास रहन-सहन और मामलात का अ़द्ल और इन्साफ़ के साथ चलाने का पेड़ हो और उसके ऊपर अख़्लाक़ के फल हों और अख़्लाक़ के फल के अन्दर इख़्लास का रस हो, तो अब दीन का पेड़ तैयार हो गया। अब दूर-दूर से लोग आयेंगे।

तू तीर आज़मा हम जिगर आज़माएँगे

लेकिन जो भटके हुए लोग होंगे वे क्या करेंगे?

वे नीचे से पत्थर मारेंगे तो पेड़ जो है वह ऊपर से फल देगा। ये

तो नीचे से मारेंगे पत्थर और वह पेड़ ऊपर से फेंकेगा फल।

लेकिन मुझे डर लग रहा है कि ये जितने बिगड़े हुए लोग हैं कहीं उनकी हिम्मतें बढ़ न जाएँ कि यह तो बावले बेवकूफ़ हैं। चलो उनको पत्थर मारते रहो और ये फल देते रहेंगे।

हवा के रुख़ पर थूकने वालों के मुँह पर आता है

सारी दुनिया के भटके और बिगड़े हुए लोग कान खोलकर सुन लें कि हमारा काम तो यह होगा कि तुम मारोगे पत्थर और हम बरसाएँगे फल। लेकिन ज़मीन व आसमान का बनाने वाला अल्लाह यह कहता है कि ओ पत्थर मारने वाले! वह पत्थर तेरे ही ऊपर आकर लौटेगा।

اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ . (پاره– ١١)

तेरी शरारत तेरे ही ऊपर आएगी।

हर चे बर मास्त अज़ू मास्त

हमारे ऊपर जो कुछ भी है वह हमारी ही वजह से है।

जो कुछ तुम्हारे ऊपर आएगा वह तुम्हारी करतूत ही तुम पर फेंकी जाएँगी।

इसलिए भटके हुए लोगों को हम अल्लाह से डराते हैं। चाहे सुधरे हुए लोग अख़्लाक़ बरतें लेकिन अल्लाह पाक जब देखेगा कि हद से आगे बढ़ रहे हो तो फिर अल्लाह पाक इतनी ज़ोर की पकड़ करेगा जिसकी कोई हद नहीं।

चार मन्ज़िलें जो मैंने पहले बताईं

मैं अपने बयान को जल्दी ख़त्म करना चाहता हूँ अल्लाह करे कि जल्दी ख़त्म हो जाए। मैंने चार बातें और चार मन्ज़िलें बताईं। माँ का पेट, दुनिया का पेट, क़ब्र का पेट और आख़िरत, लेकिन क़ब्र और आख़िरत जो है वह आँखों से ओझल है।

चार मर्हले

और दुनिया के अन्दर भी चार मर्हले हैं। एक मर्हला तो है दावत के वजूद का। दूसरा मर्हला है तरबियत के अन्तराल का। जब आदमी दावत के काम के ऊपर लग जाएँगे तो एक वक़्फ़ा (अन्तराल) तरबियत का आता है।

सब्र और शुक्र दोनों में इम्तिहान

कभी अल्लाह नेमतें डालते हैं कि बन्दा शुक्रगुज़ारी करता है या नहीं। कभी अल्लाह पाक तकलीफ़ें डालते हैं कि बन्दा सब्र करता है या नहीं।

अगर क़ुरआन व हदीस और सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगी को सामने रखकर उसने तरबियत के वक़्फ़े (अन्तराल) को भी पूरा किया और दावत के काम को बनाया और उसके ऊपर जो उतार-चढ़ाव और हालात आएँ उनमें अल्लाह व रसूल के कहने के मुताबिक़ अपनी तरबियत करता रहा तो उसके बाद के जो दो काम हैं वे अल्लाह के हैं..... अल्लाह की तरफ़ से उनका वायदा है।

देखो मेरे दोस्तो! जब दावत की फ़िज़ा (माहौल) बनेगी तो ईमान का पानी मिलेगा। और जब ईमान का पानी मिलेगा तो ज़ाहिरी आमाल तैयार होंगे। नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, सदक़ा, ख़ैरात वग़ैरह।

ये ज़ाहिरी आमाल मक़बूल भी होते हैं ग़ैर-मक़बूल भी होते हैं। इनको मक़बूल कराने का तरीक़ा यह है कि अपने अन्दर ईमानी सिफ़तें पैदा की जाएँ। और ईमानी सिफ़तों में तक़्वा (परहेज़गारी) है। अल्लाह पर भरोसा है, सब्र है, शुक्र है। जब ये सिफ़तें पैदा हो जाएँगी तो अल्लाह ख़ुश होंगे। और जब अल्लाह ख़ुश होंगे तो आमाल मक़बूल होंगे और ग़ैबी मदद आएगी।

गुमराह लोगों की तीन क़िस्में

और जब अल्लाह पाक ग़ैबी मदद करेंगे तो भटके हुए लोगों की

तीन क़िस्में बन जायेंगी। एक क़िस्म तो वह होगी जो सुधर जाएगी। दूसरी क़िस्म वह होगी जो सहम जाएगी। और तीसरी क़िस्म वह होगी जो हठधर्मी पर आ जाएगी।

ये तीन क़िस्में भटके हुओं की हो जाएँगी।

क्या से क्या बन गए?

देखिए! अबू जहल का बेटा, हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बन गए। अबू जहल का भाई हज़रत हारिस बिन हिशाम बन गए। अबू सुफ़ियान की बीवी हज़रत हिन्दा बन गईं। रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन।

मेरे मोहतरम दोस्तो! एक मजमा तो वह होगा जो हिदायत पर आ जाएगा और एक मजमा वह होगा जो हिदायत पर नहीं आएगा, लेकिन सहम (डर और घबरा) ज़रूर जाएगा।

जैसे बनी नजरान का वफ़्द (डेलीगेशन) रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और उन्होंने देखा कि अगर हमने इनके साथ 'मुबाहला' (विवादित मसले को ख़ुदा पर छोड़ते हुए एक-दूसरे पर बद-दुआ़ करना कि जो हक़ पर न हो वह बरबाद हो जाये) कर लिया और क़स्मा-क़स्मी कर ली तो हम सारे बरबाद हो जाएँगे। तो ये वहीं पर सहम गए और जिज़्या (टैक्स) देना तय कर लिया। तो एक क़िस्म सहम जाती है।

अहले बातिल की हैसियत कूड़ा-कबाड़ा और मैल-कुचैल से ज़्यादा कुछ नहीं

लेकिन एक तीसरी क़िस्म हर ज़माने में होती है जो हठधर्मी पर उतर आती है। फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान की तरह। और क़ौमे आ़द की तरह।

जब वह तीसरी क़िस्म हठधर्मी पर उतरती है तो फिर वह अहले

हक़ पर छा जाती है। अहले बातिल और भटके हुए लोग अहले हक़ पर, सुधरने वालों पर और काम करने वालों पर छा जाते हैं।

कैसे छा जाते हैं?

जैसे बारिश का पानी गिरता है तो नालियाँ और नाले चलते हैं तो उसके ऊपर कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है, या जैसे सोने-चाँदी के ज़ेवर और ताँबे-पीतल के बरतन आपको बनाने हैं तो आप नीचे आग जलाते हैं तो उसके ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है। तो जैसे आग जलाने से सोने-चाँदी के ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है और जैसे बारिश का पानी बरसने से नाले और नालियों के अन्दर कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है। इसी तरह अहले बातिल (गुमराह और सही रास्ते से भटके हुए लोग) कूड़े-कबाड़े और मैल-कुचैल की तरह अहले हक़ के ऊपर छा जाएँगे। लेकिन यह कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल फेंक दिया जाएगा और सोना-चाँदी, पीतल-ताँबा और पानी बाक़ी रहेगा।

तो इसी तरह अल्लाह पाक भटके हुओं को कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह फेंक देगा और जो अहले हक़ होंगे वे बाक़ी रहेंगे, हर ज़माने में हमारा अल्लाह यह करता आया है।

फ़िरऔन और उसका लश्कर तबाह

फ़िरऔन का पूरा लश्कर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह बनी इस्राईल और मूसा अलैहिस्सलाम पर छा गया। अल्लाह पाक ने उसको फेंक दिया और मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इस्राईल बच गए।

जालूत नाकाम, तालूत कामयाब

इसी तरह जालूत यह कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गया, लेकिन अल्लाह ने उसको फेंक दिया और हज़रत तालूत बाक़ी रहे और फिर उनको कैसा नवाज़ा।

अबू जहल और क़ैसर व किस्रा की बरबादी

इसी तरह जंगे बदर का क़िस्सा हुआ, तो अबू जहल का मजमा कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गया। लेकिन अल्लाह पाक ने उसे फेंक दिया और दीन व ईमान वाले बाक़ी रहे।

इसी तरह ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के अन्दर बनू नज़ीर के यहूदी और बनू ग़त्फ़ान के लोग ईमान वालों के ऊपर छा गए। कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह, अल्लाह पाक ने उनको फेंक दिया। और हक़ दुनिया के अन्दर बाक़ी रहा।

इसी तरह हज़रत उमर फ़ारूक़ के दौर के अन्दर, क़ैसर व किस्रा (ईरान और रूम के बादशाह) बड़ी भारी ताक़तों वाले, ये सहाबा के ऊपर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गए। अल्लाह पाक ने उनको फेंक दिया और ईमान वाले बाक़ी रहे।

इस ज़माने की मुझे कुछ नहीं कहनी, वक़्त भी नहीं और वक़्त में गुन्जाईश भी नहीं, हाँ! आगे जो होने वाला है जिसकी ख़बर अल्लाह ने दी और रसूल ने दी, वह यह कि दज्जाल अपने हज़ारों लश्करों के साथ ईमान वालों पर और अहले हक़ पर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा जाएगा। लेकिन अल्लाह पाक उसको और उसके लश्कर को उठाकर फेंक देंगे।

याजूज और माजूज की तबाही

फिर आख़िर में आएँगे याजूज और माजूज।

اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ. (پاره-١٦)

यह याजूज और माजूज जुल्क़रनैन की दीवार को तोड़कर चारों तरफ़ छा जाएँगे। ये लोगों को मार डालेंगे। समुद्र का पानी भी पी जायेंगे और ईमान वालों पर छा जाएँगे और ईमान वाले पहाड़ों के ग़ारों (गुफाओं) में छुप जाएँगे।

حَتّٰى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝

(پارہ-۱۷)

अल्लाह बताता है कि देखो मैं उन असहायों और बेबसों की कैसे मदद करता हूँ।

अल्लाह पाक याजूज और माजूज की गर्दनों पर फुंसी निकाल कर उन सबको फेंक देगा और ईमान वाले बाहर निकलेंगे, दुआ मागेंगे। बारिश बरसेगी और बड़ी बरकत होगी। याजूज और माजूज जो एक मुसीबत बन चुके होंगे उनको अल्लाह तआला दूर कर देंगे और चारों तरफ़ दीन व ईमान और हिदायत फैली होगी।

तो आईन्दा के दज्जाल और याजूज-माजूज जब कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा जाएँगे तो अल्लाह उन्हें फेंक देगा। जो अल्लाह पहले कर चुका है वह अल्लाह बाद में भी करेगा। और वह अल्लाह उसी ताक़त के साथ आज भी मौजूद है।

और यह मिसाल मैं नहीं दे रहा हूँ ज़मीन आसमान का पैदा करने वाला अल्लाह दे रहा है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! ईमान और हिदायत का बीज जो अल्लाह ने 'आलमे अरवाह' (रूहों की दुनिया) में हर इनसान के अन्दर डाला है। यहाँ तक कि अबू जहल और फ़िरऔन के दिल में भी डाला है, लेकिन वह बीज उगकर पेड़ कब बनता है? जब आसमानी 'वह्य' (अल्लाह के पैग़ाम) का पानी मिले। आसमानी 'वह्य' का पानी मिले तो पूरा दीन का पेड़ बनेगा।

दीन के पेड़ को ज़ाया होने से बचाएँ

और इस दीन के पेड़ को ज़ाया, तबाह और बरबाद करने वाली कुछ ख़राबियाँ होती हैं।

एक तो दुनिया-तलबी (यानी दुनिया के पीछे भागना) दूसरे

ख़ुदग़र्ज़ी (स्वार्थी होना) तीसरे हसद, चौथे तकब्बुर, पाँचवे रिया और दिखावा, और न मालूम क्या-क्या ख़राबियाँ होती हैं।

ये सारी ख़राबियाँ दीन के पेड़ को तबाह और बरबाद कर देती हैं। तो इसके लिए इश्क़े-इलाही (अल्लाह से मुहब्बत और ताल्लुक़) की आग लगनी चाहिए जो इन सारी ख़राबियों को जलाकर ख़ाक कर दे।

आसमानी पैग़ाम के पानी से तो बीज उगकर पेड़ बनेगा और उस पेड़ को ज़ाया और बरबाद करने वाली जो ख़राबियाँ हैं, दुनिया-तलबी, ख़ुदग़र्ज़ी, तकब्बुर, हसद, एक-दूसरे को उखाड़ना-पछाड़ना वग़ैरह इसको जलाने के लिए इश्क़े-इलाही की आग दिल के अन्दर लगेगी तो ये सारी चीज़ें जलेंगी।

अल्लाह पाक कई जगहों पर आग और पानी की मिसाल देते हैं। कुरआन पाक के पहले पारे के अन्दर भी आग और पानी की मिसाल है और जो मैं यह बता रहा हूँ इसके अन्दर भी अल्लाह पाक आग और पानी की मिसाल देते हैं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह भटके हुए लोगों को अल्लाह तआ़ला फेंक देंगे और सुधरे हुए लोग दुनिया के अन्दर बाक़ी रहेंगे। और पूरी दुनिया के अन्दर अमन व अमान आ सकता है, करने वाली ज़ात अल्लाह की है।

आग और पानी की मिसाल

अब मैं वह आयते करीमा आपके सामने पढ़ दूँ जिसको मैंने बहुत तफ़सील से बयान किया:

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا (پاره-١٣)

यह तो अल्लाह पाक ने पानी की मिसाल दी। नालियाँ और नाले बहे और कूड़ा-कबाड़ा छा गया। आगे अल्लाह पाक आग की मिसाल देते हैं:

وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ، (پاره-١٣)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि पानी के ऊपर जो कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है और जो तुम आग जलाते हो सोने-चाँदी के ज़ेवर और दूसरे सामान बनाने के लिए, तो सोने-चाँदी के ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है।

كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ، (پاره-١٣)

अल्लाह पाक इसी तरह हक़ और बातिल की मिसाल देते हैं।

हक़ जो है वह तो पानी और सोने-चाँदी की तरह है। और बातिल जो है वह कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह है।

फिर आगे अल्लाह पाक क्या करते हैं?

فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ا (پاره-١٣)

यह कूड़ा-कबाड़ा और मैल-कुचैल जो है, यह फेंक दिया जाता है।

وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ.

और लोगों को नफ़ा देने वाला ख़ालिस पानी और लोगों को नफ़ा देने वाला ख़ालिस सोना-चाँदी ही बाक़ी रहता है।

كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ.(پاره-١٣)

अल्लाह तआ़ला इसी तरह मिसाल दे-देकर समझाता है।

और दोस्तो! एक बात ज़रा मुझे और कहनी है। वह यह कि नीचे ख़ालिस पानी हो और ख़ालिस सोना और चाँदी हो तो ऊपर का कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल फेंक दिया जाएगा। लेकिन अगर नीचे के पानी में भी कूड़ा-कबाड़ मिला हुआ है और नीचे के सोना-चाँदी में भी अगर मैल-कुचैल मिला हुआ है तो यह अच्छी निशानी नहीं है।

इसलिए दीन का काम करने वालों को चाहिए कि दीन के काम के साथ कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल न मिला हो। यानी दुनिया-तलबी (दुनिया कमाने का लालच) और ख़ुद-गर्ज़ी न हो। अगर दुनिया-तलबी

व ख़ुद-गर्ज़ी हो तो गोया ख़ालिस पानी और ख़ालिस सोने-चाँदी के अन्दर कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल मिल गया और इसके लिए ज़रूरी है एक तो अल्लाह पाक से रो-रोकर दुआएँ माँगना और एक अपनी निगरानी करना। हर आदमी अपनी निगरानी करे और कुरबानियों के अन्दर आगे बढ़ जाए।

हर आदमी दावत के काम को अपना काम बनाए

और यह नीयत कर लो कि जब तक दुनिया के अन्दर ज़िन्दा रहना है हम दावत के काम को अपना काम बनाएँगे। इस नुक्ते को सामने रखकर हमें काम करना है। मर्दों को भी करना है, औरतों को भी करना है और बच्चों को भी करना है।

कुरबानी देने से ही दीन की फ़िज़ा बनेगी

जैसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने ज़माने का यह मजमा तैयार कर दिया है और बहुत बड़ी कुरबानियाँ दे-देकर उन्होंने काम किया है और पूरे आलम में उसकी फ़िज़ाएँ बनी हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु किस क़द्र देख-भाल करते थे और बेचैन व फ़िक्रमन्द (चिन्तित) रहते थे, आज भी अल्लाह का फ़ज़्ल है, उसका करम है, उसका एहसान है कि बहुत-से घराने अल्लाह पाक ने ऐसे खड़े कर दिये जो अल्लाह के बन्दों के लिए फ़िक्रमन्द रहते हैं। और हर तरह की कुरबानियाँ देते हैं।

दीनदार और समझदार बीवी

एक आदमी की साल भर की तश्कील हुई। वह तैयार हो गया। बीवी से जाकर मश्विरा किया, बीवी बड़ी दीनदार थी, बीवी ने कहा तुम अल्लाह के रास्ते में जाओ बच्चों की तरबियत और उनकी देखभाल मैं करती रहूँगी। इस तरीक़े से अल्लाह के रास्ते में जाना मेरे लिए तो मुश्किल है। तुम अल्लाह के रास्ते में जाओ। तुम अल्लाह के

दीन का काम करोगे तो अल्लाह पाक मुझे भी सवाब देगा।

शौहर अल्लाह के रास्ते में चले गए और बीवी अपने बच्चों की ख़ैर-ख़बर लेती रही। ईद का दिन आया तो मौहल्ले के जो बच्चे थे उस तब्लीग़ में गये हुए आदमी के बच्चों को चिढ़ाने लगे और कहने लगे कि तुम्हारे अब्बा तो जमाअ़त में गए और हमारे अब्बा हमारे पास हैं। और हमारी तो ईद है और देखो कैसे अच्छे-अच्छे कपड़े और देखो कैसा अच्छा-अच्छा खाना। हम तो घूमने-फिरने जाएँगे। तुम्हें कौन ले जाएगा?

ये छोटे बच्चे थे रोने लगे। हिचकियाँ मार-मारकर रोए और रोते-रोते माँ के पास आए। ज़िन्दगी में यह पहली ईद थी कि बच्चों के अब्बा जमाअ़त में चले गए। अब ये बच्चे माँ को लिपट गए और लिपट कर ख़ूब रोए और माँ भी रोई।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ में कुरबानी और भलाई की दुआ़

मेरे दोस्तो! यह दीन कुरबानी से चला है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी इस दीन के लिए ख़ूब-ख़ूब कुरबानियाँ दी हैं।

ताइफ़ (मक्का शरीफ़ के क़रीब यह एक शहर है) के अन्दर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर इतने पत्थर पड़े कि आप बेहोश होकर गिर पड़े। ज़ैद इब्ने हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु साथ हैं। कन्धे पर उठाकर उतबा के बाग़ में ले आए और पानी का छिड़काव किया तब जाकर आँख खुली। फ़रिश्ते आए और यूँ कहा कि अगर आप कहो तो हम दोनों पहाड़ों को मिलाकर उन्हें तबाह और ग़ारत कर दें? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं! अगर ये नहीं मानते तो हो सकता है कि उनकी औलाद माने। और आपने फ़रमाया कि हमें उनका बेड़ा ग़र्क़ नहीं करना है। हमें उनके बेड़े पार करने हैं। ये नहीं मानते तो इनकी औलाद मानेगी।

अब उनकी औलाद में कौन था? वह क़बीला-ए-बनू सक़ीफ़ वाले थे जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुँचाई।

हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी

सिर्फ़ ईमान ही नहीं लाए बल्कि दीन के दाई बने

अब क़बीला-ए-बनू सक़ीफ़ की नस्ल चली और उसमें हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि पैदा हुए और उन्होंने हिल और सिन्ध का सफ़र किया। उनकी पाकीज़ा ज़िन्दगी लोगों ने देखी और देखकर वे सारे ईमान वाले बने। और उनकी नस्ल चली।

हमारे मुल्क के जितने भी करोड़ों कलिमे वाले हैं और हमारे पड़ोस के दो मुल्कों के अन्दर जितने भी करोड़ों कलिमे वाले हैं, इसके अन्दर असर है हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि और उनकी जमाअ़त की क़ुरबानी का। बीच में और भी बहुत-से दाई (दीन की दावत देने वाले) आए मैं उनका इनकार नहीं करता।

और यह मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी जो थे यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ की क़ुरबानी पर बाद में पैदा हुए। तो हम लोगों को जितना भी ईमान मिला है यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ वाली क़ुरबानी पर मिला है।

बच्चे हंस पड़े

बहरहाल! मैं आपको वह वाक़िआ़ सुना रहा था कि बच्चे और माँ ख़ूब लिपटकर रोये। जब रोने से फ़ारिग़ हो गए तो माँ ने बच्चों को बैठाया और माँ ने यूँ कहा देखो बच्चो! मौहल्ले के बच्चों की ईद आज है और कल बासी, परसों ख़त्म। और हमारी ईद जो जन्नत में आएगी वह हमेशा ताज़ी रहेगी और बढ़ती रहेगी। और जन्नत में जाकर क्या-क्या मिलेगा वे सारी आयतें पढ़कर सुनाईं। जन्नत के

अंगूर कैसे? जन्नत की खजूर कैसी? जन्नत का दूध कैसा? वहाँ का शहद कैसा? ये सारी बातें सुनकर बच्चे हंस पड़े और बच्चों ने कहा बस अम्माँ हमारा तो काम बन गया। हमारी तो ऐसी ईद होगी जो कभी बासी ही नहीं होगी।

ये बच्चे बाहर गए। फिर वे बच्चे आए। उन्होंने चिढ़ाया। इन बच्चों ने कहा बैठो, सारे बच्चे बैठ गए।

बच्चे भी दीन के दाई

उन्होंने यूँ कहा कि देखो! तुम्हारी ईद तो कल बासी और परसों तो ख़त्म। और हमने अपनी माँ से सुना है कि हम को जो जन्नत की ईद मिलेगी वह बासी नहीं होगी, वह हमेशा ताज़ी रहेगी। और भी जन्नत की सारी नेमतें उन बच्चों ने गिनानी शुरू कीं तो वे सारे बच्चे ख़ामोशी से बैठकर सुनते रहे।

तो एक तरफ़ अब्बा ईद के दिन दीन की दावत में लगे हुए। यह बीवी भी दीन की ख़िदमतगार और बच्चे भी दावत दे रहे हैं..... यह मन्ज़र हमें पूरे आ़लम के अन्दर क़ायम करना है। करने वाले अल्लाह हैं हमें हाथ-पैर मारने की कोशिश करनी है।

बहरहाल! उन बच्चों के अब्बा जो थे वह जौनसे इलाक़े में फिर रहे थे उस इलाक़े वाले तब्लीग़ के काम को अच्छा नहीं समझते थे। उनके ज़ेहन में किसी ने यह डाल दिया था कि ये तब्लीग़ का काम करने वाले दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ते। और तब्लीग़ का काम करने वाले जो हैं, उनके दिलों में रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एहतिराम (सम्मान और अदब) नहीं, और ये औलिया-अल्लाह को नहीं मानते। यह उनके दिमाग़ में किसी ने डाल दिया था, तो गाँव वालों ने जमाअ़त के लोगों को गाँव में ठहरने नहीं दिया। उन लोगों ने गाँव से बाहर पेड़ों के नीचे बसेरा किया।

दोनों तरफ़ है आग बराबर लगी हुई

गाँव वाले भी बेचारे माज़ूर हैं मजबूर हैं, वे बजाय उनकी बात

सुनने और मानने के उनकी पिटाई करते हैं..... मारने वाले भी रसूले पाक की मुहब्बत में मार रहे हैं और मार खाने वाले भी रसूले पाक की मुहब्बत में मार खा रहे हैं। असल मुजरिम तो वे हैं जिन्होंने उनको ग़लत-फ़हमी के अन्दर डाला।

और ऐसे लोग जब लग जाते हैं तो वे काम भी ख़ूब करते हैं।

पासबाँ मिल गए काबे को सनम-ख़ाने से

लग गया एक सरफिरा और बिल्कुल बिगड़ा हुआ जमाअ़त में। अल्लाह ने उसे क़बूल कर लिया और तौफ़ीक़ बख़्शी। एक जगह पर वह जमाअ़त लेकर गया। गाँव के लोगों को किसी ने ग़लत-फ़हमी में डाल रखा था। जमाअ़त के पहुँचने से एक शोर मच गया। निकालो, मारो, पीटो। फिर गाँव वालों ने जमाअ़त को निकालने के लिए एक शराबी को भेजा, अब वह आया और गालियाँ देने लगा। बुरा-भला कहा और कहा कि निकल जाओ, हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ियाँ करने वालो!

अब यह जमाअ़त का जो अमीर था, यह भी किसी ज़माने में ऐसा ही सरफिरा रह चुका था। उसने भी ज़ोर से यूँ कहा, अरे हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ियाँ करने वाले को तू सिर्फ़ गालियाँ देता है, नामर्द कहीं के! हिजड़े! शर्म नहीं आती, अरे उनको तो गोलियों से भून देना चाहिए।

इसलिए कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान? फिर उसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शाने अक़्दस के बारे में बातें बतानी शुरू कीं और ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से कहीं। तो उस शराबी का मुँह उधर फिर गया। आया, बैठा और बैठकर बात सुनी, और उसने कहा हमको बहुत धोखे में रखा गया।

इसके बाद वह बाहर निकला और आस्तीनें चढ़ाईं और गाँव के लोगों से कहा कि चलो सारे के सारे उनकी बात सुनो, नहीं तो अब

तुमको मारूँगा।

सारे लोग आए और बात सुनी। आज. वहाँ से न जाने कितनी जमाअ़तें निकल रही हैं। यह हमारे सरफिरे जो होते हैं ना! तो यह भी ज़रा मौक़े-महल पर थोड़े खुरदरे बनते हैं लेकिन मैं उनकी हिम्मत नहीं बढ़ाता, इसलिए कि हर जगह खुरदुरापन नहीं चलता। खुरदुरेपन से कहीं-कहीं मामला ख़राब हो जाता है। इसलिए सख़्ती की इजाज़त नहीं है। नर्मी के साथ जितना काम हो उतना अच्छा है। और सख़्ती करना हर एक का काम भी नहीं है।

हज़रत उमर बहुत रोये

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़्ती की नक़ल हर आदमी न उतारे क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अन्दर सख़्ती के साथ तक़्वा (परहेज़गारी और अल्लाह का डर) भी था।

ताजिरों (व्यापारियों) का एक क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा में आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को फ़िक्र हुई कि कहीं चोरी न हो जाए। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ख़ुद पहरेदार बन गए और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ को साथ में ले गए और तहज्जुद की नमाज़ भी दोनों हज़रात ने वहीं पढ़ी।

क़ाफ़िले से बार-बार एक बच्चे के रोने की आवाज़ आती थी। हज़रत उमर रिज़० जाकर उसकी माँ से फ़रमाते थे कि बच्चे को क्यों रुलाती है? रात के आख़िरी हिस्से में फिर उस बच्चे के रोने की आवाज़ आई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जाकर फ़रमाया कि तू अच्छी माँ नहीं है, तेरे लड़के को रात भर क़रार नहीं आया। वह औ़रत बोली ऐ ख़ुदा के बन्दे! तूने मुझे परेशान कर दिया। बात यह है कि मैं इसका दूध छुड़ाना चाहती हूँ मगर वह अभी छोड़ता नहीं। इसलिए बेक़रार रहता है। आपने कहा कि इसका दूध इतनी जल्दी क्यों छुड़ाती है? औ़रत ने कहा उमर बिन ख़त्ताब वज़ीफ़ा उसी बच्चे का

मुक़र्रर करते हैं जो दूध छोड़ चुका होता है। तो मैं इस बच्चे का दूध छुड़ा रही हूँ ताकि इसका भी वज़ीफ़ा मुझको मिलने लगे और हमारा ख़र्च पूरा हो।

जब यह बात हज़रत उमर को मालूम हुई तो हज़रत उमर बहुत रोये और यूँ कहा कि उमर! न मालूम तेरी हुकूमत के अन्दर कितने बच्चों को उनकी माएँ रुला रही होंगी। और क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने जब तेरी पेशी होगी तो बच्चों के रोने का तू क्या जवाब देगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने पूरा क़ियामत का मन्ज़र था। वह बहुत रोये।

इनसान का अ़मल उसके गले का हार

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने ये सारी आयतें थीं:

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِىْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ۝ (پاره – ۱۵)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हर इनसान का भला या बुरा अ़मल वह उसके गले का हार है। और क़ियामत के दिन रजिस्टर खुला हुआ हर आदमी के सामने आयेगा। और भला व बुरा उसके अन्दर लिखा होगा।

आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

اِقْرَاْ كِتَابَكَ، كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝ (پاره–۱۵)

अपना रजिस्टर तू ख़ुद पढ़ ले और अपना हिसाब तू ख़ुद कर ले।

तेरे रजिस्टर में जुर्म की धाराएँ क्या हैं, वह तो देख ले। और किस जुर्म की क्या सज़ा है वह क़ुरआन में देख ले जो अ़र्शे-इलाही के पास लटका हुआ है। और अपना हिसाब तू ख़ुद कर ले।

आदमी हैरान हो जाएगा कि की हुई हर छोटी-बड़ी चीज़ वहाँ

सामने आ जाएगी। और आदमी कहेगा:

مَالِ هٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰهَا وَوَجَدُ وَامَا عَمِلُوْا حَاضِرًا، وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ۝ (پاره-۱۵)

क्या हो गया इस रजिस्टर को कि छोटी-बड़ी कोई चीज़ नहीं छोड़ी। और जो कुछ किया वह सारा सामने आ गया। और अल्लाह पाक किसी के ऊपर ज़ुल्म नहीं करता।

ये सारी आयतें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने थीं। वह हिचकियाँ मार-मारकर रोये। फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई उसमें भी हिचकियाँ बंधी हुई थीं।

हज़रत उमर का फ़रमान

जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो अपने काम करने वालों को जमा करके यूँ कहा कि न मालूम कितने बच्चे रो रहे होंगे, बच्चों का वज़ीफ़ा पैदा होते ही मुक़र्रर कर दिया जाए। और हर जगह इस तरह के फ़रमान के पत्र लिख दिए जाएँ ताकि कोई माँ अपने बच्चे को रुलाए नहीं। तो हज़रत उमर की सख़्ती की नक़ल तो लोग उतारते हैं लेकिन उनके तक़्वे और परहेज़गारी की नक़ल नहीं उतारते।

इसलिए मेरे दोस्तो और बुज़ुर्गो! इस तक़्वा को हमें अपने अ़न्दर पैदा करना है और जैसे वह अल्लाह के रास्ते में जाने वाला, उसकी बीवी और बच्चे सबने क़ुरबानियाँ दीं और उनकी क़ुरबानी के ऊपर पूरा इलाक़ा काम के ऊपर खड़ा हो गया, हम और आप भी चारों तरफ़ और पूरे आ़लम में फैल जाएँ और हर तरफ़ काम करें।

मेहनत चारों तरफ़

हम एक तरफ़ मक़ामी काम भी करें। घर वालों को नमाज़ की ताकीद करें, हमारी अपनी नमाज़ भी कभी ज़ाया न होने पाए। ख़ूब ख़ुशू व ख़ुज़ू (ध्यान और आ़जिज़ी) वाली नमाज़ें हम पढ़ रहे हों, घरों

के अन्दर तालीम के हल्क़े हों और ढाई घन्टे मस्जिद को आबाद करने के लिए दे रहे हों। गश्त भी कर रहे हों और रातों को उठकर खुदा के सामने रो भी रहे हों।

जमाअ़तों में फिरकर नबियों वाला ग़म पैदा करें

मेरे मोहतरम दोस्तो! चारों तरफ़ से लोग मर-मरकर जहन्नम के अन्दर जा रहे हैं और हमारे दिलों में इसकी फ़िक्र न हो। ऐसी बेफ़िक्री नहीं होनी चाहिए।

अल्लाह के नबियों वाला दर्द, नबियों वाला ग़म, नबियों वाली बेचैनी जमाअ़तों में फिरकर हमें अपने अन्दर पैदा करनी चाहिए। यह नबियों वाली बेचैनी और नबियों वाला जो ग़म होगा वह काम करवाएगा, कम सलाहियत वाले से भी ज़्यादा सलाहियत वाले से भी, कम माल वाले से भी और ज़्यादा माल वालों से भी, कम इल्म वालों से भी और ज़्यादा इल्म वालों से भी, काम लेने वाले अल्लाह हैं।

जमकर बैठें और मजमे को जमाने का सवाब लें

अब आप हज़रात से मेरी गुज़ारिश है कि जैसे जमकर आप हज़रात ने बयान सुना, अब हमें तश्कील करनी है। इस तश्कील के अन्दर भी आप हज़रात को जमकर बैठना है। अगर आप जमकर बैठे और आपके बैठने की वजह से तश्कील क़ाबू में आ गई तो इन्शा-अल्लाह आपको इसका सवाब मिलेगा। और उसे क़ियामत के दिन आप अपनी आँखों से देख लेंगे।

जमकर बैठो। मजमे के जमाने का सवाब लो। और उठकर मजमे को उखाड़ने वाले न बनो।

मस्जिद के बाहर एक बहुत बड़ा मजमा हमारे प्यारे दोस्तों का है। न मालूम उनको कितनी ठंडक लग रही होगी। अल्लाह पाक उनकी इस क़ुरबानी को क़बूल करे। वहाँ पर भी तश्कील करने वाले काग़ज़-क़लम लेकर पहुँच जाएँ। और लोग खड़े हो-होकर चार-चार

महीने के नाम लिखवाएँ छह-छह महीने के, आठ-आठ महीने के, साल-साल के, डेढ़-डेढ़ साल के नाम लिखवाएँ।

जो लोग पहले नाम लिखवा चुके हैं और उनकी तरतीब भी बन चुकी वे लोग मेहरबानी करके नाम न लिखवाएँ। इस वक़्त तो वे लोग अपना नाम लिखवाएँ जो नये हैं।

मेरी दिली दुआएँ

जो भी इस वक़्त में नाम लिखवाए जो भी अपने वक़्त को बढ़ाए मेरा जी चाहता है कि उनके लिए हम दुआ करें कि ऐ अल्लाह! उनके जान व माल में, उनके ईमान में, उनकी आबरू में, उनके घर में, उनके कारोबार में, उनकी हर लाईन में अल्लाह पाक बरकत नसीब फ़रमाए। और अल्लाह पाक उनकी दुनिया व आख़िरत की ज़रूरतों को आफ़ियत (चैन-सुकून) के साथ ग़ैबी तरीक़े पर पूरा फ़रमाए।

यह दुआ उन लोगों के लिए है जो आए थे सिर्फ़ बयान सुनने और खड़े होकर तीन चिल्ले लिखवा दिये। या जो आया था एक चिल्ले के लिए और खड़े होकर तीन चिल्ले लिखवा दिये। अब खड़े हो-होकर अपने नाम लिखवाओ। अल्लाह क़बूल करे। चारों तरफ़ से आवाज़ें आएँ और चारों तरफ़ से नाम आएँ।

और तुम लोग सारे के सारे जमकर बैठे रहो, जी चाहता है कि तुम्हारे लिए भी यह दुआ करूँ कि अल्लाह पाक तुम्हें बैठने का बहुत बड़ा बदला दुनिया व आख़िरत में नसीब फ़रमाए। क्योंकि तुमने हम पर रहम किया..... और बोलो भाई..... नया नाम चाहिए और अगर पुराना नाम हो तो वक़्त बढ़ाकर बोलें।

चार-चार महीने के ढेर लगा दो। ताकि पूरे मुल्क में पैदल जमाअ़तें बनकर जा सकें इन्शा-अल्लाह..... अल्लाह पाक कामिल और पूरी क़ुदरत वाला है।

लोगों को कलिमे भी याद नहीं। नमाज़ भी याद नहीं। ख़ुशनसीबी होगी, बोलते रहो भाई।

दुआ

اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ، الٓمّٓ ، اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ، وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ، يَآ اَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ o رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ o رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ، اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ۔

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنَّا، اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مِنْهُ مَالَمْ نَعْلَمْ۔

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَاسَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ o

ऐ अल्लाह! तू हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमारी तमाम ग़लतियों से दरगुज़र फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम तेरे क़ुसूरवार बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! हम तेरे ख़तावार बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! तू हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे।

ऐ अल्लाह! यह पूरा का पूरा मजमा तेरे सामने हाथ फैलाए बैठा है। ऐ अल्लाह! इसके हाथ फैलाने को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू रुश्द व हिदायत के और रहमतों के दरवाज़े खोल दे। मुसीबतों, बलाओं, परेशानियों और गुमराही व बेदीनी के दरवाज़ों को बन्द फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू ज़ल्ज़लों से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू ख़ून बहाने से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हवा के तूफ़ान से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमारा बन जा और हमें अपना बना ले।

ऐ अल्लाह! हम सब का अपने-अपने वक़्त पर ईमान पर ख़ात्मा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम कमज़ोर हैं, हम ज़ईफ़ हैं,

ऐ अल्लाह! तू ज़ईफ़ों का रब है।

ऐ अल्लाह! तू हमारे हाल पर रहम व करम का मामला फ़रमा।

ऐ अल्लाह! पूरे आ़लम के अन्दर दीन के फैलने की ग़ैब से सूरतें पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तेरे करोड़ों बन्दे बग़ैर ईमान के जी रहे हैं।

ऐ अल्लाह! तू ऐसी ग़ैबी सूरतें पैदा फ़रमा कि जो ईमान वाले नहीं हैं वे ईमान वाले बन जाएँ।

ऐ अल्लाह! हम लोगों के ईमान के अन्दर तू ताक़त पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! मज़बूती पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! दुनिया की क़ौमों की हिदायत के फ़ैसले फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हज़रत जी (हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहिब) दामत बरकातुहूम (1) को सेहत व ताक़त और हिम्मत व आ़फ़ियत अपने लुत्फ़ व करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू बीमारों को मुकम्मल शिफ़ा अ़ता फ़रमा और जल्द अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! परेशान हाल की परेशानियों को दूर फ़रमा।

ऐ अल्लाह! क़र्ज़दारों के क़र्ज़ों की अदायगी की ग़ैब से सूरतें पैदा फ़रमा।

(1) हज़रत का इन्तिक़ाल हो चुका है। अल्लाह तआ़ला जन्नतुल फ़िरदौस में आ़ला मक़ाम से नवाज़े। आमीन

ऐ अल्लाह! जो लड़के और लड़कियाँ शादी के क़ाबिल हों, उनके लिए बेहतरीन जोड़ा तू अपने करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जिन-जिन लोगों ने ज़बान से दुआओं के लिए कहा हो या ख़त लिखा हो या इसके तलबगार रहे, ऐ अल्लाह! तू उन सब की और हम सबकी दुनिया व आख़िरत की ज़रूरतों को आफ़ियत के साथ ग़ैबी तरीक़े पर पूरी फ़रमा। और उन सब की और हम सब की दुनिया व आख़िरत की परेशानियों को आफ़ियत के साथ ग़ैबी तरीक़े पर, तू ख़त्म फ़रमा। और इसकी क़द्रदानी तू नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! पूरे आलम के अन्दर इस वक़्त जो हालात हैं, ऐ अल्लाह! बड़े परेशान करने वाले हालात हैं। ऐ अल्लाह! तू ही उन परेशानियों को दूर कर सकता है।

ऐ अल्लाह! आख़िरत की फ़िज़ा पूरे आलम के अन्दर बनने लगे। ईमान की फ़िज़ा बनने लगे। ईमान की हवाएँ चलने लगें। ऐ अल्लाह! हिदायत क़ायम होने लगे। ऐ अल्लाह! तू हिदायत की सूरतें पैदा फ़रमा।

उसके लिए जो हठधर्मी करने वाले और जो ज़िद्दी क़िस्म के लोग हैं, जो इसमें रोड़ा बनते हैं, रुकावट बनते हैं और उनके दिलों पर मोहरें लगी हुई हैं। ऐ अल्लाह! तू उनके सरग़नों (बड़ों) को और उनके जत्थों को और इसी तरह उनके अड्डों को नेस्त-नाबूद फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू क़ादिरे मुतलक़ है।

ऐ अल्लाह! तू बातिल को नेस्त-नाबूद फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हक़ को पूरे आलम के अन्दर चालू फ़रमा।

ऐ अल्लाह! बातिल की आवाज़ों को बे-असर फ़रमा। और हक़ वाली आवाज़ असर डालने वाली (प्रभावकारी) फ़रमा।

ऐ अल्लाह! यह पूरा मजमा दो दिन से मुस्तक़िल तेरे दीन की बातों को सुन रहा है। और शौक़ से सुन रहा है।

और सुनता ही नहीं बल्कि अमल के लिए भी खड़ा हो रहा है।

ऐ अल्लाह! इनके सुनने और बैठने को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! न मालूम कौन तुझे कितना पसन्द आ चुका हो, इसको हम नहीं जानते। ऐ अल्लाह! तू अपनी नाराज़गी से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

अपनी रज़ामन्दी हमें नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अगर तू नाराज़ हो गया तो हमारा कोई ठिकाना नहीं है।

ऐ अल्लाह! आज तक तेरे नाराज़ करने वाले काम हमसे जितने भी हुए हैं तू अपने फ़ज़्ल से उन्हें माफ़ फ़रमा।

और तेरे राज़ी करने वाले काम तेरी मेहरबानी से जितने भी हुए हैं, तू अपने फ़ज़्ल व करम से क़बूल फ़रमा।

और आगे भी ऐ अल्लाह पूरी ज़िन्दगी तेरे को राज़ी करने वाले कामों की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा।

और तेरे को नाराज़ करने वाले कामों से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम सब के बाप-दादों की, नाना-नीनी और दादा-दादी और जितनी भी ऊपर की पुश्तें इस्लाम की हालत के अन्दर गुज़र चुकी हैं, ऐ अल्लाह! तू उनको क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमा। और उनकी क़ब्रों को नूर से रोशन फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हमारी क़ियामत तक आने वाली नस्लों को दीन की दावत के लिए क़बूल फ़रमा।

हमें नमाज़ों को उनके आदाब के साथ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! दुनिया की मुहब्बत को हमारे दिलों से आफ़ियत के साथ निकाल दे। और ऐ अल्लाह! आख़िरत की फ़िक्र हमारे दिलों के अन्दर आफ़ियत के साथ पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! नाहक़ की तरफ़दारी और हक़-तल्फ़ी से ऐ अल्लाह!

तू हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू दुश्मनों के हम पर हंसने से हमारी पूरी-पूरी हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमें अपनी रहमत के दामन में ले ले।

ऐ अल्लाह! हम तेरे कमज़ोर बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! जो कुछ हमें माँगना चाहिए था, वह हम माँग नहीं सके, बग़ैर माँगे तू हमें अपने फ़ज़्ल व करम से इनायत फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जहाँ-जहाँ बारिश की ज़रूरत है, वहाँ पर रहमत की बारिश अपने लुत्फ़ व करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जहाँ-जहाँ लोग परेशान हैं, मुसीबत में हैं, ऐ अल्लाह! उनकी मुसीबतों को अपने लुत्फ़ व करम से तू दूर फ़रमा।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ o وَ تُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ o اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَ سَلِّمْ، سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ o وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउ़ल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्-व बारिक् व सल्लिम्। सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल् इ़ज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ून। व सलामुन् अ़लल् मुर्सलीन। वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।

तक़रीर (2)

यह तक़रीर 2 नवम्बर 1990 ई० को बंगले वाली मस्जिद देहली में हुई।

जो अल्लाह से डरने वाले और अपने परवर्दिगार से डरने वाले हैं, उनकी जमाअ़तें बन-बनकर जन्नत की तरफ़ चलेंगी। और जन्नत के दरवाज़े पहले से उन्हें खुले मिलेंगे और पहरेदार फ़रिश्ते यूँ कहेंगे:

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ٥ (پاره– ٢٤)

सलाम पहुँचे तुम पर, तुम लोग पाकीज़ा हो। सो दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा-हमेश रहने के लिए।

नींद तो पूरी हो जाएगी क़ब्र के अन्दर, नाश्ता मिलेगा अ़र्श के साए के नीचे, पानी मिलेगा हौज़े-कौसर का। और दोपहर का खाना मिलेगा जन्नत में, और रात वहाँ आएगी नहीं। अब हमेशा के लिए मज़े उड़ाओ क्योंकि तुमने अल्लाह को रब माना। अल्लाह ज़रूरतें पूरी करते थे वह तुमने अल्लाह की मेहरबानी समझी। और ज़मीन व आसमान देखकर तुमने अल्लाह को पहचाना। हर हाल में तुमने अल्लाह का शुक्र अदा किया और अपने बदन को तुमने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल किया।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

तक़रीर (2)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! दिलों के अन्दर अल्लाह की रबूबियत (यानी उसके रब होने) का यक़ीन अगर उतर जाए तो सारे दीन पर चलना आसान हो, और दुनिया के अन्दर की बलाएँ भी अल्लाह दूर फ़रमाए। आख़िरत की तकलीफ़ों से भी अल्लाह महफ़ूज़ रखे। और दुनिया के अन्दर भी अल्लाह नेमतों के दरवाज़े खोले और आख़िरत के अन्दर भी अल्लाह जन्नत इनायत फ़रमाए।

अ़हदे अलस्त

'रूहों के आ़लम' के अन्दर सारे लोगों को जमा करके अल्लाह ने पूछा था: "अलस्तु बि-रब्बिकुम्" (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? तुम्हारा पालने वाला नहीं हूँ?) तो सब की रूहों ने कहा कि तू हमारा रब है।

अबू जहल और फ़िरऔ़न की रूहों ने भी यह कहा। ईमान वालों

की रूहों ने भी यह कहा। इसलिए कि वहाँ पर अल्लाह ही थे। इम्तिहान की कोई चीज़ नहीं थी।

यहाँ इम्तिहान है। जो ज़रूरतें पूरी करने वाले अल्लाह हैं वह दिखाई नहीं देते और जहाँ से ज़रूरतें पूरी होती दिखाई देती हैं हक़ीक़त में वहाँ से ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं। करने वाले अल्लाह हैं, दिखाई देता है असबाब (संसाधनों) में।

ये असबाब यहाँ पर इम्तिहान के दर्जे में हैं। वहाँ पर यह इम्तिहान तो था नहीं। वहाँ पर तो सिर्फ़ अल्लाह ही अल्लाह थे। तो सब की रूहों ने कह दिया कि अल्लाह आप हमारे रब हैं।

قَالُوْا بَلٰى (پارہ– ۹)

सबने कहा बेशक आप हमारे रब हैं।

और इसी तरह जब क़ियामत का दिन आएगा तो ये जितने ज़ाहिरी असबाब और साधन हैं, ये वहाँ पर नहीं होंगे।

दुकान, खेत, घर-बार, सोना-चाँदी, रुपये-पैसे वहाँ नहीं होगा। वहाँ पर अल्लाह ही अल्लाह होंगे और उनका ग़ैबी निज़ाम।

अफ़सोस और ना-उम्मीदी

जो आज ग़ैब (आँखों से ओझल) है वह सब खुला हुआ सामने आएगा। उस वक़्त में कट्टर से कट्टर बेईमान और काफ़िर भी अल्लाह को रब कहेगा।

رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ٥ (پارہ–۱۲)

यह काफ़िर कहेगाः

"ऐ हमारे रब! हमारी आँख खुल गई। हमारे कान खुल गए। अब हमको दुनिया में वापस कर दे, अब हम अच्छे काम करेंगे। हमें यक़ीन आ गया"।

अब हमारे सामने बात आ गई कि अच्छे आमाल पर क्या मिलता

है और बुरे आमाल पर क्या बरदाश्त करना पड़ता है। वह हमारे सामने आ गया। दुनिया के अन्दर हमारे कान खुले हुए नहीं थे। और हमारी आँखें खुली हुई नहीं थीं। इस बिना पर हमको दुनिया के अन्दर दिखाई देता था चीज़ों में, और अल्लाह ने रखा था अ़मलों के अन्दर।

नज़र वाले रास्ते से यक़ीन को हटाओ

यह अल्लाह की तरफ़ से इम्तिहान है कि अल्लाह ने रखा है अ़मलों में और दिखाते हैं चीज़ों में, और मुकल्लफ़ (पाबन्द) बनाया है इस बात का कि जहाँ तुम्हें नज़र आता है वहाँ से यक़ीन को हटाओ। और जहाँ की हम ख़बर दे रहे हैं उसपर यक़ीन लाओ। नज़र वाले रास्ते से यक़ीन को हटाओ और ख़बर वाले रास्ते पर यक़ीन को लाओ।

नज़र तो आता है मुल्क व माल और रुपये-पैसे से ज़िन्दगियों का बनना और ख़बर है ज़िन्दगियों में बनने की ईमान और नेक आमाल पर।

नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, सदक़ा व ख़ैरात जो भी अ़मल हम करेंगे उस पर ज़िन्दगी बनेगी, यह ख़बर है।

अब जिन अ़मलों में ज़िन्दगी बनने की ख़बर है। ज़िन्दगी का बनना उसके अन्दर छुपा दिया।

आमाल के ख़राब होने में ज़िन्दगियों का उजड़ना यह भी छुपा हुआ है और आमाल के अच्छे होने में ज़िन्दगियों का बनना छुपा हुआ है। ज़ाहिर होगा उसके वक़्त पर। और असल ज़ाहिर होने का जो वक़्त है वह है मौत का। लेकिन अल्लाह तआ़ला ख़राब अ़मल वाले को किसी मौक़े पर दुनिया में भी अनोखे तरीक़े से पकड़ते हैं। और अच्छे अ़मल करने वाले को किसी मौक़े पर अनोखे ढंग से नवाज़ते हैं। 'अनोखे' का लफ़्ज़ याद रखना।

ज़ाहिरी तरतीब में सब बराबर

एक तो ज़ाहिरी तरतीब है। ज़ाहिरी तरतीब में तो मुसलमान हो या काफ़िर, सब बराबर। बादल सबके खेतों में बरसेगा। अनाज सबके खेतों में होगा। और फल सबके बाग़ीचे में आएँगे। और मुर्ग़ियाँ सबकी अण्डे देंगी। दूध के जानवर सबको दूध देंगे। तो यह ज़ाहिरी तरतीब तो सबके लिए बराबर। एक नबी है उसको भी पत्थर मारा गया तो ख़ून निकला। नबी पर भी जादू किया जाए तो असर होगा। और एक काफ़िर को भी पत्थर मारो तो उसको भी लगेगा। और अगर काफ़िर को भी शहद चटा दो तो शहद उसको भी मीठा मालूम होगा। तो जितनी ज़ाहिरी तरतीब अल्लाह ने दुनिया में क़ायम की है उसमें सबको बराबर कर दिया।

आज का ग़ैब कल आँखों के सामने होगा

लेकिन अल्लाह का जो ग़ैबी निज़ाम है, छुपा हुआ। जिसकी ख़बर नबियों के ज़रिये और आसमानी किताबों के ज़रिये दी वह छुपा हुआ जो ग़ैबी निज़ाम है वह खुलकर मौत के वक़्त सामने आएगा।

आज का जो ग़ैब है यह मौत पर आँखों के सामने होगा। और आज जो दिखाई दे रहा है यह मौत पर छुप जाएगा। आज जो दिखाई देता है वह मौत पर छुपेगा और आज जो छुपा हुआ है वह मौत पर दिखाई देगा।

इस वक़्त में हमारे सामने चीज़ों से ज़िन्दगियों का बनना यह दिखाई देता है लेकिन आमाल अगर ख़राब हों तो ज़िन्दगियों का उजड़ना यह दिखाई नहीं देता। इस वक़्त में फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते, जन्नत और जहन्नम दिखाई नहीं देतीं। लेकिन मौत आई और आदमी क़ब्र में गया तो जो दिखाई देता था वह बन्द हो गया। मुल्क और माल से जो ज़िन्दगी बनती दिखाई देती थी और जिस पर आपस में

लड़ाई-झगड़े, फ़ितने-फ़साद होते थे वह सारा का सारा मौत के वक़्त में बे-असर हो गया।

क़ब्र के साँप को दुनिया का डंडा नहीं मार सकता

अब क़ब्र के अन्दर अगर साँप आए तो दुनिया का डंडा उसे मार नहीं सकता। क़ब्र में जो आग लगी तो दुनिया का पानी उसे बुझा नहीं सकता। क़ब्र के अन्दर अंधेरा आ गया तो दुनिया की लाईट उसमें उजाला नहीं ला सकती।

इन सारी चीज़ों से काम न बनना यह मौत पर समझ में आ गया। और आमाल से काम का बनना यह भी समझ में आ गया।

असल कामयाबी नमाज़ पढ़ने में है

अगर मैं नमाज़ पढ़ता तो दाहिनी तरफ़ से जो अ़ज़ाब आया है, नमाज़ उसे रोकती। लेकिन आदमी ने नमाज़ को छोड़कर लाख रुपये का ड्राफ़्ट निबटाया।

नमाज़ी ने तो लाख छोड़ा, नमाज़ पढ़ी, और बेनमाज़ी ने नमाज़ छोड़ी और लाख रुपया लिया। तो मौजूदा ज़माने में तो लाख वाला बड़ा कामयाब दिखाई दिया और नमाज़ पढ़ने वाले की जेब में पाँच पैसे भी नहीं आए।

लेकिन नमाज़ के अन्दर जो कामयाबी है वह छुपी हुई है। जो क़ब्र में ज़ाहिर होगी। और लाख रुपये लेकर जो नमाज़ छोड़ी उसके ऊपर जो बरबादी है यह भी छुपी हुई है, यह क़ब्र के अन्दर सामने आएगा।

क़ब्र के अन्दर जब दाहिनी तरफ़ से अ़ज़ाब आया तो नमाज़ रोकती, वह थी नहीं, और लाख रुपया जो है वह यहाँ काम नहीं आता, तो मरने के वक़्त तो सब की समझ में आ गया। लेकिन मरने के वक़्त जो समझा तो काम का नहीं। तो आदमी क़ियामत के दिन कहेगा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी आँख खुल गई।

ग़ैब पर ईमान लाना क्या है?

जैसे पहली रात का चाँद देखने के लिए खड़े हुए। एक आदमी तेज़ निगाह वाला, एक आदमी कमज़ोर निगाह वाला। तेज़ निगाह वाले ने बताया कि देखो वह चाँद है। कमज़ोर निगाह वाला कहता है कि भाई मेरे को तो दिखाई नहीं देता। वह कहता है कि पेड़ के ऊपर बादल के बीच में देख ले। बोले पेड़ दिखाई देता है, बादल दिखाई देता है, चाँद नहीं दिखाई देता।

अब यह कहने लगा कि झूठे! चाँद कहाँ है। दिखाई तो देता नहीं। मग़रिब की नमाज़ के बाद गए ज़रा मतला (उदयस्थल) साफ़ हो गया। बोले इधर आ, दिखाई दे रहा है? जी हाँ! दिखाई दे रहा है, तू सच्चा है।

तो उस आदमी ने उसकी ख़बर को सच्चा नहीं माना बल्कि अपनी नज़र को सच्चा माना। आदमी की ख़बर को सच्चा मानता तो जब चाँद नहीं दिखाई देता था उस वक़्त भी कहता कि भाई! मेरी निगाह कमज़ोर है और तू है सच्चा। तो आज अगर इसने नबी की बात को और अल्लाह तआला की बात को सच्चा माना इसके बावजूद कि जन्नत और जहन्नम दिखाई नहीं देते, फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते, तो फिर उसकी क़ीमत अल्लाह देंगे। उसपर अल्लाह दुनिया में भी हालात बनाएँगे और मरने के बाद के भी हालात बनेंगे।

जो अल्लाह व रसूल की बात को सच्चा माने इसका नाम "ईमान बिल्ग़ैब" (ग़ैब पर ईमान लाना) है।

हिमालय पहाड़ बड़ा है, राई का दाना नहीं

हिमालय पहाड़ बहुत बड़ा है। लेकिन अगर आप अपनी दोनों आँखों के अन्दर राई का दाना डाल दें। एक राई का दाना इधर और एक राई का दाना उधर। अब उसके बाद पहाड़ को देखें, वह पहाड़

दिखाई नहीं देगा। तो अगर कोई कम-समझ आदमी यूँ कहे कि राई का दाना इतना बड़ा, इतना बड़ा कि हिमालय पहाड़ से भी बड़ा। वह कैसे? इसलिए कि राई का दाना आ गया तो हिमालय पहाड़ दिखाई नहीं देता। तो हिमालय पहाड़ से राई का दाना बड़ा।

इसी तरह आमाल पर जो आख़िरत में जन्नत मिलेगी और जो आख़िरत में बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे उसका मुक़ाबला इस दुनिया के साथ पड़ जाए तो यह कम-समझ आदमी इसके दिल की आँख बन्द है वह भी इस दुनिया को बड़ा समझता है। जिसकी हैसियत एक मच्छर के पर के बराबर भी नहीं।

जब मुक़ाबला पड़ गया आमाल का और चीज़ों का तो यह चीज़ों को लेता है, आमाल को छोड़ता है। क्योंकि आमाल के अन्दर जो कामयाबी है वह ओझल बन गई। इस दुनिया की वजह से जो मच्छर के बराबर भी नहीं, वह इस दुनिया को बहुत बड़ी चीज़ समझता है। जैसे उसने राई के दाने को बड़ा समझा।

राई के दाने की वजह से जो हिमालय पहाड़ दिखाई नहीं देता तो उससे कहा जाएगा कि भाई राई का दाना बड़ा नहीं। तू यूँ मत कह कि राई का दाना हिमालय पहाड़ से बड़ा है। यह राई के दाने की बड़ाई नहीं, यह तेरी आँख की छोटाई है। तेरी आँख इतनी छोटी है कि राई का दाना तेरी आँख में आ जाए तो हिमालय पहाड़ भी न दिखाई दे, तो यह तेरी आँखों की छोटाई है, राई के दानों की बड़ाई नहीं।

समझ का फ़र्क़

यह तेरी समझ की कमज़ोरी है। यह दुनिया बड़ी नहीं। दुनिया तो मच्छर के पर के बराबर भी नहीं। और यह बात मरने के वक़्त फ़िरऔन की भी समझ में आ गई। अबू जहल की समझ में भी आ गई। लेकिन उस वक़्त का समझ में आना बेकार। उस वक़्त अगर माना तो उसने अपनी नज़र को माना। अल्लाह व रसूल की ख़बर को

नहीं माना।

क़ियामत के दिन यह सारा पर्दा साफ़ हो जाएगा और जो आज दुनिया का पर्दा आँखों के सामने है वह क़ियामत के दिन साफ़ हो जाएगा।

अल्लाह तआला कहते हैं:

فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ٥ (پاره-٢٦)

हमने पर्दा हटा लिया तो तेरी आँख बहुत तेज़ी के साथ देख रही है, जन्नत को, जहन्नम को, और आमाल की तासीर को।

अनोखी मदद

मेरे मोहतरम दोस्तो! अच्छे अ़मलों के अन्दर अल्लाह की मदद का आना छुपा हुआ है। बुरे अ़मलों के अन्दर अल्लाह की पकड़ का आना यह भी छुपा हुआ है।

लेकिन अल्लाह तआला दुनिया के अन्दर भी भले काम करने वालों को अनोखी मदद दिखा देते हैं। अनोखी मदद देखकर उसकी क़द्र करनी चाहिए। और अगर अनोखी मदद देखकर आदमी उसकी क़द्र न करे तो फिर उस पर वबाल आता है। जैसे अनोखे तरीक़े पर अल्लाह ने आसमान से खाना उतारा ईसा अ़लैहिस्सलाम के कहने पर जब यह उनके साथियों ने कहा, जब वह आसमान का खाना आया तो उन्होंने नाक़द्री की तो उनके ऊपर वबाल आया।

अनोखे तरीक़े पर जो मदद आती है उसकी क़द्र करनी भी बहुत ज़रूरी है। और उसकी क़द्र करना क्या है? उसकी क़द्र करना अल्लाह का शुक्र करके और ज़्यादा अल्लाह की बात का मानना है। यह उसकी क़द्र करना है।

साहिबे मक़ाम की सोच और फ़िक्र

एक आदमी दिल्ली का रहने वाला है। उसके सामने लाल क़िला,

कुतुब मीनार और चाँदनी चौक, ये चीज़ें रोज़ाना उसके सामने आती हैं। गुज़रता है और देख लेता है।

लेकिन जो आदमी बाहर का है कभी दिल्ली आया। अब वह जो देखने गया जब फिर वापस जाएगा तो हर वक़्त उसके तज़किरे करेगा कि साहिब वहाँ की चाँदनी चौक ऐसी, वहाँ का कुतुब मीनार ऐसा और वहाँ का लाल क़िला ऐसा। एक आदमी जो उसी जगह पर रहता है उसका अन्दाज़ अलग है। तो दीन का काम करते-करते अगर साहिबे मक़ाम बन जाए तो हर वक़्त उसके साथ मददें ही मददें होती रहेंगी। और उसे इस पर ताज्जुब इसलिए नहीं होगा क्योंकि यह तो अल्लाह का वायदा है, यह तो होना ही चाहिए। अल्लाह ने जो चाहा वह हो गया। तो इस पर उसमें तकब्बुर पैदा नहीं होगा।

और एक आदमी के साथ कभी-कभार कोई अनोखी मदद हो गई, झलक देख ली। और यह आदमी साहिबे मक़ाम नहीं है। जैसे एक तो दिल्ली का रहने वाला है और एक कभी-कभार आने वाला है।

इसी तरह दीन का काम करने वालों में एक बनता है साहिबे मक़ाम, तो उसके साथ दिन-रात मददें आती हैं, और मददों पर उसके दिल के अन्दर तकब्बुर और बड़ाई नहीं पैदा होती।

वह समझता है ''हय्-य अ़लस्सलाति'' और ''हय्-य अ़लल्-फ़लाहि'' का मफ़हूम कि नमाज़ पढ़ो, कामयाबी मिलेगी। अल्लाह ने कह दिया तो कामयाबी मिलना तय है। क़र्ज़े की अदायगी की दुआ़ हमने माँगी, अल्लाह ने क़र्ज़ा अदा कर दिया। क्योंकि नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَنْ مَّنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्मक्फ़िनी बि-हलालि-क अ़न् हरामि-क व अग़्निनी बि-फ़ज़्लि-क अ़म्मन् सिवा-क।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हराम से बचाते हुए अपने हलाल ज़रिये से तू मेरी किफ़ायत फ़रमा! और अपने फ़ज़्ल के ज़रिये तू मुझे अपने

अ़लावा हर किसी से बेपरवाह फ़रमा दे।

जो आदमी यह पढ़ेगा, उसका क़र्ज़ा अदा होगा। और मैंने यह दुआ़ पढ़ी, अल्लाह ने क़र्ज़ा अदा कर दिया। तो यह अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो कहा वह हो गया। दुआ़ माँगी और काम बन गया।

तो दीन का काम करते-करते जो साहिबे मक़ाम बन जाए दिन-रात उसके लिए मददें आयेंगी। लेकिन अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि उसके अन्दर फ़ख़्र, तकब्बुर और दिखावा वग़ैरह पैदा नहीं होगा।

मैं बुज़ुर्ग बन गया

और जब कभी-कभार कोई झलक मदद की देख ली, तो हर दम उसी का तज़किरा करता रहेगा। जहाँ बैठेगा, मैं फ़लाँ जगह जमाअ़त में गया था वहाँ यूँ हुआ। और मैं इतने काम छोड़कर गया था। जब वापस लौटा तो सब काम बन गए। अब फ़ख़्र के तौर पर हर जगह इसी को बयान करता रहेगा। और उसके अन्दर बड़ाई के आने का ख़तरा है।

और जो साहिबे मक़ाम होगा उसके अन्दर यह बात नहीं होगी। और जब साहिबे मक़ाम नहीं होगा तो उसकी दुआ़ पर काम बना तो समझेगा कि मैं बुज़ुर्ग बन गया। ज़बान से तो नहीं कहेगा कि मैं बुज़ुर्ग बन गया लेकिन दिल के अन्दर ख़्याल करेगा कि अब तो मैं कुछ बन गया।

चीज़ों में तासीर..... इनसान का तजुर्बा

और अ़मल में तासीर..... ख़ुदा का वायदा

लेकिन आपने कभी नहीं देखा होगा कि एक आदमी शहद मुँह में डाले और उसका मुँह मीठा हो जाए तो वह यूँ कहे कि साहिब! मैं

बहुत बड़ा बुज़ुर्ग बन गया।

वह कैसे?

इसलिए कि शहद मुँह में जाते ही मेरा मुँह मीठा हो जाता है। और मैं बर्फ़ के पास जाता हूँ तो मेरे को ठंडक लगती है। और मैं आग के पास जाता हूँ तो मेरे को गर्मी मिलती है। और जब ख़ुशबू वाले की दुकान पर जाता हूँ तो मेरे को ख़ुशबू मिलती है। मैं बुज़ुर्ग बन गया।

अल्लाह के बन्दे! ख़ुशबू तेरे को आने लगी, और आग से गर्मी आने लगी तो इसमें बुज़ुर्ग कैसे बना?

कोई ऐसा कहता भी नहीं, लेकिन अगर नमाज़ पढ़ने पर काम बना तो यहाँ यह आ जाता है कि मैं बुज़ुर्ग बन गया।

चीज़ों के अन्दर की तासीर तो इनसान का तजुर्बा और अ़मल के अन्दर की तासीर ख़ुदा का वायदा है। अब ख़ुदा का वायदा अगर पूरा हुआ तो उसपर यह यूँ समझने लगता है कि मैं बुज़ुर्ग बन गया।

अब जब बुज़ुर्ग बनने का ख़्याल शैतान ने दिल के अन्दर डाला तब यहीं से यह गिरना शुरू हुआ।

अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

لَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ (پارہ– ۲۷)

अपने आप को बुज़ुर्ग मत समझो। अपने आपको यूँ न समझो कि मैं बहुत पाक-साफ़ बन गया।

यह अल्लाह ही जानता है:

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى (پارہ– ۲۷)

तक़्वे वाला (परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाला) कौन है, यह अल्लाह ही जानता है।

कमी और कोताही की तलाश

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब दीन का काम करते रहोगे और उसके

अन्दर अल्लाह की तरफ़ से आज़माईश की घाटियाँ भी आती रहती हैं। अगर उन आज़माईश की घाटियों के अन्दर भी इनसान जमा रहा और लगा रहा, फिर अल्लाह की मदद आई, फिर आज़माईश की घाटी आई, फिर अल्लाह की मदद आई। फिर आज़माईश की घाटी आई तो अल्लाह तआला वह दिन लायेंगे कि आदमी साहिब मक़ाम बने।

और साहिबे मक़ाम बन जाने के बाद अगर आमाल के ज़रिये उसके काम न बने तो यह आदमी फ़ौरन सोचेगा कि मेरे आमाल में कमी कहाँ से आई। इसको यह शुब्हा नहीं होगा कि साहिब! मैंने फ़लाँ अ़मल किया फिर भी उसका असर नहीं ज़ाहिर हुआ। मैंने दुआ़ माँगी फिर भी मेरा काम नहीं बना। और मैं नमाज़ पढ़ रहा हूँ फिर भी मुझे कामयाबी नहीं मिली। और मैं क़र्ज़े की अदायगी की दुआ़ माँगता हूँ फिर भी मेरा क़र्ज़ा अदा नहीं होता..... यह उसकी ज़बान पर नहीं आएगा। उसकी ज़बान पर क्या आएगा?

मैं अ़मल कर रहा हूँ लेकिन उस अ़मल की तासीर ज़ाहिर नहीं होती। मालूम ऐसा होता है कि मेरे अ़मल में कोताही और कमी है।

कोताही और कमी की तलाश में लगे और कोताही की तलाश करते-करते अगर आदमी तौबा व इस्तिग़फ़ार करे, और अगर यह तौबा व इस्तिग़फ़ार आदमी को करनी आ गई तो मैं सच कहता हूँ कि वह सारी कोताही को साफ़ कर देगा।

तो भाई कोताही को ढूँढते रहो। उसको ठीक भी करते रहो। अल्लाह से माँगते भी रहो। आदमी जब तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है। और आदमी जब गिड़गिड़ाता है और बिलबिलाता है तो वह सारी कमी और कोताही जो है अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा व इस्तिग़फ़ार से पाक व साफ़ करके उसको बहुत ऊँचे मुक़ाम पर ले जाते हैं।

अल्लाह का पसन्दीदा बन्दा

वह गुनाहगार जो शर्मिन्दगी के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार करके अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाये वह अल्लाह को बहुत ज़्यादा पसन्द है,

उस दीन का काम करने वाले के मुक़ाबले में जिसको दीन का काम करके तकब्बुर और घमंड पैदा हो।

एक आदमी दीन का काम कर रहा है, और उसके अन्दर फ़ख़्र पैदा हो गया तो यह अल्लाह तआला के नज़दीक नीचे उतरेगा। और वह आदमी है तो गुनाहगार, लेकिन उसके अन्दर नदामत (शर्मिन्दगी) पैदा हो गई और वह गिड़गिड़ाने लगा तो यह अल्लाह तआला के नज़दीक मक़बूल हो गया।

दावत की फ़िज़ा किस लिए?

यह जो दावत की फ़िज़ा है। यह इसलिए है कि उसके अन्दर अल्लाह को बार-बार बोलते, सुनते ग़ैब का यक़ीन और छुपी हुई चीज़ों का यक़ीन दिल के अन्दर आ जाए।

यही बदन है सवा पाँच फ़िट का। इसका इस्तेमाल अगर क़ुरआन व हदीस के मुवाफ़िक़ हुआ, तो इसके अन्दर अल्लाह की मददें छुपी हुई हैं। और इसका इस्तेमाल अगर क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ हुआ तो इसमें अल्लाह की तरफ़ से पकड़ छुपी हुई है। इसमें मदद भी छुपी हुई है और पकड़ भी छुपी हुई है। और यह आदमी को मालूम होगा मौत के वक़्त। दुनिया के अन्दर तो कभी-कभार और मौत के वक़्त में तो बिल्कुल पक्की।

दिया सलाई का करिश्मा

मैं इसकी एक मिसाल दूँ। दिया सलाई है दिया सलाई। इसके अन्दर बिरयानी की देगें भी छुपी हुई हैं..... दिया सलाई जलाई और लकड़ी सुलगाई उस लकड़ी से और लकड़ी। फिर और लकड़ी जलाई तो पाँच हज़ार बिरयानी की देगें उस दिया सलाई के अन्दर छुपी हुई हैं, जब उसको सही तरतीब से इस्तेमाल किया गया।

और इसी दिया सलाई के अन्दर आग के शोले भी छुपे हुए हैं।

पचास लाख गैलन पैट्रोल का बहुत बड़ा टेंकर है। उसमें सोलह साल के लड़के ने एक दिया सलाई जलाकर डाल दी। फिर उसके अन्दर एक लकड़ी लगाकर जहाँ पलास्टिक की दुकानें थीं वहाँ पर डाल दिया। अब वहाँ से भी शोले शुरू हो गये। फिर उसमें लकड़ी लगाकर रूई का जो गोदाम था उसके अन्दर डाल दिया, अब शोले पर शोले, चारों तरफ़ आग ही आग।

तो इस दिया सलाई के अन्दर आग के शोले भी छुपे हुए हैं और इस दिया सलाई के अन्दर बिरयानी की हज़ारों देगें भी छुपी हुई हैं।

आदमी के इस्तेमाल के तरीक़े पर अगला सारा निज़ाम चलता है।

ग़ैबी मदद और पकड़ की बुनियाद

बिल्कुल दिया सलाई की तरह यह हमारा बदन है। इसी बदन के अन्दर, इस्तेमाल अगर सही हो गया तो अल्लाह की मदद। और अगर इस्तेमाल ग़लत हो गया तो अल्लाह की पकड़।

लेकिन अल्लाह की मदद और पकड़ का जो असल वक़्त है वह है मौत का। लेकिन कभी-कभार ग़ैबी मदद और ग़ैबी पकड़ अल्लाह तआला दुनिया के अन्दर भी दिखा देते हैं।

जैसे दूसरे ज़मानें में नबियों के मानने वाले थे। तायदाद उनकी थोड़ी, ताक़त उनकी कम, सरमाया उनके पास बहुत थोड़ा, लेकिन उन्होंने अपने बदन का इस्तेमाल नबी के बाताए हुए तरीक़े पर किया तो उनके साथ अल्लाह की मदद आई। शुरू के अन्दर तो कुछ दिखाई नहीं दिया तो दूसरे मज़ाक़ उड़ाने लगे। और आज भी इस तरह के लोग कहते हैं कि:

"तुम कहते हो कि अल्लाह बहुत बड़े हैं। तुम कहते हो कि अल्लाह इतनी बड़ी ताक़त वाले हैं। तुम पिछले वाक़िआत भी सुनाते हो। नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में अल्लाह की मदद कश्ती वालों पर यूँ आई। फ़लाँ ज़माने में यूँ आई। अब तुम्हारे अन्दर क्यों नहीं आ

रही? तुम तो बहुत परेशान हो। तुम्हारी तो हर जगह कटाई होती है, पिटाई होती है, मारा जाता है, तुम्हारी दुकानों में आगें लगाई जाती हैं, तुम्हारे आदमियों को क़त्ल किया जाता है और तुम कहते हो कि अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है।''

अल्लाह सबसे बड़ा है

जब देखो ये बेचारे ''अल्लाह बड़ा है'' की आवाज़ें लगा रहे हैं।

अज़ान में अल्लाह बड़ा। नमाज़ में जब तकबीर कही जाती है तो अल्लाह बड़ा। जब नमाज़ शुरू होती है तो उसके अन्दर हर जगह अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर। रुकूअ़ में जाए तो अल्लाहु अक्बर सज्दे में जाए तो अल्लाहु अक्बर। उठे तो अल्लाहु अक्बर। यहाँ तक कि बच्चा माँ के पेट से आया तो सीधे कान के अन्दर भी अल्लाहु अक्बर और उल्टे कान के अन्दर भी अल्लाहु अक्बर, जनाज़े की नमाज़ हो तो उसके अन्दर अल्लाहु अक्बर। तो तुम लोग अल्लाह को बहुत बड़ा कहते हो हालाँकि तुम अल्लाह को बड़ा कहने वाले इस क़द्र परेशान हो कि दूसरे आकर तुमको मारते हैं, लूटते भी हैं, काटते भी हैं, तुम्हारा मज़ाक़ भी उड़ाते हैं, गालियाँ भी देते हैं। लेकिन तुम हो कि एक ही रट लगी हुई है कि अल्लाह बड़ा है।

ख़ुदा के ख़ज़ाने बेशुमार हैं

तो इतना बड़ा अल्लाह, तुम उसको कहते हो कि आसमान भी बनाया, ज़मीन भी बनाई, चाँद भी बनाया, सूरज भी बनाया और 'मनी' (वीर्य) के दो क़तरों से कितना बढ़िया इनसान भी बनाया, और उस अल्लाह पाक को इतना बड़ा तुम कहते हो कि उसके ख़ज़ाने बेशुमार हैं।

जितने इनसान बनाए अल्लाह ने हर एक को अलग-अलग सूरत दे दी। और हर एक को अल्लाह ने अलग-अलग आवाज़ दे दी। उसके ख़ज़ाने में सूरतें बेशुमार, उसके ख़ज़ाने में आवाज़ें बेशुमार।

रोज़ाना तीन लाख बच्चे पैदा होते हैं और हर बच्चा नई सूरत और नई आवाज़ लेकर दुनिया में आता है। शक्ल भी नई लाता है, आवाज़ भी नई लाता है। और ख़ुदा के ख़ज़ाने से तीन लाख बच्चे छह लाख आँखें भी लेकर पैदा होते हैं लेकिन ख़ुदा के ख़ज़ाने में से आँखों का स्टॉक ख़त्म नहीं हुआ।

तुम्हारे अल्लाह की मदद तुम्हारे लिए क्यों नहीं?

जब तुम कहते हो कि अल्लाह इतना बड़ा है और अल्लाह बड़े ताक़त वाले हैं। इतने ताक़त वाले हैं कि बग़ैर खम्बे के आसमान को थाम रखा है। इतने बड़े अल्लाह की जो अनोखी मददें हैं जिनको तुम पिछले वाक़िआत के अन्दर बताते हो कि किसी पर अनोखी मदद आई इस तरह कि आग को ठण्डा कर दिया और किसी के लिए छुरी को कुन्द कर दिया और किसी को मछली के पेट के अन्दर हज़्म न होने दिया। और किसी की मदद इस तरह आई कि जेलख़ाने से उठाया और मिस्र के सारे ख़ज़ानों का मालिक बना दिया।

ये सारी मददें तुम पिछले ज़माने की बताते हो तो वे मददें तुम्हारे लिए क्यों नहीं आतीं?

क़ुरआनी बातें भी बताते हो और अल्लाह की तारीफ़ भी करते हो, अल्लाह को बड़ा भी कहते हो। अल्लाह बड़ा है यह तुम्हारी ज़बान की नोक पर होता है, तो फिर तुम पर मदद काहे को नहीं आती?

दोस्तो! ये बातें कोई नई नहीं हैं जो हमारे ज़माने में कही जा रही हैं। इस तरह की बातें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में और हर नबी के ज़माने में कही गईं।

लोगों को अल्लाह की पकड़ से डराओ

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब कलिमा-ए-तय्यिबा की दावत देनी शुरू की और अल्लाह की बड़ाई बयान करनी

शुरू की तो "फ़-कब्बिर्" (अल्लाह की बड़ाई बयान कीजिए) के साथ अल्लाह रब्बुल् इज़्ज़त ने "क़ुम् फ़-अन्ज़िर्" भी कहा (कि खड़े हो जाओ और लोगों को डराओ) लोगों को अल्लाह की पकड़ से डराओ। अल्लाह की बात नहीं मानोगे तो अल्लाह की पकड़ को तुम बरदाश्त नहीं कर पाओगे।

और भाई! डराने में तो यही कहेंगे ना..... कि अल्लाह बड़े हैं। नहीं मानोगे तो देखो! जहन्नम होगी उसमें साँप होंगे बिच्छू होंगे। हथकड़ियाँ होंगी। बेड़ियाँ होंगी। भूख-प्यास होगी। पिटाईयाँ होंगी। आग होगी। अंधेरा होगा। अल्लाह से डरो। अल्लाह बहुत बड़ा है।

और अल्लाह से डराने के लिए पिछले वाक़िआत सुनाए जाते हैं। देखो! फ़िरऔन ने अल्लाह की नहीं मानी तो अल्लाह ने कैसी पकड़ की। और देखो! फ़लाँ क़ौम की कैसी पकड़ हुई। तो भाई! तुम भी अल्लाह से डरो।

अल्लाह को एक मानो

अल्लाह को एक मानो। एक से ज़्यादा ख़ुदा न मानो। अगर एक से ज़्यादा ख़ुदा मानोगे तो तुम्हारे जितने अच्छे अ़मल होंगे क़ियामत के दिन उनका बदला तुम्हें नहीं मिलेगा। ये सारी बातें उन्हें समझाते रहे।

ख़राब और खोटे लोगों की बातें

लेकिन जो बग़ैर ईमान वाले खोटे और ख़राब लोग थे उन्होंने उनको तकलीफ़ पहुँचानी शुरू की और हर तरह की तकलीफ़ पहुँचाते रहे। और तक़लीफ़ पहुँचाते-पहुँचाते यह भी कहते थे कि भाई तुम अल्लाह को बड़ा कहते हो कि अल्लाह ऐसा, अल्लाह ऐसा, पिछले वाक़िआत और कहानियाँ भी सुनाते हो, लेकिन वह अल्लाह तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर रहा?

तो मेरे भाई! पिछले लोगों में भी जो ख़राब लोग थे वे भी इसी तरह की बातें करते थे।

क़ौमे नूह का मुतालबा

नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ९५० साल तक यही कहती रही। आख़िर में आकर उसने यूँ कहा:

فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِيْنَ ○ (پارہ– ۱۲)

तुम धमकी देते हो अल्लाह की पकड़ आएगी, अ़ज़ाब आएगा। इसके लिए क़ियामत का इन्तिज़ार कौन करे? अगर तुम सच्चे हो तो लाओ ना। तुम पकड़ यहीं ले आओ।

उसके बाद अल्लाह ने ख़बर दी कि सैलाब आने वाला है तुम कश्ती बनाओ। अब हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कश्ती बनाई तो वे सारे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

पानी का कहीं नाम व निशान नहीं और यह कश्ती बना रहे हैं। तब्लीग़ का काम करते-करते इन्होंने लकड़ी का काम शुरू कर दिया। कर रहे थे तब्लीग़ और बन गए बढ़ई।

वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कहा:

قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ○ (پارہ– ۱۲)

तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो और हम तुम्हारे बारे में ताज्जुब करते हैं कि इतना बड़ा अ़ज़ाब आ रहा है और तुम्हें हंसी सूझ रही है?

और उसके बाद आई अल्लाह की पकड़। ज़ोर की पकड़ आ गई। जब पकड़ आ गई तो कुछ नहीं कर सके।

हर चीज़ का एक वक़्त है

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर क़ुरआन पाक उतरता रहा और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पिछले वाक़िआत सुनाते रहे, और ये ख़राब क़िस्म के लोग उस वक़्त भी कहते रहे:

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ٥ (پارہ– ۷)

"यह तो पुराने लोगों की कहानियाँ हैं"।

और वे लोग कहा करते थे कि तुम्हारा अल्लाह तुम्हारी मदद काहे को नहीं करता?

उन हज़रात ने कहा कि मदद करने का एक वक़्त है और तुम्हारी पकड़ करने का भी वक़्त है। और अल्लाह ने वह वक़्त हमें बताया नहीं। हाँ! इतना कह दिया है कि:

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ٥ (پارہ–۲۷)

मजमा तुम्हारा हारेगा, पीठ फेरकर भागेगा।

यह अल्लाह की ख़बर है:

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ٥ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ٥

وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ٥ (پارہ– ۲۳)

और पहले हो चुका हमारा हुक्म अपने बन्दों के हक़ में जो कि रसूल हैं। बेशक उन्हीं को मदद दी जाती है। और हमारा लश्कर जो है बेशक वही ग़ालिब है।

अल्लाह के लश्कर वाले लोग

और अल्लाह का लश्कर कौन है? जो अल्लाह को एक माने, बड़ा माने और नबियों के तरीक़े पर चले।

पिछले ज़माने में जिन लोगों ने नबियों की बात मानी वे अल्लाह के लश्कर। और क़ियामत तक जो भी नबियों के तरीक़े पर चलेगा वह अल्लाह का लश्कर होगा। हम नबियों वाला काम करें और ऐसे कामों से बचें जिनके करने वाले अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हुए और गुमराह लोगों के कामों से बचें और उन लोगों के जैसे काम करें जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया। हम उन लोगों में से न बनें जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, और उन लोगों में से न बनें जो

रास्ते से भटक गये। हम उन लोगों में से बन जायें जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया, तो जैसी नबियों के साथ अल्लाह की मदद आई वैसी क़ियामत तक आती रहेगी।

करने के तीन काम

हमें तीन काम करने हैं:

एक उन लोगों में से निकलना जो अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दार हैं। दूसरे गुमराह और भटके हुए लोगों से दूर रहना। तीसरे उन लोगों में शामिल होना जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया।

नबियों वाली तरतीब पर तीन चीज़े हैं:

एक तो दीन का सीखना। दूसरे दीन पर चलना और तीसरे दीन के फैलाने की कोशिश करना।

तो जिसने दीन सीखा नहीं और सीखे बग़ैर चला तो उसपर ख़तरा है कि वह कहीं गुमराह न हो जाए।

और एक यह कि दीन को सीख लिया और जान लिया लेकिन वह दीन पर चलता नहीं। इल्म है लेकिन अ़मल नहीं। जानता है लेकिन करता नहीं। तो उसके लिए ख़तरा है कि कहीं वह उन लोगों में शामिल न हो जाये जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ।

कमी और ज़्यादती से बचो

यह ईसाई जो थे उनके अन्दर था 'इफ़रात' (हद से आगे बढ़ना)। और यहूदी जो थे उनके अन्दर थी 'तफ़रीत' (जितना हुक्म है उसमें कमी और कोताही करना)। ईसाइयों ने जो ईसा अ़लैहिस्सलाम को बढ़ाया तो ख़ुदा कह दिया। और यहूदियों ने जो ईसा अ़लैहिस्सलाम को घटाया तो ज़िना की औलाद कह दिया।

ईसा अ़लैहिस्सलाम न तो ख़ुदा हैं और न ख़ुदा के बेटे हैं। यह अल्लाह के महबूब बन्दे और रसूल हैं। और उनकी किसी भी तरह

तौहीन जायज़ नहीं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जानना और न करना यह अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ लोगों वाला रास्ता है, और न जानना और करना, सीखे बिना करना इसमें डर है कि कहीं गुमराह लोगों के रास्ते पर न चला जाये।

सिराते मुस्तक़ीम इख़्तियार करो

और आदमी वह है जो दीन को सीखता भी है और दीन पर चलता भी है। तो अल्लाह से उम्मीद है कि वह उस गिरोह से भी निकल गया जो अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दार हैं और उस जमाअ़त से भी निकल गया जो गुमराहों की है। अब उसे उस जमाअ़त में दाख़िल होना है जिस पर अल्लाह तआ़ला का इनाम है।

हम दुआ़ माँगते हैं:

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ (پاره– ١)

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तू हमें सीधे रास्ते पर चला।

"इहदिना" का तर्जुमा करूँ?

सीधा रास्ता बता ..... चला ..... और पहूँचा।

यह है जामा मस्जिद का रास्ता। यह तो हुआ "बता" और चल मैं चलता हूँ तेरे साथ, और साथ चलने के बाद आख़िर तक पहुँचाया। बता..... चला..... और पहुँचा।

मुजाहदा, हिदायत के लिए क़ानून और नियम

अल्लाह ने कहा कि मैं यह करूँगा, लेकिन किसके साथ? कि जो आदमी खुद भी कोशिश करे। करने वाला तो अल्लाह है लेकिन जितनी कोशिश अल्लाह ने बन्दे को बताई उतनी कोशिश यह करे तो अल्लाह उसे दिखाएँगे, अल्लाह उसे चलाएँगे और उम्मीद है कि अल्लाह उसे पहुँचा भी देंगे। लेकिन शर्त यह है कि जो अल्लाह ने

कहा वह हम करें:

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا. (پارہ– ۲۱)

और जिन्होंने मेहनत की हमारे वास्ते हम समझा देंगे उनको अपनी राहें।

देखो! एक है दीन का जानना और एक है दीन पर चलना। दीन को अगर जान लिया और चला तो उम्मीद है कि 'मग़ज़ूब अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) से निकल जाएगा और उम्मीद है कि 'ज़ाल्लीन' (जो जमाअ़त सही रास्ते से गुमराह हुए) से भी निकल जाएगा। और अगर जानता है और चलता नहीं है तो 'मग़ज़ूबि अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) में जाने का डर है।

और अगर चलता तो है दीन पर लेकिन सीखे बग़ैर चलता है तो यह 'ज़ाल्लीन' (गुमराह और राह से भटके हुए लोगों) में चला जाए, इसका डर है।

हर काम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर

और एक आदमी जमाअ़तों में फिरा, नमाज़ भी सीखी और तय किया कि पूरी ज़िन्दगी जो गुज़ारूँगा तो नबवी तरीक़े की तहक़ीक़ करके गुज़ारूँगा। औलाद की तरबियत का नबवी तरीक़ा क्या है? इसको सीख लिया। औलाद ज़रा बड़ी हो गई तो फिर क्या करना है? उसकी शादी होने लगी तो क्या करना है? औलाद के लिए कारोबार की तरतीब बनानी है तो उसमें क्या करना है?

ग़रज़ यह कि इनसान पर ज़िन्दगी के जो मर्हले (दौर) आते हैं, उन मर्हलों की वह तहक़ीक़ करे कि उसमें अल्लाह के हुक़ूक़ क्या हैं? और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा क्या है?

तो वह एक तरफ़ जानता भी है और एक तरफ़ चलता भी है, तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि यह 'मग़ज़ूबि अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) से निकल जायेगा।

नुबुव्वत का काम बाक़ी है

अब उसे आना है "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी उस जमाअ़त में जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) में। तो एक तीसरा काम और करना पड़ेगा। और वह है दीन की कोशिश करना। क्योंकि नबियों का आना तो अल्लाह ने बन्द कर दिया लेकिन नबियों का काम अल्लाह ने बन्द नहीं किया। नबियों का जो काम था वह आ़म हो गया यहाँ तक कि पढ़ा बे-पढ़ा ग्रेजुएट, मालदार, ग़रीब, काला, गोरा सब के सब नबियों वाला काम करें। यह अल्लाह ने सब के सुपुर्द कर दिया है। अब हमको "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी उस जमाअ़त में जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) में आना है। हम दुआ़ करते हैं कि ऐ अल्लाह! तू हमको सीधे रास्ते पर चला। और सीधा रास्ता किसका है? सीधा रास्ता उनका है जिन पर तूने इनाम किया है। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है:

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

जिन पर तूने इनाम किया उनके रास्ते पर चला।

इनाम वाले लोग

और इनाम वाले कौन लोग हैं? यह भी अल्लाह ने बता दिया:

فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ .(پاره —۵)

जिन पर अल्लाह ने इनाम किया वे चार क़िस्म के लोग हैं: अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन।

नबियों ने हर तरह कोशिश की और दावत का काम किया। सिद्दीक़ नबी तो नहीं होता लेकिन बिल्कुल नबी की तरतीब के ऊपर काम करता है। सिद्दीक़ीन ने भी दावत का काम किया और कोशिश की। और शुहदा तो वे हैं जो दीन का काम करते-करते अपनी जान दे